मख़लूके ख़ुदा पलती है दर से तेरे ख़्वाजा
हम से तो एक बच्चा भी पाला नहीं जाता

सुन्नी कुइज़

मेरे ख़्वाजा

हिंद के राजा

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

मख़्लूक़े ख़ुदा पलती है दर से तेरे ख़्वाजा
हम से तो एक बच्चा भी पाला नहीं जाता

सुन्नी कुइज़
मेरे ख़्वाजा हिन्द के राजा

मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची

नाशिर
ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार, बहराइच शरीफ़ (यू पी) इंडिया

नाम किताबः सुन्नी कुइज़ मेरे ख़्वाजा हिन्द के राजा
लेखकः मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची
सने इशाअतः बारे अव्वल २०१५/ १४३७ हिजरी
कंपोज़िंगः ज़ुबैर क़ादरी (09867934085)
क़ीमतः

Publisher: **Ghazi Kitab Ghar,**
Gangwal Bazar, Bahraich, UP
Mob: 9870742302

मिलने के पते

- ☆ मकतबा तय्यिबा, इस्माईल हबीब मस्जिद, मुम्बई
- ☆ नाज़ बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
- ☆ बुक सिटी, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ न्यू सिलवर बुक एजेंसी मुहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ इक़रा बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ उस्मानिया बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ कुतुब ख़ाना अमजदिया, देहली
- ☆ ख़्वाजा बुक डिपो, देहली
- ☆ मकतबा इमामे आज़म, देहली
- ☆ ग़ाज़ी बुक डिपो, बहराइच
- ☆ दीनी किताब घर, दरगाह शरीफ़ बहराइच
- ☆ मन्सूर अली बुक सेलर, दरगाह शरीफ़, बहराइच
- ☆ मकतबतुल हबीबिया बग्घी रोड, गोंडा
- ☆ शरीफ़ी किताब घर, चेम्बूर
- ☆ जामिआ वज़ीरुल उलूम गंगवल बाज़ार
- ☆ हाफ़िज़े मिल्लत किताब घर, बलराम पूर
- ☆ शकूर सालार बुक सेलर, बलराम पूर

ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

सवाल: हिन्दुस्तानियों के मसीहाए आज़म के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाब: यह सच है कि इस कुफ़्रिस्ताने हिन्द में इस्लाम का चराग़ हज़रत सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहुल अज़ीज़ की तशरीफ़ आवरी से पहले ही जल चुका था। मगर नायेबुन नबी, सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल, ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस बर्रे सग़ीर के मुहसिने अकबर और मसीहाए आज़म हैं कि यहां इस्लाम की दिलकश बहारें आप ही की दावत व तब्लीग़ और रुश्द व हिदायत का नतीजा हैं।

सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ छटी सदी हिजरी (५७६ हिजरी या ५८८ हिजरी) में रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और अपनी करामत आसार तब्लीग़ और कीमिया असर निगाह से इस कुफ़्रिस्तान को इस्लाम के नूर से रौशन व मुनव्वर कर दिया।

आप की हिन्दुस्तान में आमद से पहले बहुत से मुजाहिदीने इस्लाम और उलमा व सूफ़ियाए किराम इशाअते इस्लाम की ख़ातिर हिन्दुस्तान आए और अपने अपने हल्क़ए असर में उन्हों ने इस्लाम का बोल बाला भी किया मगर उन की जिद्दो जिहद के असरात उन के ही इलाक़ों तक महदूद रहे बिल खुसूस हिन्दुस्तान के शुमाल मग़रिबी ख़ित्तों सिंध, लाहौर, काबुल, ठट्टा और बलूचिस्तान वग़ैरा शहरों और क़स्बात में इस के गहरे असरात मुरत्तब हुए जिस के ज़ेरे असर आज भी उन इलाक़ों में मुसलमानों की अकसरियत है। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स: २९-३०)

सवाल: सरकार ग़रीब नवाज़ की इन्फ़िरादी शान बयान कीजिये?

जवाबः जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद से क़ब्ल दुनिया में बेशुमार अंबियाए किराम व रसूलाने इज़ाम तशरीफ़ लाए मगर उनके हल्के और इलाके महदूद थे इस लिये उनकी तब्लीग़ और रुश्द व हिदायत के असरात भी महदूद रहे। लेकिन जब ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जल्वागरी हुई तो आप ने अल्लाह तआला की पैग़ाम रसानी का एक आलमी निज़ाम क़ायम फ़रमाया जिस के असरात पूरी दुनिया में मुरत्तब हुए और वह क़यामे क़यामत तक बाक़ी रहेंगे। बिला तशबीह सय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से पहले हिन्दुस्तान में बेशुमार मुबल्लिग़ीने इस्लाम की आमद हुई और सभों ने अपनी अपनी हैसियत और बिसात के मुताबिक़ तब्लीग़ी कारनामे अंजाम दिये। सियासी, इल्मी, अमली और रूहानी हर मुमकिन तरीक़ए कार को अपना कर यहां तक कि अपने जानें गंवा कर अपनी ज़िम्मह दारियों से उहदा बरआ होने की जिद्दो जिहद की और इस में वह काफ़ी हद तक कामयाब भी रहे मगर जब सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मुबारक क़दम इस धर्ती पर आए तो आप के तब्लीग़ी मसाई के असरात हिन्दुस्तान के हर ख़ित्ते और गोशे ता पहुंचे। आप के खुलफ़ा व मुतवस्सिलीन मुल्क के जिस हिस्से में पहुंच गए वहां इस्लाम का बोल बाला हो गया। कुफ़्र की तारीकियां काफ़ूर हुई और इस्लाम के उजालों का समुन्द्र मोजेज़न हो गया। आप से पहले मुतअद्दिद मुसलमान फ़ातेहीन ने मुल्क के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों पर क़ब्ज़ा व इक़्तिदार हासिल किया मगर आप की दुआओं की बरकत से पहली बार आप के अहदे मुबारक में देहली और अजमेर के ऐवानों में मुसलमानों की बाज़ाब्ता मुकम्मल हुकूमत का प्रचम लहराया। सीरुल औलिया के मुसन्निफ़ लिखते हैं कि इस आफ़ताब के तुलूअ होने (ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हिन्दुस्तान में आमद) से क़ब्ल पूरे हिन्दुस्तान में कुफ़्र व बुत परस्ती का रिवाज आम था और हिन्द का हर सरकश "अना रब्बुकुमुल आ़ला" (मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूं) का दअवा करता था और अपने आप को अल्लाह तआला का शरीक कहता था वह पत्थर, ढेले, घर,

दरख़्त, चौपायों, गाए और उन के गोबर को सज्दह करते थे और कुफ़्र की तारीकी से उन के दिलों के ताले और भी मज़बूत हो रहे थे। अहले यक़ीन के इस आफ़ताब के मुबारक क़दमों की बरकत से जो दर हक़ीक़त मुईनुद्दीन (दीन के मुईन व मददगार) थे इस मुल्क की तारीकी इस्लाम के नूर से जगमगा उठी। आप की निगाहे विलायत जिस पर पड़ जाती उस के दिल की दुनिया बदल जाती रहज़न आता रहबर बन जाता, क़ातिल आता मुहाफ़िज़ बन जाता, सरकश आता गुलाम बन जाता, काफ़िर आता मुसलमान बन जाता, फ़ासिक़ आता मुत्तक़ी बन जाता, दुशमन आता हाशिया बरदार बन जाता और जादूगर आता तो तायब हो कर आमिले कुरआन बन जाता।

हिन्दुस्तान के सब से बड़े समाजी इन्क़लाब का यह बानी एक छोटी सी झोंपड़ी में एक फटे पुराने तहबंद में लिपटा बैठा रहता था। पांच मिस्क़ाल से ज़्यादह की रोटी कभी मयस्सर न आती लेकिन सूज़े दरूं की असर अंगेज़ी और निगाह की तिलिस्माती तासीर का यह आलम था कि एक नज़र जिस पर डाल देते उस की ज़िन्दगी से गुनाहों के जरासीम दम तोड़ कर फ़ना हो जाते और मअसियत के सोते हमेशा के लिये खुश्क हो जाते। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः ३०, ३१)

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ की मक़बूलियत और तब्लीग़ी असरात के बारे में बयान कीजिये?

जवाबः सरकार ग़रीब नवाज़ की मक़बूलियत और उन के तब्लीग़ी असरात पर तब्सरा करते हुए टी, डब्लयू, ऑरनल्ड लिखता हैः

रफ़्ता रफ़्ता बहुत से लोग ख़्वाजा साहेब के मोतक़िद हो गए और उन्हों ने बुत परस्ती छोड़ कर इस्लाम कुबूल कर लिया अब ख़्वाजा साहेब की शोहरत हर तरफ़ हो गई और बिल आख़िर हिन्दुओं के गिरोह के गिरोह उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर मुसलमान हो गए। मशहूर है कि जिस वक़्त ख़्वाजा साहेब देहले से अजमेर जा रहे थे तो रास्ते में सात सौ हिन्दुओं को उन्हों ने मुसलमान किया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः ३३, ३४)

सवालः हिन्दुस्तान में सिलसिलए चिश्तिया की आमद के तअल्लुक़ से

बताइये?

जवाबः हिन्दुस्तान में सिलसिलए चिश्तिया की आमद सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़ाते पाक से मुन्सलिक है और आप के वरूदे मसऊद से ही इस सिलसिले का फ़ैज़ान यहां जारी हुवा। आप ने अपनी हिकमते अमली, जांगुसल जिद्दो जिहद, खुदादाद ताक़त व कुव्वत, कश्फ़ व करामात और तसर्रुफ़ात व ताईदे ग़ैबी के ज़रिअह इस्लाम का नूर फैलाया और इस्लाहे हाल व तज़कियए नफ़्स का हैरत अंगेज़ कारनामा भी अंजाम दिया। आप के किरदार व अमल की खुश्बू से पूरा मुल्क मुअत्तर हो गया और आप के गिर्द जांनिसारों का हुजूम रहने लगा आप ने अपने खुलफ़ा व मुरीदीन की एक ऐसी जमाअत तय्यार की जिस के अफ़राद मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में जाकर अपने मुर्शिद की नियाबत के फ़राइज़ अंजाम देने लगे जिस के नतीजे में पूरे मुल्क में इस्लाम की इशाअत और सिलसिलए चिश्तिया का फरोग़ निहायत तेज़ रफ़्तारी से होने लगा यही वजह है कि आज चिश्तियत और हिन्दुस्तान एक दूसरे के लिये लाज़िम व मलजूम की हैसियत से मशहूर व मुतआरिफ़ हैं अगर्चे आप के अहद में आप के पीर भाई और मुरीदीन खुलफ़ा के अलावा हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में बड़े बड़े उलमा व मशाइख़ मौजूद थे और अपने अपने अंदाज़ में दीन की इशाअत के फ़राइज़ अंजाम दे रहे थे मगर उन के मसाई उन के आस पास के इलाक़ों तक महदूद थे फिर भी उन बुज़ुर्गों की ख़िदमात भी लाइक़े सताइश हैं। (ऐज़न, सः ३९)

सवालः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अहद के उलमा, मशाइख़ और मुजाहिदीन के अस्माए गिरामी बताइये?

जवाबः (१) हज़रत शेख़ मुबारक उर्फ़ मास्को शहीद ५९८ हिजरी में ज़ंजान (ईरान) से हिन्दुस्तान आमद और जाजमऊ कानपूर में शहादत।

(२) हज़रत क़ाज़ी सिराजुद्दीन उर्फ़ दादा मियां ५९९ हिजरी में ज़ंजान (ईरान) से हिन्दुस्तान आमद और जाजमऊ कानपूर में इन्तिक़ाल (यहीं आप का मज़ारे अक़दस मर्जए ख़लाइक़ है)

(३) सय्यिद सद्रुद्दीन कन्नौजी ६०४ हिजरी में कन्नौज में मुक़ीम हो कर इल्मी व दीनी ख़िदमात की अंजाम दही में मसरूफ़ थे।

(४) शेख़ अबुल अब्बास नहावंदी नहावंद से हिन्दुस्तान आमद ६४३ हिजरी में इन्तिक़ाल, मज़ारे मुबारक देहली में हज़रत कुतुब साहेब के क़दमों में है।

(५) ख़्वाजा इमादुद्दीन बिल्ग्रामी ने ६१४ हिजरी से क़ब्ल राजा बिल्ग्राम को अपनी रूहानी ताक़त से शिकस्त देकर इस्लाम का बोल बाला किया।

(६) हज़रत सय्यिद मुहम्मद सुग़रा ने ६१४ हिजरी में बिल्ग्राम के राजा से मुक़ाबला आराई करके उस पर फ़तेह पाई, ६४५ हिजरी में विसाल फ़रमाया और वहीं मज़ारे अक़दस है।

(७) मौलाना हसन सग़ानी लाहौरी लाहौर में ५७७ हिजरी में विलादत हुई ६१५ हिजरी में बग़दाद जाकर मुक़ीम हुए ६५० हिजरी में विसाल फ़रमाया और वहीं मज़ारे मुक़द्दस है।

(८) मौलाना यअक़ूब शाफ़ई संजरी संजर से नहरवालह (गुजरात) में अलिफ़ ख़ां संजर के साथ आकर मुक़ीम हुए आप की निगरानी में सुल्तान संजर ने एक मस्जिद तअमीर करवाई जिस की तकमील ६५५ हिजरी में हुई।

(९) हज़रत शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी।

(१०) हज़रत मख़दूम शाह आला जाजमउवी आप की विलादत ५७० हिजरी में ज़ंजान (इलाक़ा ईरान) में हुई। ५९९ हिजरी के आग़ाज़ में देहली पहुंचे फिर वहां से जाजमऊ कानपूर पहुंच कर राजा जाज से जंग करके फ़तेह हासिल की। ६५९ हिजरी में विसाल हुवा और वहीं आप का आस्ताना फ़ैज़ बख़्शे आम है।

(११) सूफ़ी हमीदुद्दीन नागोरी आप का विसाल ६७३ हिजरी में हुवा मज़ारे पाक शहर नागोर (राजिस्थान) में है।

(१२) सय्यिद कुत्बुद्दीन मुहम्मद हसनी कटरावी ५८१ हिजरी में ग़ज़्नी में पैदा हुए सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश के अहदे सल्तनत में देहली तशरीफ़ लाए ६७७ हिजरी में कटरा (मानकपूर) में आप का विसाल

हुवा और वहीं मज़ारे मुबारक है।

(१३) हज़रत मख़दूम अली महायमी आप के आबा व अजदाद मदीनए तय्यिबा से हिजरत करके हिन्दुस्तान के साहिले सुमन्द्र पर आकर मुक़ीम हो गए थे। आप का विसाल ८३५ हिजरी में हुवा माहिम मुम्बई में आप का आस्ताना फ़ैज़ बख़्शे आम है।

(१४) मौलाना इमादुद्दीन ग़ौरी आप के बाज़ असलाफ़ शहाबुद्दीन ग़ौरी के साथ हिन्दुस्तान पहुंचे। इल्मी व दीनी बेश बहा ख़िदमात अंजाम दीं। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स: ४०-४१)

सवाल: हिन्दुस्तान में इस्लाम के अज़ीम मुबल्लिग़ और रूहानी ताजदार के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाब: सुल्तानुल हिन्द अ़ताए रसूल हुज़ूर सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन संजरी सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक बुलन्द पायह और अज़ीम रूहानी शख़्सियत के मालिक हैं आप की ज़ात मंबए फ़ुयूज़ व बरकात की शोहरत व मक़बूलियत हिन्द व पाक के गोशे गोशे में ही नहीं बल्कि बैरूनी मुमालिक में भी सूरज की किरनों की तरह फैली हुई है। अरब व अजम में आप की विलायत व फ़ैज़ बख़्शी, हाजत रवाई और कश्फ़ व करामात का चर्चा है। आप के अक़ीदत केश और नाम लेवा चीन, जापान, इंडोनेशिया, सिंगापूर, रंगून और योरप की सरज़मीन पर हज़ारों नहीं बल्कि लाखों की तअदाद में आज भी मौजूद हैं और उन में बहुत से ऐसे ख़ुश नसीब हैं जो हर साल ६, रजब को उर्से पाक के नूरानी व बाबरकत मौक़अ पर व दीगर मख़सूस तवारीख़ में अजमेर शरीफ़ निहायत अक़ीदत व एहतेराम के साथ हाज़िर हो कर सय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात से माला माल होते हैं जिन लोगों के दिलों में आप की अक़ीदत के चराग़ रौशन हैं उन की तमाम दुनियवी व उख़रवी उम्मीदों और तमन्नाओं का मर्कज़ आप ही का मुक़द्दस आस्ताना है।

हज़रत ख़्वाजा सय्यिदुना सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

बारगाहे रिसालत से हुक्म पाकर ५८६ हिजरी में अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए और इस्लाम की तर्वीज व इशाअत में मसरूफ हो गए इस तरह आप ने ज़िन्दगी भर तब्लीग़े हक़ व इशाअते इस्लाम का मुक़द्दस फ़रीज़ह पूरी मुस्तअदी और ज़िम्मह दारी के साथ अंजाम दिया और गुमराह बंदों की हिदायत व रहनुमाई के लिये हमह वक़्त सरगर्मे अमल रहे। जिस दौर में आप ने हिन्दुस्तान की धर्ती पर क़दम रख्खा वह दौर कुफ़्र व शिर्क और ज़ुल्म व जिहालत से भरा हुवा था। उस वक़्त कट्टर और मुतअस्सिब राजा प्रिथिवी राज की हुकूमत थी और लोग ख़ुद से बिल्कुल ग़ाफ़िल और हक़ व सदाक़त की राहों से भटके हुए थे। इस्लाम दुशमन, मुस्लिम बेज़ार और मुतअस्सिब राजा के दरबारियों ने राजा को सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की अजमेर आने की ख़बर दी तो उस ने आप को और आप के ख़ुद्दाम को तरह तरह से प्रेशान करके वहां से निकल जाने पर मजबूर करने की कोशिश की यहां तक कि उस ज़माने के एक बहुत बड़े जादूगर अजय पाल जोगी को आप से मुक़ाबला करने की ग़र्ज़ से भेजा लेकिन इस में भी उसे बुरी तरह शिकस्त व नाकामी से दोचार होना पड़ा और सरकार ग़रीब नवाज़ के प्रचमे हक़्क़ानियत व इल्मे रूहानियत को ज़बरदस्त फ़त्ह व सरबुलन्दी नसीब हुई माद्दियत की तमाम तदबीरें, तख़्त व ताज और तमाम अज़मत व कुव्वत एक गुदड़ी पोश और ख़ाक नशीन दुरवेश के क़दमों पर सरनिगूं हो गईं। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १४३-१४४)

सवालः अजमेर का तारीख़ी मंज़र नामा बयान कीजिये?

जवाबः अजमेर शरीफ़ हिन्दुस्तान के शुमाल मग़रिबी हिस्से में राजपूताना का एक बड़ा और ख़ूबसूरत शहर है जो आग्रा से २२८, देहली से २३५, लाहौर से ५७० और मुम्बई से ६८७ मील के फ़ासले पर कोहे अरावली के दामन में छोटी छोटी पहाड़ियों के दरमियान वाक़ेअ है। इस शहर के शुमाल में गोग्रा घाटी, जुनूब में कोहे अरावली, मश्रिक़ में रियासत किशन गढ़ और मग़रिब में दरियाए सरसवती है।

तारीख़ के औराक़ नातिक़ हैं कि इस तारीख़ी शहर की बुन्याद दूसरी

सदी ईसवी में राजा अजय पाल ने डाली थी, क़दीम शहर मौजूदा आबादी के जुनूब मग़रिबी गोशे में था। जिस के कुछ खंडरात अब भी मौजूद हैं। इन्क़लाबाते दहर से तब्दीली मक़ाम के साथ नामों में भी तब्दीलीयां होती गई। मुअर्रिख़ीन ने इस शहर को जया नगर, जयो दर्क (बमअनी क़िलअ) जय मीर, इदमीर और जिलूपूर भी लिखा है। मोतबर तारीख़ी रिवायात से मअलूम होता है कि हिन्दुस्तान में क़दीम ज़माने में बुध मज़हब का पैरो राजा कनिश्क गुज़रा है जो ७८ ई० में गद्दी नशीन हो कर ४२ साल तक निहायत शान व शौकत से हुक्मरानी करता रहा। उस राजा की राजधानी पेशावर में थी। तमाम मुमालिक काबुल व कशमीर से लेकर दरियाए नर्बदा तक शुमाली हिन्द पर उस का तसल्लुत था। राजा कनिश्क के बाद उस के दो बेटे विशीशक और हुवेशक अपने बाप की गद्दी पर हुकूमत करते रहे मगर १२० ई० या १२३ ई० में हुवेशक ने खुद मुख़्तारी का एलान करके १४० ई० तक बड़े ज़ोर व शोर और दबदबह से हुकूमत की। हुवेशक के बाद जब वासुदेव ने गद्दी संभाली तो वह अपनी कमज़ोरी के बाइस हुकूमत का बार संभाल न सका नतीजा यह हुवा कि चंद ही रोज़ में उस की सल्तनत का शीराज़ह बिखर गया। राजा अपने पाल चकवा ने जो कनिश्क ख़ानदान का बाज गुज़ार था इलाक़ह पर क़ब्ज़ह करके शहर अजमेर को (जिस की बुन्याद वासुदेव ने गद्दी नशीन होते ही डाली थी) अपना पायए तख़्त क़रार देकर अपनी जुदागानह सल्तनत क़ायम कर ली। मुख़्तसर यह कि अकबर बादशाह चूंकि सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का पक्का मोतक़िद था वह जब चौथी बार अजमेर आया तो उस ने इस शहर को अज़सरे नौ तामीर किया शहर पनाह पुख़्तह ढाई गज़ चौड़ी तामीर कराई जिस का दौर ४०४७ गज़ था यह फ़सील शिकस्तह हालत में अब भी कहीं कहीं नज़र आती है उस में शहर में दाख़िल होने के चार दरवाज़े थे। (१) शुमाल में देहली दरवाज़ा (२) मश्रिक़ में मदार दरवाज़ा (३) जुनूब में डगी दरवाज़ा (४) मग़रिब में अतरपोलिया दरवाज़ा। बाद में आग्रा

दरवाज़ा और असरी दरवाज़ा का भी इज़ाफ़ा किया वस्ते शहर में एक क़िलअ नुमा इमारत बनवाई जो दरअस्ल बादशाही महल था और अब मैगज़ीन के नाम से मशहूर है। उसी ज़माने में देहली दरवाज़ा और दरगाह हुजूर ग़रीब नवाज़ के जुनूबन व शुमालन दरगाह बाज़ार निहायत खुश वज़अ तामीर कराया और इहाता दरगाह में एक आली शान मस्जिद तामीर की जो अकबरी मस्जिद के नाम से अवाम व ख़्वास में मशहूर है। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १५३-१५६)

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि का पिद्री नसब नामा बयान कीजिये?

जवाबः (१) सय्यिद मुईनुद्दीन हसन (२) बिन सय्यिद ग़यासुद्दीन (३) बिन सय्यिद कमालुद्दीन (४) बिन सय्यिद अहमद हुसैन (५) बिन सय्यिद नज्मुद्दीन ताहिर (६) बिन सय्यिद अब्दुल अज़ीज़ (७) बिन सय्यिद इब्राहीम (८) बिन सय्यिद इमाम अली रज़ा (९) बिन सय्यिद मूसा काज़िम(१०) बिन सय्यिद इमाम जअफ़र सादिक़ (११) बिन सय्यिद मुहम्मद बाक़िर (१२) बिन सय्यिद इमाम अली ज़ैनुल आबिदीन (१३) बिन सय्यिद इमाम हुसैन (१४) बिन सय्यिदुस सादात हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन। (ख़ज़ीनतुल अस्फ़ियह, जिः १, सः २५७)

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि का मादरी नसब नामा बयान कीजिये?

जवाबः (१) सय्यिद मुईनुद्दीन हसन (२) बिन उम्मुल वरअ सय्यिदह माहे नूर (३) बिन्ते सय्यिद दाऊद (४) बिन सय्यिद अब्दुल्लाह हंबली (५) बिन सय्यिद यहया ज़ाहिद (६) बिन सय्यिद मुहम्मद रूही (७) बिन सय्यिद दाऊद (८) बिन सय्यिद मूसा सानी (९) बिन सय्यिद अब्दुल्लाह सानी (१०) बिन सय्यिद मूसा अख़ूंद (११) बिन सय्यिद अब्दुल्लाह (१२) बिन सय्यिद हसन मुसन्ना (१३) बिन सय्यिदुना इमाम हसन मुज्तबा (१४) बिन सय्यिदुस सादात मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन। (मसालिकुस सालिकीन, जिः २, सः २७१)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मशाइख़े तरीक़त के अस्माए मुबारकह बयान कीजिये?

जवाबः (१) हुज़ूरे अकरम सय्यिदे आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम विसाल ११ हिजरी

(२) अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यिदुना अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ४० हिजरी

(३) हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल १११ हिजरी

(४) हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल १७७ हिजरी

(५) हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल १८७ हिजरी

(६) हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल २६१ हिजरी

(७) हज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा मरअशी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल २५२ हिजरी

(८) हज़रत ख़्वाजा अमीनुद्दीन अबू हुबैरा बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल २८७

(९) हज़रत ख़्वाजा ममशाद उलू दीनूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल २९९ हिजरी

(१०) हज़रत ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ३९२ हिजरी

(११) हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद अबदाल चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ३५५ हिजरी

(१२) हज़रत ख़्वाजा अबू मुहम्मद बिन अहमद अबदाल चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ४१७ हिजरी

(१३) हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़ चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ४५९ हिजरी

(१४) हज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन मौदूद चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

विसाल ५२७ हिजरी

(१५) हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ ज़ंदनी चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ५७४ हिजरी

(१६) हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल ६०७ हिजरी

सवालः ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः आप सिलसिलए आलिया चिश्तिया के अकाबिर मुतक़द्दिमीन में से हैं हिन्दुस्तान के रूहानी ताजदार हज़रत सय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीर व मुर्शिद हैं। जिस बुज़ुर्ग के मुरीद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जैसे रूहानियत के शहंशाह हों उस अज़ीमुल मर्तबत मुर्शिद की अज़मत व जलालत को कौन समझ सकता है। हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी कुद्देसह सिर्रुहू ५३० हिजरी में क़स्बा हारून ज़िलअ नेशापूर में रौनक़ अफ़रोज़े आलम हुए आप ख़ानवादए सादात के चश्म व चराग़ हैं सिलसिलए नसब ग्यारह वास्तों से मौलाए कायनात सय्यिदुना अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहु से मिलता है। इब्तिदाई तालीम व तर्बियत वालिदे माजिद के ज़ेरे साया हुई, कमसिनी में ही आप ने कुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लिया था और वक़्त के मशहूर और माहिरे फ़न असातेज़ा से उलूमे मुरव्वेजह की तकमील की। इबादात व रियाज़ात की तरफ़ बचपन ही से आप की तबिअत का रुजहान था इस लिये शुरूअ से ही आप का मामूल था कि एक कुरआने पाक दिन में और एक रात में ख़त्म फ़रमाया करते थे। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहू बयान फ़रमाते हैं कि आप अकसर यह इरशाद फ़रमाया करते थे कि जिस शख़्स के अन्दर यह तीन ख़सलतें मौजूद हों खुदा उस को महबूब रखता है। (१) दरिया जैसी सख़ावत व फ़य्याज़ी (२) सूरज की मानिन्द शफ़क़त (३) ज़मीन की तरह तवाज़ोअ व इन्किसारी।

आप से बेशुमार करामतें जुहूर पज़ीर हुई जिन में यह करामत बहुत मशहूर है कि एक मर्तबा आतिश परस्तों की आबादी में आप तशरीफ़

ले गए जहां एक बहुत बड़ा आतिश कदह था और जिस में हज़ारों मन लकड़ियां हर रोज़ जलाई जाती थीं आप ने उसी आतिश कदह के करीब क़याम फरमाया और एक दरख़्त के साए में मुसल्ला बिछा कर नमाज़ में मशगूल हो गए आप के ख़ादिम शेख़ फख़्रुद्दीन आग लाने की ग़र्ज़ से उस आबादी में गए आग के पुजारियों ने उन्हें आग देने से इन्कार कर दिया। ख़ादिम ने वापस आकर शेख़ से पूरा माजरा बयान कर दिया। हज़रत ने ताज़ह वुज़ू फरमाया और उस गावं में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि उस का नाज़िम व मुतवल्ली अपनी गोद में एक सात सालह लड़का लिये एक तख़्त पर बैठा आग की पूजा कर रहा है। हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया "ऐ ख़ुर्राट बुड्ढे! इस आग को क्यों पूजता है खुदा की इबादत क्यों नहीं करता कि यह आग तो उस की मख़लूक़ात में एक कमतर दर्जह की है।" उस ने जवाब दिया कि "हमारे मज़हब में आग बड़ा दर्जह रखती है।"

हज़रत ने फरमाया कि "इस आग की पूजा में तू ने कीमती और लम्बी उम्र सर्फ कर दी है क्या तू अपने जिस्म का कोई हिस्सह इस आग में रख दे और वह उसे न जलाए ऐसा हो सकता है।" मजूसी ने कहा कि "आग की ख़ासियत ही जलाना है किस की हिम्मत है कि उंगली का सिरा भी इस में रख दे और सलामत निकल जाए।"

हज़रत ख़्वाजा ने अचानक उस की गोद से लड़का लिया और आग में डाल दिया और खुद भी उसी आतिश कदह में तशरीफ ले गए। आग गुलज़ार बन गई और दोनों सहीह व सलामत रहे यहां तक कि उन के जिस्म के कपड़े का एक रेशह भी नहीं जला और थोड़ी देर उस में ठहरे रहे इस दौरान मजूसियों का एक जम्मे ग़फीर इकट्ठा हो गया और सभी हैरत व इस्तेअजाब से आप को देख रहे थे।

हज़रत उस बच्चे को लेकर आग से बाहर तशरीफ लाए और इस्लाम की हक़्क़ानियत बयान करते हुए उन सब को कलिमह पढ़ने की दावत दी। नतीजे के तौर पर सारे के सारे मजूसी मुसलमान हो गए और ज़मीन पर सर रख कर आप के शुक्र गुज़ार हुए। आप ने उस क़ौम के सरदार का नाम अब्दुल्लाह और आग में डाले गए बच्चे का नाम

इब्राहीम तजवीज़ किया और वहां कुछ दिनों मज़ीद क़याम फ़रमा कर उन लोगों को इस्लाम की तालीम दी और उन को मज़हब में पुख़्तह कर दिया। कुछ दिनों के बाद उस आतिश कदह की जगह पर एक आलीशान मस्जिद तामीर हो गई। (ऐज़न, सः १३८-१४१)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के वालिदे माजिद का इन्तिक़ाल और मुरव्वेजह तालीम के आग़ाज़ के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः दादी साहिबह पोते पर फ़िदा थीं मगर उस की पांच बहारों से ज़्यादह न देख सकीं। मां बाप दोनों हाफ़िज़े क़ुरआन थे तालीम की ज़िम्मह दारी खुद ही क़ुबूल की चौदह साल की उम्र में ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन ने क़ुरआन हिफ़्ज़ कर लिया। क़ुरआने हकीम की तिलावत का शौक़ उन्हें विर्से में मिला था। आलिमे बाअमल बाप ने अरबी व फ़ारसी की मुरव्वेजह तालीम का आग़ाज़ कर दिया मगर वह इस की तकमील न कर सके और ५५२ हिजरी में हज़रत ख़्वाजाा को खुदा की पनाह में देकर राहिए मुल्के बक़ा हो गए। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १७२)

सवालः वालिदए माजिदह के इन्तिक़ाल के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः वालिद माजिद की मौत को हज़रत ख़्वाजा ने अल्लाह की रज़ा जान कर क़ुबूल कर लिया और मां को किसी क़िस्म की तकलीफ़ का सामना न करने दिया क्योंकि आप ने अपने वालिद के सारे मआशी और तद्रीसी उमूर बहुस्न व ख़ूबी संभाल लिये अभी वालिद के इन्तिक़ाल को दो साल हुए थे कि वालिदए मोतरमा का सायए आतिफ़त भी सर से उठ गया आप ने क़ज़ा व क़द्र का यह फ़ैसलह भी सब्र व इस्तिक़लाल से क़ुबूल कर लिया और मामूलात में कोई फ़र्क़ न आने दिया। (ऐज़न, सः १७२)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के भाई और बहेन के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाअः हज़रत बीबी माहे नूर "उम्मुल वरअ" ख़ासुल मलिकह के शिकमे पाक से सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्देसह सिर्रुहू के दो भाई भी थे लेकिन उन के हालात किताबों में नहीं मिलते। एक बहेन भी थीं। उन

के बेटे हज़रत ख़्वाजा अली संजरी अपने वक़्त के मशहूर सूफ़ी बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। हज़रत ख़्वाजा अलैहिर्रहमा से बैअत थे और आप के ख़लीफ़ह व मजाज़ भी थे। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १७२)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि के मुक़द्दस ख़ानदान के बारे में बताइये?

जवाबः नायेबुन नबी सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ानदानी हालात सरवरे आलम नूरे मुजस्सम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लेकर कई पुश्त नीचे तक जो किताबों में नज़र आते हैं वह इस बात के गवाह हैं कि आप के आबा व अजदाद को इल्म व फ़ज़्ल, ज़ुहद व तक़्वा, हक़ तलबी, हक़ शनासी और ख़ुदा रसी में ख़ास इम्तियाज़ हासिल रहा है। और जिस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शजरए नसब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक कुफ़्र व शिर्क से पाक व साफ़ है उसी तरह ख़्वाजए हिन्द का शजरए नसब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लेकर हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग तक शिर्क व इर्तिदाद और कुफ़्र व मआसी की आलाइशों से मुनज़्ज़ह व मुबर्रह है बल्कि इसी ख़ानदाने रिसालत में बाज़ ऐसे मशहूर आलिम भी हुए हैं जो इल्म व फ़ज़्ल और फ़क़्र व दुरवेशी में यगानए रोज़गार थे। चूंकि ख़ुलफ़ाए अब्बासिया सादात को तरह तरह की तकलीफ़ें पहुंचाया करते थे बईं वजह गुमान ग़ालिब है कि आप के आबा व अजदाद ने वतन से हिजरत करके दारुल ख़िलाफ़त (बग़दाद) से दूर संजर (वाक़ेअ सीसतान) में इक़ामत इख़्तियार फ़रमाई। आप के वालिदे माजिद हज़रत इमाम हुसैन इब्ने अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की औलाद में से हैं और वालिदए मोहतरमह हज़रत इमाम हसन इब्ने अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की औलाद में से हैं आप के वालिदे माजिद हज़रत सय्यिद ग़यासुद्दीन हसन निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। ख़ानदानी शराफ़त के साथ साथ साहेबे

दौलात व सरवत भी थे, नीज़ फ़क्र व दुरवेशी की दौलत से भी माला माल थे आप ने अपना सब कुछ खुदा की राह में वक़्फ़ कर रखा था और बेशुमार बंदगाने ख़ुदा सुब्ह व शाम उन से फ़ैज़याब होते थे। ग़रीबों, मिस्कीनों, हाजत मंदों और मुसीबत ज़दह लोगों के लिये आप की सख़ावत व फ़य्याज़ी के दरवाज़े हमेशा और हर वक़्त खुले रहते थे। वह एक बा करामत बुज़ुर्ग थे और हर तब्क़े के लोगों में निहायत इज़्ज़त व एहतेराम की निगाहों से देखे जाते थे। आप ने ५५२ हिजरी में दुनिया से रेहलत फ़रमाई। मज़ारे पाक बग़दाद में बाबुश शाम के नज़्दीक आज तक मर्जए ख़लाइक़ है। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १५८-१५६)

सवालः सरकार ग़ौसे आज़म और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की क़ुर्बत के बारे में बताइये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मादरी नसब नामा "मसालिकुस सालिकीन" के हवाले के मुताबिक़ सय्यिदुना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी (सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हज़रत सय्यिद अब्दुल्लाह हंबली के पोते हैं और हज़रत सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदए मोहतरमह बीबी माहे नूर रहमतुल्लाहि अलैहा हज़रत सय्यिद अब्दुल्लाह हंबली की पोती हैं और उन दोनों के वालिद आपस में हक़ीक़ी भाई हैं। यानी सरकार ग़रीब नवाज़ की वालिदए माजिदह सरकार ग़ौसे आज़म की चचाज़ाद बहन हैं इस रिश्ते से सरकार ग़ौसे आज़म सरकार ग़रीब नवाज़ के मामूं होते हैं बग़दाद शरीफ़ में आम तौर पर मशहूर है और साहेबे मसालिकुस सालिकीन ने अपनी किताब की जिल्द २ के सफ़्ह २७१ पर तहरीर फ़रमाया है कि ग़रीब नवाज़ और ग़ौसे पाक (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) आपस में ख़ाला ज़ाद भाई हैं इन दोनों रिश्तों की मुताबिक़त इस तरह हो जाती है कि हज़रत सरकार ग़रीब नवाज़ की वालिदए मोहतरमह हज़रत सरकार ग़ौसे पाक की ननिहाली रिश्ते में ख़ालह और ददिहाली रिश्ते में बहन

हैं इस लिये ग़ौसे पाक ग़रीब नवाज़ के ख़ाला ज़ाद भाई और मामूं भी होते हैं। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १६६)

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ के हुलियए पाक के बारे में बताइये?

जवाबः तारीख़ व सीर की मुतअद्दिद किताबों में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहू का हुलियह शरीफ़ इस तरह तहरीर किया गया है जिस से आप का मुक़द्दस सरापा निगाहों के सामने आ जाता है। सुर्ख़ व सफ़ेद रंग, दराज़ क़द, मौज़ूं जिस्म, मुतनासिब आज़ा, चौड़े शाने, कुशादह पेशानी, बड़ी लम्बूतरी आंखें, सुतवां नाक, भरी हुई सफ़ेद दाढ़ी, लबों पर रक़्स करता तबस्सुम, लोगों को रौशन कर देने वाला पुर नूर चहरए अक़्दस, चलने में मतानत व वक़ार, उठने बैठने में एक इन्फ़िरादी शान और बात चीत का अंदाज़ निहायत शीरीं और पुर कशिश। ग़र्ज़ आप रंग व रूप, नाक नक़्शे, चाल ढाल, वज़अ क़तअ और ज़ाहिर व बातिन हर लिहाज़ से हसीन, ख़ूबसूरत और जाज़िबे निगाह थे। पहेनने ओढ़ने और खाने पीने का कोई ख़ास एहतमाम नहीं फ़रमाते थे। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः ६६-६७)

सवालः आफ़ताबे विलायत की जल्वा नुमाई के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः ५२७ हिजरी में रजबुल मुरज्जब का चांद १३, तारीख़ को अपनी मंज़िले कमाल तक पहुंचा संजर की बस्ती के लोग चैन की नींद सो रहे थे। रात की दहलीज़ पर तीसरे पहर ने दस्तक दी और तहज्जुद गुज़ारों की आंख खुल गई जागने वाले सुब्हे सादिक़ जैसा उजाला देख कर चौंक पड़े गुमान यह गुज़रा कि आज नमाज़े तहज्जुद क़ज़ा हो गई घबरा कर खुली फ़ज़ा में निकल आए तो देखा कि एक शुआए नूर आसमान की बेकरां रिफ़अतों से ख़ते मुस्तक़ीम बनाए हुए ख़्वाजा सय्यिद ग़यासुद्दीन हसन के दौलत कदे पर मुर्तकिज़ है उसी की रौशनी ने सुब्ह का समां पैदा कर रखा है।

यह हैरतनाक मंज़र तहज्जुद गुज़ारों के ज़ौक़े तजस्सुस को बेदार करके उन्हें कशां कशां मीनारए नूर तक ले गया। वहां पहुंचे तो एक नौमौलूद बच्चे की पहली आवाज़ ने उन की समाअतों के दामन पर

फूल बरसाए। ख़्वाजा ग़यासुद्दीन हसन बाहर चबूतरे पर सर ब सुजूद थे क्योंकि नेअमतों का शुक्र अदा करने के लिये सज्दे से बेहतर बारगाहे नईम के लिये बंदे के पास कोई नज़रानह है भी तो नहीं। दायह ने आकर विलादते फ़र्ज़ंद की ख़ुश ख़बरी दी तो हाज़िरीन ने मुबारक बाद पेश की। नमाज़े फ़ज्र के बाद पूरी बस्ती में सिक़ह रावियों ने रात के मुशाहिदे की तफ़सीलात बयान करके यह मुबारक ख़बर सुनाई कि अल्लाह के एक बरगुज़ीदह बंदे की विलादत ने संजर की क़िस्मत जगा दी शाम तक हसनी हुसैनी बाग़ के उस गुले नौ शगुफ़्तह की ज़ियारत के लिये भीड़ लगी रही। (ऐज़न, सः १६७)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के शिकमे मादर में कलिमए पाक के विर्द के मुतअल्लिक़ बताइये?

जवाबः आप की वालिदए मोहतरमह हज़रत सय्यिदह बीबी उम्मुल वरअ माहे नूर रहमतुल्लाहि अलैहा से रिवायत है कि जिस वक़्त से मुईनुद्दीन हसन के जिस्मे मुबारक में रूह डाली गई उस वक़्त से पैदाइश तक आप का मअमूल यह रहा कि निस्फ़ शब से दिन चढ़ने तक आप कलिमए तय्यिबह ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह का ज़िक्र फ़रमाया करते थे और मैं अपने कानों से आप के ज़िक्र की आवाज़ सुना करती थी। मज़ीद आप फ़रमाती हैं कि मुईनुद्दीन हसन सुलबे पिद्र से मेरे शिकम में मुन्तक़िल हुए तो अल्लाह तआला ने ख़ैर व बरकात के दरवाज़े खोल दिये हमारे घर में ख़ैर व बरकत की फ़रावानी व कसरत हो गई और हमारा दिल इत्मिनान व सुरूर से लबरेज़ व मअमूर हो गया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १६८)

सवालः अक़ताब व अबदाल की मुबारक बादियों के मुतअल्लिक़ बताइये?

जवाबः आप की वालिदए माजिदह फ़रमाती हैं कि जिस पुर नूर व दरख़्शां सुब्ह को मुईनुद्दीन हसन की फ़रहत अफ़ज़ा विलादते मुबारकह हुई हमारे घर में एक अजीब सा नूर फैल गया और मैं ने अपने इर्द गिर्द बहुत सी नूरानी सूरतें देखीं। थोड़ी देर के बाद यह मंज़र निगाहों से ओझल हो गया। फिर मैं ने अपने नौमौलूद बच्चे की तरफ़ नज़र की

तो यह देख कर हैरान रह गई कि वह सज्दे में पड़ा है। मैं ने उसे प्यार से उठा कर अपनी गोद में ले लिया फिर जब ऊपर निगाह उठाई तो हज़ारों नूरानी सूरत और हसीन चहरे वालों को परे बांधे हुए देखा जिन के फ़ाख़िरह लिबासों से सुरूर अंगेज़ ख़ुश्बू की लपटें आ रही थी मैं हैरत में थी कि यह कौन लोग हैं इतने में उन में से एक शख़्स ने मुझे मुख़ातब करते हुए कहा "ऐ ख़ातून! मुबारक हो कि आज तेरे घर मुईनुद्दीन की विलादत हुई हम लोग इस दौर के अक़ताब व अबदाल हैं और तुझे मुबारकबाद व ख़ुश ख़बरी देने आए हैं। इस के बाद यह हज़रात निगाहों से रूपोश हो गए। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १६९)

सवालः ख़्वाजए ग़रीब नवाज़ के इस्मे गिरामी के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः दूसरे दिन अक़ीक़ह के बाद जब नौमौलूद का नाम रखने के लिये ख़्वाजा सय्यिद ग़यासुद्दीन हसन ने अपनी अहलियह उम्मुल वरअ से मशवरह किया तो उन्हों ने कहा "बच्चे का नाम उस की पैदाइश से पहले कई बुज़ुर्ग ख़्वाब में आकर बता चुके हैं इस लिये इस का नाम "ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन" ही तजवीज़ किया जाए बुज़ुर्गों के इरशादात के मुताबिक़ यह अल्लाह की अमानत है इस की तर्बियत व निगहदारी हमारे लिये बाइसे रहमत साबित होगी।" (ऐज़न, सः १६९)

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के अल्क़ाब के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः आप के फ़ज़ाइल व कमालात और इल्मी व रूहानी इम्तियाज़ात के सबब आप को मुन्दर्जा ज़ेल अल्क़ाब से भी याद किया जाता है। मुईनुद्दीन, मुईनुल मिल्लत वद्दीन, सुल्तानुल आरिफ़ीन, क़ुत्बे दौरां, वारिसुल अंबिया वल मुर्सलीन, मुहिब्बे औलियाए ज़मां, इमामे शरीअत व तरीक़त, मख़ज़ने मअरिफ़त, वाक़िफ़े रुमूज़े सुवरी व मअनवी, मुक़्तदाए अरबाबे दीं, पेशवाए अरबाबे यक़ीं, साहेबे असरार, आलिमे इल्मे ज़ाहिरी व बातिनी, क़ुदवतुस सालिकीन, ताजुल मुक़र्रिबीन वल मुहक़्क़िक़ीन, सय्यिदुल आबिदीन, इमामुल आरिफ़ीन, रहनुमाए कामिलीन,

ताजुल आशिक़ीन, बुरहानुल वासिलीन वग़ैरह। (ऐज़न, स: १७०)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि की तालीम व तर्बियत के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः सात साल की उम्र शरीफ़ तक आप की परवरिश खुरासान में हुई। इब्तिदाई तालीम का ज़माना वालिदे बुज़ुर्गवार के ज़ेरे आतिफ़त गुज़रा। उस के बाद संजर की मशहूर दर्सगाह में दाख़िल हुए और वहीं से तफ़सीर व हदीस और फ़िक़ह की तालीम मुकम्मल हुई। चौदह साल की उम्र शरीफ़ में और किताब मिरअतुल असरार के मुताबिक़ पन्द्रह साल की उम्र शरीफ़ में वालिदे बुज़ुर्गवार का साया सर से उठ गया। और आप के वालिदे माजिद का मज़ारे मुबारक बग़दादे मुक़द्दस में है। (सवानेह ग़ौस व ख़्वाजा, स: ४४)

सवालः ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के ईद के दिन की ग़रीब नवाज़ी का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः ईद का दिन था हर तरफ़ मसर्रत व शादमानी का माहौल था सरकार ग़रीब नवाज़ के बचपन का ज़माना था, आप अपने घर वालों के साथ निहायत उम्दा और नफ़ीस लिबास ज़ेबे तन फ़रमा कर मनाज़े ईद के लिये ईदगाह जा रहे थे। रास्ते में एक नाबीना लड़के को फटे पुराने कपड़े में मल्बूस देखा सरकार ग़रीब नवाज़ को उस की ग़रीबी और लाचारी पर बहुत दुख हुवा नतीजह के तौर पर आप ने अपना ख़ूबसूरत और क़ीमती लिबास उस ग़रीब नाबीना लड़के को पहना दिया और खुद दूसरे कपड़े पहन कर उसे अपने साथ ईदगाह ले गए।

मज़कूरा बाला वाक़िआत की रोशनी में यह अंदाज़ह लगाना आसान है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बचपन, अहदे तिफ़ली और शीर ख़्वारगी में ही नहीं बल्कि ख़लक़ी और पैदाइशी ग़रीब नवाज़ थे और यह सिफ़ते ख़ास आप की हयाते ज़ाहिरी तक ही नहीं बल्कि बादे विसाल भी आप से कभी किसी हाल में जुदा न हो सकी। चुनान्चे आज भी आप

उसी तरह ग़रीबों, मजबूरों, बेकसों, मज़लूमों और बे सहारों को नज़्दीक व दूर से ख़ूब ख़ूब नवाज़ते हैं और इन-शा अल्लाह तआला क़यामत तक हम ग़रीबों के लिये आप ग़रीब नवाज़ रहेंगे। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १७१)

सवालः हज़रत ख़्वाजए पाक के ग़ैबी मुआवेनीन के बारे में बताइये?

जवाबः अकसर ऐसा होता कि जब आप बाग़ में तशरीफ़ ले जाते तो बाग़ का हर काम आप को किया हुवा मिलता आप उन फ़ुर्सत के औक़ात में बुलन्द आवाज़ में क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते लेकिन आप को यह तजस्सुस ज़रूर पैदा हुवा कि वह आख़िर कौन है जो मेरे काम मेरे आने से पहले ही कर जाता है? इसी तजस्सुस ने एक रात आप को बाग़ में रहने पर मजबूर कर दिया। आप ने रात तीसरे पहर देखा कि बाग़ की सफ़ाई हो रही है मगर सफ़ाई करने वाला नज़र नहीं आ रहा है। फल शाख़ों से टूट रहे हैं और एक जगह जमअ हो रहे हैं मगर यह ख़िदमत अंजाम देने वाला भी निगाहों से ओझल है। आप ने बुलन्द आवाज़ में कहा "दोस्तो को दोस्त से पर्दा न करना चाहिये, सामने आकर मुझे शुक्रिया का मौक़अ देना ही चाहिये।"

अभी इस जुम्ले की गूंज भी ख़त्म न हुई थी कि छः आदमी आप को अपनी तरफ़ आते हुए नज़र आए उन्हों ने आकर सलाम किया और कहा "हम जिन्न हैं और अल्हम्दु लिल्लाह साहेबे ईमान हैं आप की तिलावत हमें बहुत अच्छी मालूम होती है और इस से हमारी तिलावत की सेहत भी हो जाती है इस रिश्ते से आप हमारे उस्ताद हुए अब आप ही बताइये कि अगर हम अपने उस्ताद की थोड़ी बहुत ख़िदमत कर लेते हैं तो यह एहसान तो न हुवा जिस का शुक्रिया आप पर वाजिब हो।"

आप ने फ़रमाया "शुक्र बहरहाल अहले ईमान की निशानी है अल्लाह इस ख़िदमत का तुम्हें बेहतर अज्र अता फ़रमाए।" उस दिन के बाद हिजाब का तकल्लुफ़ ख़त्म हो गया।

सवालः ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि की मुलाक़ात इब्राहीम क़ंदूज़ी मज्जूब से हुई, इस तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः आप अपने बाग़ में दरख़्तों को पानी दे रहे थे कि इशारए ग़ैबी से अल्लाह तआला के वली मज्जूब बुज़ुर्ग हज़रत इब्राहीम क़ंदूज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाग़ में तशरीफ़ लाए। जब ख़्वाजा साहेब की नज़र साहेबे विलायत मज्जूब पर पड़ी तो बड़े अदब व एहतेराम के साथ उन की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन को एक सायादार दरख़्त के पास बिठाया और ताज़ह अंगूर का एक गुच्छा उन की ख़िदमत में पेश किया, हज़रत इब्रहीम क़ंदूज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अंगूर तनावुल फ़रमाए और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अदब व एहतेराम और आप की ख़िदमत से खुश होकर बग़ल से खली का एक टुकड़ा निकाल कर अपने मुंह में डाला, दन्दाने मुबारक से चबा कर ख़्वाजा साहेब के मुंह में डाल दिया जिस की बरकत से ख़्वाजा का बातिन नूरे मारिफ़त से जगमगा उठा, आप के दिल की दुनिया ज़ेर व ज़बर हो गई। इस तरह आप के दिल में बाग़ और पन चक्की और घर के सारे साज़ व सामान से बेज़ारी पैदा हो गई।

इसी आलम में हमारे ख़्वाजए पाक ने बाग़ और पन चक्की फ़रोख़्त करके सारी दौलत फ़ुक़रा व मसाकीन और बे सहारों पर लुटा दी और बे खुदी के आलम में खुरासान की तरफ़ राहे हक़ की तलाश में निकल गए। (ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, सः ३५, मिरअतुल असरार, सः ५५३)

सवालः हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का दो राहज़नों से मुलाक़ात के मुतअल्लिक़ बताइये?

जवाबः सफ़र करते हुए आप वाशूर से आगे बढ़ कर जब एक वीराने में पहुंचे तो देखा कि दो आदमी सरे राह बैठे हैं। आप ने सलाम करके ख़ैरियत दरयाफ़्त करते हुए धूप और वीराने में इस तरह बैठे रहने का सबब पूछा तो उन में से एक ने मग़मूम से लहजे में जवाब दिया "भूक और प्यास से निढाल हो कर यहां बैठ गए हैं।" यह सुन का आप ने तमाम खाना और पानी का छोटा सा मशकीज़ह उन के

सामने रख दिया और फ़रमाया "बिस्मिल्लाह इसे अपना ही समझये।" दोनों बिला तकल्लुफ़ खाने लगे और जब तक सब खाना और पानी ख़त्म नहीं हो गया उन का हाथ न रुका। खाने के बाद उन दोनों ने कहा "कुछ रक़म हो तो वह भी दे दो।" आप ने अपनी थैली उन के सामने डालते हुए कहा "अगर इस रक़म से आप की ज़रूरत पूरी न हो तो मेरी मअज़िरत कुबूल फ़रमाइये मेरे पास अगर इस के अलावा और भी रक़म होती तो मैं आप की ख़िदमत में पेश कर देता।" आप ने इस वज़ाहत के बाद सलाम किया और चल दिये। अभी कुछ दूर गए होंगे कि वह दोनों दौड़ते हुए आप के पास पहुंचे और पूछा "आप कहां जा रहे हैं और मक़सदे सफ़र क्या है?" आप ने फ़रमाया "मैं हुसूले तालीम के लिये नेशापूर जा रहा हूं।"

आप की यह बात सुन कर वह कहने लगे "नेशापूर अभी बहुत दूर है वहां तक पहुंचने में आप को तक़रीबन एक महीनह लग जाएगा।" आप ने कहा "यह बात तो मुझे भी मालूम है।" वह दोनों हैरत से चीख़ पड़े और कहा "आप ने तो अपना तमाम ज़ादे सफ़र हमें दे दिया अब आप का क्या बनेगा?" सरकार ख़्वाजा ने फ़रमाया "अल्लाह बड़ा कारसाज़ है जो इस वीराने में तुम्हें खिला पिला सकता है तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी कर सकता है तो क्या वह मुझ पर रहम नहीं फ़रमाएगा वह मेरा परवरदिगार नहीं?"

आप का यह जवाब सुन कर वह रोने लगे और कहा "हमें मआफ़ कर दें हम ने आप को धोका दिया है हम ज़रूरत मंद और मुहताज नहीं रहज़न हैं आप ने हमारी आंखें खोल दी हैं और हमें अल्लाह की रबूबियत पर भरोसह करना सिखा दिया है हम खाना तो वापस नहीं कर सकते लेकिन आप अपनी रक़म वापस ले लें।" आप ने फ़रमाया "कोई चीज़ किसी को देकर वापस लेना अख़लाक़े नबवी के मनाफ़ी है।" वह इसरार करते रहे मगर आप उन्हें हैरान व पशेमान छोड़ कर अपनी राह चल पड़े। (ऐज़न, सः १७६-१७७)

सवालः मेज़बान बुढ़िया का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः भूक और प्यास के आलम में सफ़र करते हुए सरकार ख़्वाजा दिल आराम कस्बे में पहुंचे वहां एक आबिदह व ज़ाहिदह ख़ातून आप को अपने घर ले गईं। यह कुद्रते ख़ुदावंदी ही तो थी कि सरे राह मोहतरमा ने सरकार ख़्वाजाा को रोक कर फ़रमाया "बेटे तुम मुसाफ़िर हो तुम दूर से आए हो और दूर जा रहे हो क्या एक दिन की मेज़बानी की इज़्ज़त से मुझे सरफ़राज़ करोगे?" आप ने उन के ख़ुलूस की क़दर करते हुए और मन्शाए इलाही समझते हुए वहां एक रात क़याम करना मन्ज़ूर फ़रमा लिया। (ऐज़न, सः १७८)

सवालः "एक क़ाफ़ेले की क़िस्मत जागी" वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः आप जब वहां से रवाना हुए तो बिल्कुल ताज़ह दम थे अभी अपनी मन्ज़िल से चंद मील क़रीब हुए होंगे कि आप को एक क़ाफ़ेला पड़ाव डाले हुए मिला जो हेरात जा रहा था। क़ाफ़ेले वालों ने सरकार ख़्वाजा का गर्म जोशी से इस्तिक़बाल किया और आप को अमीरे क़ाफ़लह सुलेमान के पास ले गए वह बड़ा ख़ुदा तरस और इल्म दोस्त इन्सान था वह आप से तफ़सीली गुफ़्तगू करके बहुत ख़ुश हुवा और अपने हुस्ने अख़लाक़ से मजबूर हो कर आप को अपने साथ सफ़र करने पर आमादह कर लिया। हेरात तक का सफ़र अल्लाह तआला ने इस तरह आसान कर दिया। हेरात से एक क़ाफ़ेलह नेशापूर की तरफ़ जा रहा था, जिस में अमीरे क़ाफ़ेलह सुलेमान के कई जान्ने वाले शरीक थे। सुलेमान सरकार ख़्वाजा का उन से तआरुफ़ करा के रुख़सत हो गया। आप क़ाफ़ले के साथ ईरान पहुंचे उस ज़माने में वहां के शहर मरो, तूस और नेशापूर वीरान पड़े हुए थे। इस तरह अमीरे क़ाफ़ेलह सुलेमान और अहले क़ाफ़ेलह के मुक़द्दर का सितारह जगमगा उठा और सरकार ख़्वाजए पाक के साथ हुस्ने सुलूक की वजह से अल्लाह तआला ने उन्हें दारैन की नेअमतों से माला माल कर दिया। (ऐज़न, सः १७८)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के वाक़िअए समर्कंद के मुतअल्लिक़ बताइये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहू ५५२ हिजरी में एक

तवील सफ़र के बाद नेशापूर से समर्क़ंद पहुंचे जहां इल्म, मसनदे तद्रीस पर मुतमक्किन था बड़े बड़े उलमा, फ़ुज़ला, फ़ुक़हा और मुहद्दिसीन ने तिश्निगाने इल्म के लिये फ़ुयूज़ के दरिया जारी कर रखे थे सरकार ख़्वाजा मौलाना हसामुद्दीन मदनी के हल्क़ए दर्स में शामिल हो गए। मौलाना मदनी इमामे आज़म अबू हनीफ़ह रहमतुल्लाहि अलैहि के फ़िक़ही मस्लक के ज़बरदस्त मुबल्लिग़ीन में शुमार किये जाते थे सरकार ख़्वाजा के इल्मी जौहर उस्ताज़ पर जल्द ही आशिकारा हो गए। उस्ताज़ ने न सिर्फ़ यह कि खुद खुसूसी तवज्जुह दी बल्कि दूसरे असातेज़ह को भी इस जौहरे क़ाबिल की तरफ़ खुसूसियत से तवज्जुह देने के लिये कहा। (ऐज़न, सः १८०-१८१)

सवालः ख़्वाजा पाक की नमाज़े तरावीह की इमामत के बारे में बताइये?

जवाबः रमज़ानुल मुबारक का कैफ़ आफ़रीं महीनह आया तो नमाज़े तरावीह की सरकार ख़्वाजा ने इमामत फ़रमाई। दिलकश क़िरअत ने आप को समर्क़ंद के इल्मी हल्क़े में मुतआरिफ़ करा दिया हज़ारों आदमी समाअते कुरआन के लिये आते रहे उस्ताज़े मोहतरम इतने खुश हुए कि मदर्से की मस्जिद में नमाज़े फ़ज्र की मुस्तक़िल इमामत सरकार ख़्वाजा के सपुर्द कर दी चार नमाज़ें खुद पढ़ाते और नमाज़े फ़ज्र शागिर्द की इक़्तिदा में अदा फ़रमाते। (ऐज़न, सः १८१)

सवालः नूरे कुरआन के ज़ुहूर के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः एक रोज़ तलबा ने रात के वक़्त सरकार ख़्वाजा के हुजरे में दरवाज़े की दराज़ों से तेज़ रोशनी निकलते हुए देखी तो हैरान हुए और मौलाना मदनी से इस का तज़किरा किया उन्हों ने कहा "ख़ामोश रहो! आइन्दह अगर ऐसी रोशनी देखना तो मुझे इत्तिलाअ करना।" तलबा टोह में लगे रहे उन्हें शबे जुम्अ को फिर वह तेज़ रोशनी सरकार ख़्वाजा के हुजरे में नज़र आई उस्ताज़े मोहतरम को इत्तिलाअ दी गई। वह तशरीफ़ लाए और रोशनी को देख कर फ़रमाया "यह नूरे कुरआन है जाओ अपने अपने हुजरे में आराम करो और मुईनुद्दीन हसन से इस सिलसिले में किसी क़िस्म के सवाल से

एहतेराज़ करो।" (ऐज़न)

सवालः मौलान हसामुद्दीन मदनी की पेशकश के बारे में बताइये?

जवाबः मदर्सा हुसामियह समर्कंद में आप कम व बेश पांच साल तक ज़ेरे तालीम रहे और बीस साल की उम्र में नहव, सर्फ़, फ़िक़ह, उसूले फ़िक़ह, तफ़सीर, हदीस, तारीख़ और दूसरे उलूमे अक़्लिया में भी कमालात हासिल कर लिये। रुख़सत होने लगे तो उस्ताज़े गिरामी मौलाना हसामुद्दीन मदनी ने पेशकश की कि मदर्सा हुसामियह में ही मुदर्रिस हो जाएं मगर आप ने निहायत अदब व एहतेराम से अर्ज़ किया "मेरी मंज़िल अभी बहुत दूर है मैं यहां अब क़याम न कर सकूंगा।" उस्ताज़े मोहतरम ने फ़रमाया "यहां नहीं रुक सकते तो मेरी एक ख़्वाहिश पूरी कर दो। तुम यहां से बुख़ारा चले जाओ वहां मेरे एक बुज़ुर्ग अल्लामह अब्दुल्लाह ख़्वार्ज़मी क़याम पज़ीर हैं दर्स व तद्रीस उन का महबूब मशग़लह है तफ़सीर एक मर्तबा उन से और समझ लो मैं चाहता हूं कि तुम आफ़ताब की तरह इल्म के उफ़क़ पर जगमगाते रहो और फ़िक़्हे हनफ़ी की तर्वीज व तब्लीग़ तुम्हारे हाथों इस तरह हो कि यह मस्लक आफ़ाक़ गीर हो जाए।"

उस्ताज़े मोहतरम की यह बात आप ने मान ली और हज़रत अब्दुल्लाह ख़्वार्ज़मी के नाम उन का एक ख़त लेकर समर्क़ंद से रवाना हो गए। (ऐज़न, सः १८१-१८२)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक, सरकार ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः समरक़ंद व बुख़ारा में तहसीले उलूमे दीनिया से फ़राग़त के बाद सरकार ग़रीब नवाज़ क़ुद्देसह सिर्रुहू वहां से बग़दाद शरीफ़ के लिये रवाना हुए और वहां पहुंच कर शहंशाहे बग़दाद हज़रत सय्यिदुना शेख़ मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए। सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हुज़ूर ग़ौसे आज़म से मुलाक़ात के बारे में अकसर मुअर्रिख़ीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सरकार ग़रीब

नवाज़ की हुज़ूर ग़ौसे आज़म से पहली मुलाक़ात बग़दाद शरीफ़ में ५५७ हिजरी में हुई जब ख़्वाजा साहब की उम्र बीस बरस थी। आप को देख कर सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमायाः "यह मर्द मुक़्तदाए रोज़गार है बहुत से लोग इस की हिदायत व रहनुमाई के ज़रिअह मंज़िले मक़सूद को पहुंचेंगे।"

एक रिवायत के मुताबिक़ आप सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पांच माह रहे इस अर्सह में सत्तावन रोज़ तक सय्यिदुना ग़ौसे आज़म और सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा एक ही हुजरे में मुक़ीम रहे। इस से बख़ूबी अंदाज़ा किया जा सकता है कि आप ने सय्यिदुना ग़ौसे आज़म से किस क़दर फ़ैज़ उठाया होगा। (ऐज़न, सः १८३)

सवालः मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत में हाज़िरी का वाक़िअह बयान क़ीजिये?

जवाबः आप ने रख़्ते सफ़र बांधा और हारून पहुंच गए वहां सरकार ख़्वाजा ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी की ज़ियारत की तो देखा कि हज़रत की मजलिस में बड़े बड़े उलमा और मशाइख़ मुअद्दब बैठे हुए हैं और मुश्ताक़ाने जमाल की भीड़ लगी हुई है। आप ख़ामोशी से जाकर एक गोशे में बैठ गए उस वक़्त ख़्वाजा उस्मान हारूनी दिल नशीन अंदाज़ में हाज़िरीन को इत्तिबाए सुन्नत की अहमियत समझा रहे थे। बात मुकम्मल हुई तो आप ने कहा "मैं बाग़े तौहीद के गुले नौ बहार की खुश्बू महसूस कर रहा हूं।" यह कह कर आप अपनी जगह से उठे और सफ़ों को चीरते हुए जाकर सरकार ख़्वाजा का हाथ पकड़ के उन्हें खड़ा किया और सीने से लगाते हुए फ़रमाया "मर्हबा मर्हबा खुश आमदीद! मेरी आंखों की ठंडक अल्लाह तुम्हें बामुराद करे" फिर सरकार ख़्वाजा को अपनी नशिस्त तक लाए और मजमअ से कहा "यह मुईनुद्दीन हसन है इस्मे बामुसम्मा।" इस के बाद इसबाते वजूद के मौज़ूअ पर सरकार ख़्वाजा को तक़रीर का हुक्म देकर बैठ गए। सरकार ख़्वाजा ने तअमीले हुक्म में एक ऐसी फसीह व बलीग़ तक़रीर फ़रमाई कि लोग दम बख़ुद रह गए और यूं महसूस कर रहे थे जैसे

ईमान व इक़ान की बारिश हो रही है। अज़ाने मग़रिब तक यह सिलसिलह जारी रहा। नमाज़ के बाद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी आप को अपने हुजरे में ले गए सिलसिलए चिश्तियह में दाख़िल फ़रमाया।

हज़रत इब्राहीम क़ंदूज़ी से मुलाक़ात के बाद जो आप को सिलसिलए चिश्तियह, हाजी शरीफ़ ज़ंदनी और अपने शेख़े कामिल की तलाश व जुस्तजू थी और जिस के लिये आप का दिल जब से बेचैन व बेक़रार था। हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हो जाने से उस को एक सूरत से क़रार आ गया और आप का तजस्सुस ख़त्म हो गया। (ऐज़न)

काम आख़िर जज़्बए बे इख़्तियार आ ही गया
दिल कुछ इस सूरत से तड़पा उन को प्यार आ ही गया

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाअः हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि के हल्क़ए इरादत में दाख़िल होने के बाद सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने पीर व मुर्शिद की तक़रीबन बीस साल तक ख़िदमत की और इस मुद्दत में आप ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी के साथ काफ़ी सैर व सयाहत की आप को अपने पीर व मुर्शिद से हद दर्जा अक़ीदत व मुहब्बत थी। यह कैफ़ियत थी कि हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी जहां कहीं सफ़र करते हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उन का लिबास, बिस्तर और तोशए सफ़र अपने सर पर लेकर शरीके सफ़र होते। आप की इस वालिहानह मुहब्बत और मुख़्लिसानह ख़िदमत से हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी के दिल पर गहरा असर मुरत्तब हुवा इसी सबब से आप पीर व मुर्शिद के ख़ासुल ख़ास और मुक़र्रब महबूब बन गए। चुनान्चे एक मर्तबह फ़रमायाः "मुईनुद्दीन महबूबे खुदा असत व मुरा फ़ख़्र अस्त बर मुरीदी ऊ।" यानी मुईनुद्दीन खुदा का महबूब है और मुझे उस की मुरीदी पर फ़ख़ है। आख़िरकार आप बग़दाद शरीफ़ में अपने पीर व मुर्शिद से रुख़्सत हुए तो मुर्शिदे कामिल ने आप को

ब-कमाले मुहब्बत ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त अता फ़रमाया और जानशीनी के मन्सब पर फ़ाइज़ किया उस वक़्त हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की उम्र तक़रीबन बावन साल थी। हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने तबर्रुकाते मुस्तफ़वी (जो सिलसिलए चिश्तियह में सिलसिलह ब सिलसिलह चले आ रहे थे) सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को ख़िलाफ़त अता फ़रमाते वक़्त इनायत फ़रमाए और चंद मुफ़ीद नसीहतें फ़रमाने के बाद अपना असाए मुबारक भी आपको बख़्श दिया इसके अलावह नअलैन शरीफ़ैन और मुसल्ला भी अता फ़रमाया। (ऐज़न, सः १८६)

सवालः चराग़ से चराग़ रोशन हो गया कैसे?

जवाबः अब हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन की दुनिया ही बदल चुकी थी दिन का बेशतर वक़्त मुर्शिदे गिरामी की मुसाहेबत में गुज़रता और रात इबादत में सर्फ़ होती। नज़र, ख़बर, परवाज़, करामत, हक़ीक़त, ख़िर्क़े आदात और इल्मे हुज़ूर के हुसूल गोया तमाम मराहिल तेज़ी से तय होने लगे। आप कभी मस्जिदे जुनैद में जाकर बैठ जाते तो भीड़ लग जाती शेख़ बुर्हानुद्दीन, शेख़ मुहम्मद अस्फ़हानी और दूसरे बुज़ुर्ग आप से इस्तिफ़ादह करते।

मुर्शिदे बरहक़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी अपने लायक़ व फ़ायक़ मुरीद सरकार ख़्वाजा को साथ लेकर सफ़रे हज पर रवानह हुए। तवील सफ़र में आप ने ख़िदमते शेख़ की नादिर मिसालें क़ायम कीं और क़दम क़दम पर अपने मुर्शिद की दुआओं से आला मदारिज पाए। बसरह के क़रीब हज़रत उस्मान हारूनी के एक पुराने मुरीद अबू सालेह अब्दुल्लाह से मुलाक़ात हुई वह हज़रत ख़्वाजा के कमालाते रूहानी देख कर हैरान रह गए उन्हों ने बड़ी हसरत से अपने शेख़े मुकर्रम से कहा "यह कितने ख़ुश नसीब हैं कितनी जल्दी कितने बड़े मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गए एक मैं हूं कि अभी मंज़िल से कोसों दूर हूं।"

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने कहा "जब तुम पैदा हुए थे तो बर्हनह थे मुईनुद्दीन हसन पैदा हुए तो हुल्लए विलायत उन के जिस्म

पर मौजूद था।"

यह जवाब सुन कर अबू सालेह आबदीदह हो गए तो हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन ने आगे बढ़ कर उन्हें सीने से लगा लिया। सीनह सीने से मिला तो दिल रोशन हो गया अबू सालेह जगमगाने लगे।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने ज़ेरे लब तबस्सुम फ़रमा कर कहा "अबू सालेह! तुम्हारा हिस्सह तुम्हें मिल गया तुम्हें मुबारक हो।"

आप ने हर्मैन तय्यिबैन का सफ़र फ़रमाया। यहां एक शहर की जामेअ मस्जिद में दोनों बुज़ुर्गों ने एतिकाफ़ किया उस के बाद मक्कह मुकर्रमह के लिये रवानह हुए ख़ानए कअबह की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल किया इस मुबारक मक़ाम पर हज़रत उस्मान हारूनी ने सरकार ग़रीब नवाज़ का हाथ पकड़ कर हक़ तआला के सपुर्द किया और बारगाहे ख़ुदावंदी में आप के लिये दुआ की। रब्बे करीम की रहमते कामिलह जोश में आई ग़ैब से निदा आई कि "हम ने मुईनुद्दीन को क़ुबूल किया।"

सवालः शहरे हरम में ख़िताबत की धूम के तअल्लुक़ से कुछ बताइये?

जवाबः मौलाना हुसामुद्दीन मदनी जैसे जय्यद आलिमे दीन से आप की तारीफ़ सुन कर अहले इल्म ने इसरार किया कि एक दिन सहने हरम में आप ख़िताब फ़रमाएं। इस ख़्वाहिश की उस्ताज़ ने भी ताईद कर दी तो आप ने दूसरे दिन बाद नमाज़े फ़ज्र हरम में फ़ाज़िल तरीन मजमअ से ख़िताब फ़रमाया। दो घण्टे तक तक़रीर जारी रही सुनने वाले हमह तन गोश और महवे हैरत थे आप ने उलूम व मआरिफ़ के दरया बहा दिये। तक़रीर के बाद मौलाना हुसामुद्दीन मदनी और इमामे कअबह अश्शैख़ अहमद अब्दुल्लाह तमीमी की वसातत से अहले मक्कह ने सरकार ख़्वाजए पाक से दरख़्वास्त की कि दर्से क़ुरआन व हदीस का सिलसिलह जारी रहना चाहिये। आप को रुकने के लिये अनवारे हरम की कशिश, अहले मक्कह का बेहद इसरार और पज़ीराई ही क्या कम थी कि उस्ताज़े मोहतरम और इमामे हरम के इसरार ने भी सरकार ख़्वाजा को रुकने पर मजबूर कर दिया। उस्ताज़े मोहतरम रुख़्सत हो गए कि मदर्से की ज़िम्मेदारियां उन्हें

पुकार रही थीं आप ने दर्से कुरआन व हदीस का सिलसिलह शुरूअ कर दिया जो काफ़ी दिनों तक जारी रहा हज़ारों उलमा और तलबा ने आप से इस्तिफ़ादह किया अल्लामह अब्दुर्रहमान उंदलसी भी आप के दर्स में शरीक होकर मुस्तफ़ीद होने वालों में शामिल थे उन्हों ने अपनी तस्नीफ़ "फ़ैजुल हरम" में सरकार ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन का ज़िक्र बड़े वालिहानह अंदाज़ में किया है। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १८४)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िरी के तअल्लुक़ से क्या फ़रमाते हैं?

जवाबः हज से फ़राग़त के बाद मैं अपने पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह मदीना तय्यिबा में महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मज़ारे अक़दस दरे अनवार पर हाज़िर हुवा तो पीर व मुर्शिद ने फ़रमायाः सुल्ताने दो जहां को सलाम करो!

मैं ने मज़ारे अनवर पर बड़े अदब व एहतेराम के साथ सलाम पेश किया। तो रौज़ए पाक से आवाज़ आई "व अलैकुमुस सलाम या कुत्बे मशाइख़े बर्र व बहर" यानी व अलैकुमुस सलाम ऐ (खुश्क व तर) जंगलों और पहाड़ों के सरदार!

जब यह आवाज़ आई तो पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमायाः ऐ मुईनुद्दीन! अब तुम्हारा काम मुकम्मल हो गया। (अनीसुल अरवाह, सः २)

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़्वाब में आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़्वाजए पाक को कौन सी बशारत अता की?

जवाबः ऐ मुईनुद्दीन! तुम मेरे दीन के मुईन हो, मैं ने तुम को हिन्दुस्तान की विलायत अता की। हिन्दुस्तान में कुफ़्र व शिर्क की ज़ुल्मत फैली हुई है। तुम अजमेर जाओ! तुम्हारे वजूद की बरकत से कुफ़्र व शिर्क

और बातिल का अंधेरा दूर होगा और इस्लाम की सुब्ह का उजाला फैल जाएगा। (सैरुल अक़ताब, सः ३१)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के मदीना तय्यिबा से अजमेर के सफ़र के तअल्लुक से बताइये?

जवाबः रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान के सबब अताए रसूल सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ख़्वाब से बेदार होकर चालीस औलिया के साथ हिन्दुस्तान रवाना हो गए। हिन्दुस्तान रवाना होने से पहले सोचा था कि अजमेर कहां है? अजमेर का रास्ता क्या है? तो आक़ाए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाजए पाक के सोच व फ़िक्र और मुराद को देख लिया और उसी वक़्त मदीना तय्यिबा से हिन्दुस्तान के सारे रास्ते और अजमेर का शहर और उस का क़िला और तमाम पहाड़ियां दिखला दिया।

सवालः ख़्वाजए पाक के सफ़र के दौरान ज़ाहिर होने वाले वाक़िआत बयान कीजिये?

जवाबः पहला वाक़िअहः क़ुत्बुल अक़ताब हज़रत क़ुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत शैख़ औहदुद्दीन व हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी और मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम शहर खुरासान की एक मजलिसे ख़ैर में बैठे हुए थे। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र हो रहा था कि सामने से सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश जिस की उम्र उस वक़्त बारह साल की थी, हाथ में एक प्याला लिये जा रहा था जैसे ही हमारे पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नज़र उस पर पड़ी इरशाद फ़रमायाः जब तक यह लड़का देहली का बादशाह न होगा खुदा इसे दुनिया से न उठाएगा। (फ़वाइदुस सालिकीन, सः१५ बहवाला अनवारुल बयान)

जज़्ब के आलम में जो निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

दूसरा वाक़िअहः सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना तय्यिबा

से रवाना होकर बग़दादे मुअल्ला, चिश्ते ख़िर्क़ान, जुहना, किरमान, उस्तुराबाद, बुख़ारा, तब्रेज़, अस्फ़हान, हेरात होते हुए ख़ुरासान के शहर सब्ज़हवार पहुंचे थे। सब्ज़हवार का हाकिम यादगार मुहम्मद था जो मुतअस्सिब शीअह था, शहर के किनारे उस का एक ख़ूबसूरत और पुर फ़ज़ा बाग़ था। ख़्वाजए पाक एक दिन उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए, बाग़ में एक साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ हौज़ था, हौज़ में गुस्ल किया और हौज़ के किनारे नमाज़ अदा की और तिलावते क़ुरआन में मशगूल हो गए। उसी दरमियान यादगार मुहम्मद शाहाना कर्रोफ़र के साथ अपनी सवारी पर बाग़ में दाख़िल हुवा। हौज़ के क़रीब एक मुसलमान फ़क़ीर को देख कर ग़ज़बनाक हो गया और बद ख़ुलक़ी व बद तमीज़ी से बोला ऐ फ़क़ीर! तुम को शाही बाग़ में आने की इजाज़त किस ने दी? ख़्वाजए पाक की निगाहे विलायत उठी, नज़र का नज़र से मिलना था कि यादगार मुहम्मद कांपने लगा और बे होश होकर गिर पड़ा। ख़्वाजए पाक ने उस के मुंह पर पानी छिड़का, यादगार मुहम्मद होश में आया तो दिल की दुनिया बदल चुकी थी, बद अक़ीदगी का फ़साद ख़त्म हो चुका था। निहायत आजिज़ी के साथ अपनी ग़लती की मआफ़ी मांगी और अपने तमाम ख़ादिमों और मुलाज़िमों के साथ बद अक़ीदगी से तौबा करके ख़्वाजए पाक का मुरीद हो गया और ख़िदमते अक़दस में रह कर उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी की तकमील कर ली। ख़्वाजए पाक ने उसे ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। अब यादगार मुहम्मद सब्ज़हवार की ज़ाहिरी व बातिनी सल्तनत का बादशाह बन चुका था। (ख़ज़ीनतुल औलिया, सः १५८, मूनिसुल अरवाह, सः २८ बहवाला अनवारुल बयान)

सवालः रसूले ख़ुदा की मर्ज़ी से ख़्वाजए पाक हिन्दुस्तान आए, बयान कीजिये?

जवाबः अताए रसूल ख़्वाजए पाक जब देहली से अजमेर के लिये रवाना हुए और राजिस्थान की पहाड़ियों और जंगलों के दरमियान सफ़र जारी था कि इस दौरान जंगलों के बीच प्रिथवी राज की फ़ौज से शिकस्त व हार से दोचार सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी के लशकर का एक सिपाही

हैरान व प्रेशान तने तन्हा राजिस्थान के जंगलों में भटक रहा था। सुंसान जंगल व बियाबान में उस फौजी सिपाही मुसलमान ने जब ख़्वाजए पाक और आप के साथियों को देखा कि अजमेर जा रहे हैं तो उस सिपाही मुसलमान ने बड़ी मन्नत व समाजत के साथ अर्ज़ किया कि आप हज़रात मुसलमान हैं और मैं भी सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी के लशकर का एक मुसलमान सिपाही हूं और अपनी फ़ौज से अलग हो गया हूं। आप से गुज़ारिश है कि आप हरगिज़ अजमेर न जाएं, इस लिये कि अजमेर का राजा प्रिथवी राज बहुत ज़ालिम व जाबिर है और उस के पास बहुत बड़ी फौज है। जब शहाबुद्दीन जैसा बादशाह कामयाब न हो सका तो आप के पास तो फ़ौज और हथियार भी नहीं हैं तो आप कामयाब व कामरान कैसे होंगे? आप को नुक़सान उठाना पड़ेगा और क़त्ल कर दिये जाओगे। इस लिये अजमेर जाने का इरादा मुल्तवी कर दीजिये और अजमेर न जाइये।

ख़्वाजए पाक ने इरशाद फ़रमायाः वह शहाबुद्दीन था और मैं मुईनुद्दीन हूं, शहाबुद्दीन अपनी मर्ज़ी से आया था और मुईनुद्दीन मुख़्तारे दो आलम रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मर्ज़ी से आया है। और सुल्तान शहाबुद्दीन फ़ौज और अस्लहा के सहारे आया था और मुईनुद्दीन अल्लाह व रसूल के सहारे आया है और ऐ मुसलमान भाई ग़ौर से सुनो और याद रख्खो कि जो शख़्स फ़ौज और अस्लहा पर भरोसा करता है वह नाकाम और बे मुराद होता है। और जो मर्दे मोमिन अल्लाह व रसूल पर भरोसा करता है वह कामयाब व बामुराद होता नज़र आता है। यह फ़र्क़ है शहाबुद्दीन और मुईनुद्दीन में। (बहवाला अन्वारुल बयान)

सवालः दाता साहेब के मज़ार पर ख़्वाजए पाक की हाज़िरी के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः हिन्द के राजा यानी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु बल्लख़ से रवाना होकर समर्क़ंद और दूसरे सूबों और शहरों से होते हुए लाहौर पहुंचे और कई महीनों तक हज़रत शैख़ अली हिजवेरी दाता गंज

बख़्श रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़ारे अक्दस पर हाज़िरी दी और हज़रत ख़्वाजा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत दाता गंज बख़्श रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़ारे अनवर के पास एक हुजरे में चालीस दिन का चिल्ला किया। वह हुजरा आज भी मौजूद है और ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है। ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु अन्हु रुख़्सत होते वक़्त हज़रत दाता गंज बख़्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रूहानी बरकात व कमालात से मुतअस्सिर होकर आप की शाने अक्दस में यह शेअर कहा जो आलमगीर शोहरत का हामिल है और आज तक हज़रत दाता गंज बख़्श रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़ारे पुर अनवार की लौहे पेशानी पर लिखा हुवा है। वह शेअर यह है।

गंज बख़्श फ़ैज़ आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसां रा पीरे कामिल कामिलां रा रहनुमा

(सवानेह ग़ौस व ख़्वाजा, ५५)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के अहद का हिन्दुस्तान कैसा था?

जवाबः हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहू की हिन्दुस्तान में तशरीफ़ आवरी से पहले कुछ मुसलमान बुज़ुर्ग भी इस सरज़मीन को शर्फ़े क़दम बोसी बख़्श चुके थे उन बुज़ुर्गों की तब्लीग़ व हिदायत की बदौलत इस मुल्क में मुतअद्दिद मक़ामात पर दीने हक़ के नाम लेवा पैदा हो चुके थे बिल ख़ुसूस लाहौर और उस के नवाही इलाक़ों में हज़रत शेख़ इस्माईल बुख़ारी और मख़दूम शेख़ अली हिजवेरी (दाता गंज बख़्श लाहौरी) रहिमहुमुल्लाहि तआला अलैहिमा की तब्लीग़ी कोशिशों की बदौलत इस्लाम का बड़ा गहरा असर पड़ चुका था इसी तरह क़न्नौज, बदायूं, नागोर और बिहार के बाज़ शहरों में भी मुसलमान मौजूद थे। लेकिन हिन्दुस्तान में इस्लाम एक हमहगीर क़ुव्वत की हैसियत से नहीं उभरा था। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तशरीफ़ आवरी हिन्दुस्तान में एक ज़बरदस्त रूहानी और समाजी इन्क़लाब का पेश ख़ेमह साबित हुई और दीने हक़ ने इस सरज़मीन में एक हमहगीर हैसियत इख़्तियार कर ली। हज़रत ख़्वाजा की

तशरीफ़ आवरी से पहले हिन्दुस्तान की सियासी ताक़त ऊंची ज़ात के हिन्दू राजाओं के हाथ में थी जो पर्ले दर्जे के मुश्रिक, सरकश और मुतकब्बिर थे। आम लोगों की मज़हबी, तमद्दुनी और अख़लाक़ी हालत इन्तिहाई पस्त हो चुकी थी। उन पर हौलनाक फ़िक्री जुमूद तारी था। जाहिलानह ज़ईफ़ुल एतिक़ादी, कुफ़्र व शिर्क, औहाम परस्ती, ज़ात पात का इम्तियाज़ और छूत छात उन का ख़ास्सह बन चुके थे। पत्थर, दरख़्त, सांप, चौपाए और उन का गोबर उन के मअबूद थे, कोई शूद्र किसी ब्रहमण से क़रीब हो कर गुज़र जाता तो उस की पेशानी दाग़ दी जाती। नीच ज़ात के लोगों के लिये ज़िन्दगी एक बोझ बन गई थी, बाज़ फ़िर्क़ों की बे हयाई का यह आलम था कि मादर ज़ाद नंगा रहना अपने लिये बाइसे इफ़्तिख़ार समझते थे बाज़ फ़िर्क़े शिव लिंग और शिव की बीवी की शर्मगाह को पूजना एक मज़हबी फ़रीज़ह जानते थे लिवातत और ज़िना की वह गर्म बाज़ारी थी कि अल्लाह की पनाह। बाज़ फ़िर्क़े तो इन अफ़आले क़बीहा को गुनाह समझते ही न थे, नाहंजार इन्सानों का गोश्ता खाना और देवी देवताओं के सामने इन्सानी जान की कुर्बानी पेश करना एक मज़हबी लाज़िमह समझते थे। अमीर ख़ूर्द देहलवी ने अपनी किताब सीरुल औलिया में उस दौर के हिन्दुस्तान का नक़्शह इस तरह खींचा है: "पूरा हिन्दुस्तान कुफ़्र व शिर्क और बुत परस्ती का गहवारह था और हिन्दुस्तान के सरकशों में से हर सरकश अना रब्बुकुमुल अअला (मैं तुम्हारा रब हूं) का दअवा करता था और अपने आप को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल शानहु का शरीक समझता था और वह लोग पत्थर, ढेले, दरख़्त, गाए और उस के गोबर को सज्दह करते थे और कुफ़्र की तारीकी से उन के दिलों के ताले और भी मज़बूत हो रहे थे।

आज के हिन्दुस्तान में भी हिन्दुओं के हालात इस से मुख़्तलिफ़ नहीं हैं मगर आज तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से मुल्क के हर गोशे और हर ख़ित्ते में मुसलमान मौजूद हैं उस ज़माने में कोई अल्लाह व रसूल का नाम लेवा और आप की मदद करने वाला न था

ऐसे हालात और माहौल में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहू हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए। (ऐज़न, सः २०४-२०५)

सवालः सरकार ख़्वाजा का देहली में दाख़िल होने का वाक़िया बयान कीजिये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हांसी से रोहतक पहुंचे और वहां से ५७८ हिजरी मुताबिक़ ११९१ ई० में देहली पहुंचे। वहां खुशी के जश्न मनाए जा रहे थे। घर घर घी के चराग़ रोशन थे क्योंकि प्रिथवी राज ने पानी पत के क़रीब तराइन के मैदान में हिन्दुस्तान के बावन राजाओं की मुत्तहिदह कुव्वत से शहाबुद्दीन ग़ौरी को शिकस्त देकर पिस्पा कर दिया था। हिन्दू जिस क़दर खुश थे सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उसी क़दर मलूल हुए। आप कुछ दिन देहली में ठहरे देहली का चप्पह चप्पह भी कुफ़्र व शिर्क में डूबा हुवा था। वहां के लोग इन मुसलमान दुरवेशों को देख कर तिलमिलाए तो बहुत लेकिन खुदा की कुद्रत कि उन पर इन अल्लाह के शेरों की कुछ ऐसी हैबत तारी हुई कि शरारत की जुरअत न कर सके। अल्बत्ता एक नौजवान खुफ़यह तौर पर सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को क़त्ल करने के इरादे से एक छुरी बग़ल में छुपा कर आप की मजलिस में आया और वार करने के लिये मौक़अ की तलाश में था कि आप ने अचानक उस की तरफ़ देख कर फ़रमायाः "भाई अपना काम कर, झिजकता क्यों है?" आप के अल्फ़ाज़ नश्तर बन कर उस नौजवान के सीने में पैवस्त हो गए। वह उसी वक़्त क़दमों पर गिर पड़ा, अफ़ू व दरगुज़र का ख़्वास्तगार हुवा और मुशरर्फ़ ब-इस्लाम हो गया। सरकार ख़्वाजा क़यामे देहली के दौरान बराबर तब्लीग़े हक़ में मसरूफ़ रहे। पांचों वक़्त अज़ान और नमाज़ बा जमाअत का एहतमाम होता। आप की जलालत और अज़मत से मुतअस्सिर हो कर हज़ारों हिन्दू हल्क़ह बगोश इस्लाम हो गए। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २१७)

सवालः समाना में सरकार ख़्वाजए पाक के ख़िलाफ़ साज़िश के तअल्लुक़ से बयान कीजिये?

जवाबः कुछ दिन क़यामे देहली के बाद आप अजमेर की तरफ़ रवानह हो गए। बाज़ तजकिरह निगारों के बक़ौल आप ने अजमेर के सफ़र में सोनी पत, नारनोल और समाना में भी क़याम किया। सोनी पत में सय्यिदुना इमाम नासिरुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि के आस्ताने पर मोतकिफ़ होने का भी ज़िक्र मिलता है। समाना में आप के दौराने क़याम एक अजीब वाक़िअह भी पेश आया। बयान किया जाता है कि वहां के राजा के पास सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तस्वीर भी थी और आप को गिरफ़्तार या क़त्ल करने के अहकामात भी। उसे जब आप की आमद का हाल मालूम हुवा तो बहुत ख़ुश हुवा। प्रिथवी राज को ख़ुश करने का एक नादिर मौक़अ उस के हाथ आ गया था। उस ने अपने मुशीरों को जमा करके उन की राए ली कि सरकार ख़्वाजा और उन के साथियों पर किस तरह क़ाबू पाया जाए।

राजा के एक तेज़ मिजाज़ मुशीर ने कहाः "आप इस मस्अले को इतनी अहमियत क्यों दे रहे हैं आप मुझे हुक्म दीजिये इन तीस चालीस मुसलमानों को गिरफ़्तार या क़त्ल करना कोई मुश्किल काम नहीं।" राजा यह बात सुन कर बोला "यह काम इतना आसान नहीं है जितना तू समझ बैठा है उन के सामने ताक़त से काम लेना ख़ुद को मौत के मुंह में डालना है महाराज आनन्द नराइन से यह बात मैं ने ख़ुद सुनी है कि अगर हिन्दुस्तान के सारे जोगी, ग्यानी और जादूगर मिल कर भी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मुक़ाबला करें तो हार जाएंगे। हां उन पर अगर धोके से क़ाबू पा लिया जाए तो कामयाबी का इमकान है।"

चुनान्चे सोचे समझे मन्सूबे के मुताबिक़ राजा पुरशोमत अपने मुसाहिबीने ख़ास के साथ सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़ाफ़िलह में पहुंचा और हाथ जोड़ कर प्रनाम करते हुए कहाः "यह हमारी ख़ुश नसीबी है कि आप जैसा महातमा हमारी रियासत में आया है। मेरी इल्तिजा है कि आप राज महल की शोभा बढ़ाएं और हमें अपनी सेवा का मौक़अ दें।"

आप ने कहाः "हम किसी राज महल में नहीं ठहर सकते। यह ज़मीन यह आसमान हमारे लिये काफ़ी हैं।" राजा पुरशोतम बोलाः "यह आप ने ठीक कहा आप जैसे लोग इन तकल्लुफ़ात को पसंद नहीं करते। अच्छा यह इल्तिजा ही क़ुबूल करलें कि जब तक आप यहां ठहरें, आप सब का भोजन मेरी रसोई से पेश किया जाए।"

सरकार ख़्वाजा ने यह पेशकश मुस्कुराते हुए क़ुबूल कर ली और कहाः "हम ने सुना है कि राजपूत बात के धनी होते हैं और मेहमान के साथ कभी धोका नहीं करते। क्या तुम भी राजपूतों की रिवायत का एहतेराम करोगे।"

पुरशोतम के चहरे का रंग उड़ गया मगर उस ने हज़रत ख़्वाजा को यक़ीन दिलाया कि वह राजपूतों की रिवायत के मुताबिक़ मेहमानों की इ़ज़्ज़त करता है।

राज महल से खाना आया तो सरकार ख़्वाजा के सामने लाकर रख्खा गया। खाना देख कर आप मुस्कुराए और ख़्वाजा फख़्रुद्दीन से कहाः "एक काग़ज़ खाने के पास रख दो।" इरशाद की तामील हो गई तो आप ने कुछ क़ुरआनी आयात पढ़ कर खाने पर दम कर दिया। खाने में जितना ज़हर था खाने से निकल कर सुफ़ूफ़ की सूरत में काग़ज़ पर जमा हो गया। आप ने ज़हर की पुड़िया बांध कर खाना लाने वालों में से एक आदमी के हाथ पर रख दी जो फटी फटी आंखों से यह सब मनज़र देख रहा था। "पुरशोतम से कहना यह अपना ज़हर वापस ले लो तुम राजपूतों के माथे पर कलंक का दाग़ हो अल्लाह ज़ालिमों और बद अहदों को अपनी मख़लूक़ की निगहदारी पर कभी बरक़रार नहीं रखता।" सरकार ख़्वाजा ने उस शख़्स से कहा जिस को ज़हर की पुड़िया दी।

खाना लाने वाले चले गए तो आप ने अपने रुफ़क़ा से कहाः "बिस्मिल्लाह" और दुरवेश खाने में मसरूफ़ हो गए। (ऐज़न, सः २१८-२१६)

सवालः आनन्द नराइन जोगी जन्नत की आग़ोश में कैसे?

जवाबः सरकार ख़्वाजा समाना से चले तो किसी ने मुज़ाहेमत न की अभी आप समाना से दस फ़र्सख़ ही चले होंगे कि आप के रुफ़क़ा में से एक ने देखा कि एक शख़्स हिरन की खाल पर बैठा हुवा हवा में परवाज़ करता चला आ रहा था। आप को इत्तिलाअ दी गई तो फ़रमायाः "आने दो यहीं आ रहा है।" थोड़ी ही देर में आने वाला सरकार ख़्वाजए पाक के क़दमों में पड़ा हुवा था। आप ने फ़रमायाः तुम्हें आना ही था आनन्द नराइन जोगी! अच्छा हुवा कि वक़्त पर आ गए। जब तुम ने और अजय पाल ने हमें तसव्वुर में देखा था और हमारी तस्वीरें बनवाई थीं उसी वक़्त मेरे ख़ुदा ने ईमान का बीज तुम्हारे दिल में बो दिया था आओ देर न करो।"

आनन्द नराइन दो ज़ानू आप के सामने बैठ गया आप ने कलिमा तय्यिबह पढ़ाया और उस के हक़ में दुआए ख़ैर फ़रमाई, फिर क़ल्ब पर तवज्जुह डाली जिस से उस पर नशे की कैफ़ियत तारी हो गई। उसी आलम में उस ने कहा "मेरे ख़्वाजा अब इजाज़त दीजिये।"

आप ने कलिमा तय्यिबह पढ़ना शुरू किया था रुफ़क़ा भी हम आहंग हो गए, आनन्द नराइन भी कलिमए तय्यिबह के विर्द में शरीक हो गया और कलिमा पढ़ते पढ़ते ही अपनी जान, जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। सरकार ख़्वाजा ने मुरीदों से कहा "देखा ख़ुश नसीबी इसे कहते हैं मरने से पहले अल्लाह तआला ने ईमान लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी मुझे क़वी उम्मीद है कि यह शख़्स जिस ने न कभी नमाज़ पढ़ी न रोज़े रखे न हज किया न दीगर फ़राइज़ अदा करने की मुहलत पाई। अल्लाह अपनी रहमतों से उसे बख़्श देगा।

आप ने ग़ुस्ल दिला कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और अपने हाथों से क़ब्र में उतारा। आख़िरी दीदार करने वालों ने क़ब्र में एक शगुफ़्तह चहरह देखा जिस पर आसूदगी और इत्मिनान की बारिश हो रही थी। तदफ़ीन के बाद रात उसी मंज़िल पर गुज़ारी सुब्ह क़ाफ़िलह अपनी मंज़िल की तरफ़ चल पड़ा। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २२०-२२१)

सवालः साधुओं के एक मनचले गिरोह को सबक़ सिखाने का वाक़िअह

बताइये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा का क़ाफ़िलह चलते चलते वहां पहुंचा जहां अब जैसूर है तो साधुओं के एक मनचले गिरोह से आप का टकराव हो गया। किसी को खुद छेड़ना मुसलमानों के अख़लाक़ के मनाफ़ी था जवाबी कारवाई पर मजबूर हो जाते तो भी दुशमन को हलाक करने से दामन बचाते, कोशिश यही होती कि इस्लाहे हाल हो जाए अगर ईमान न लाएं तो अहले ईमान के रास्ते में दीवार न बनें। साधुओं का यह हरीफ़ गिरोह अपने कर्तबों पर नाज़ां था। हज़रत ख़्वाजा और उन के रुफ़क़ा का इस्लाम उन साधुओं के लिये जंग का जवाज़ बन गया। पहल उन्हीं की तरफ़ से हुई, उन्हों ने अपने मंतरों से मुसलमानों पर आग बरसानी शुरू कर दी। ख़्वाजा बुज़ुर्ग ने उस आग को अपने ज़ेरे लब तबस्सुम से फूल बना दिया, फूलों की बारिश देख कर वह हैरान हुए। उन्हों ने दूसरा वार किया। सरकार ख़्वाजा की तरफ़ एक तूफ़ानी धुवां भेजा जिस में धांस ही धांस थी, अगर यह धुवां सरकार ख़्वाजा तक पहुंच जाता तो मुसलमान उस वक़्त तक छींकते रहते जब तक वह बेहोश न हो जाते मगर सरकार ख़्वाजा ने उस धुवें की यलग़ार को दुशमनों ही की तरफ़ लौटा दिया नतीजे में साधुओं पर छींकों का दौरह पड़ गया। वह छींकते छींकते निढाल हो गए और बेहोश हो हो कर एक दूसरे पर ढेर हो गए। आप के नज़्दीक उन सरकशों के लिये इतनी ही सज़ा काफ़ी थी, आप उन्हें उसी हाल में छोड़ कर अपनी राह चल पड़े। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २२१)

सवालः राम प्रकाश ज़ियाउर रहमान कैसे हो गया?

जवाबः राम प्रकाश एक ज़हीन नौजवान था, वह कट्टर मज़हबी और बला का दिलेर था। सिंध और पंजाब में रह कर मुसलमानों की तहज़ीब और उनके आदात व अतवार से वह अच्छी तरह वाक़िफ़ हो गया था। मुसलमानों के ख़िलाफ़ जासूसी की कई कामयाब कारगुज़ारियों की वजह से प्रिथवी राज की नज़र में उस की काफ़ी इज़्ज़त थी। राम प्रकाश ने मुल्तान पहुंच कर मुसलमानों का भेस बदल लिया, सरकार

ख़्वाजा को तलाश करने में उसे कोई दुशवारी पेश न आई। वह किसी और मुनासिब मौक़अ की ताक में सरकार ख़्वाजा के आस पास मंडलाता रहा, आख़िर एक रात आंख बचा कर वह सरकार ख़्वाजा के ख़ेमे में दाख़िल हो गया मगर उस ने तवक़्क़ो के ख़िलाफ़ सरकार ख़्वाजा को जागता हुवा पाया, जैसे ही वह अन्दर पहुंचा सरकार ख़्वाजा ने उस से कहा: "राम प्रकाश! तुम्हें मुल्तान आए हुए सात दिन हो चुके हैं और हमारे पास आज आए हो, जो ज़हर में बुझा हुवा ख़न्जर लेकर तुम अजमेर से चले थे हम उसी वक़्त से तुम्हारे मुंतज़िर थे।"

इन इन्किशाफ़ात पर वह हैरान रह गया, मगर तहय्युर को ज़हन से झटक कर उस ने हम्ले के लिये ख़न्जर लहराया। आप की एक ही निगाह ने उसे शल कर दिया। आप ने ज़ेरे लब तबस्सुम के साथ फ़रमाया: "अरे तुम रुक क्यों गए? प्रिथवी राज, राज गुरू और सबीता को ख़ुश करने के इस मौक़अ को क्यों खो रहे हो?" राम प्रकाश क़दमों पर गिर गया और कहने लगा मुझे मआफ़ कर दीजिये, आप तो भगवान के औतार हैं। सरकार ख़्वाजा ने फ़रमाया: "ऐसा न कहो राम प्रकाश! मैं अल्लाह का एक नाचीज़ बंदह हूं और सिर्फ़ एक पैग़ाम लेकर आया हूं कि हम सब एक ख़ुदा के बंदे हैं ऊंच नीच की हर तक़सीम ग़ैर फ़ित्री है अपने बनाए हुए बुतों के सामने सर झुकाना इन्सानी शर्फ़ का इन्कार है।" आप ने थोड़ी देर में राम प्रकाश के ज़हन को तौहीद के नूर से मुनव्वर कर दिया और वह हल्क़ए इस्लाम में दाख़िल हो गया। उस का इस्लामी नाम ज़ियाउर रहमान रख्खा गया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २११-२१२)

सवाल: ख़्वाजए पाक के हुक्म से ऊंट बैठे रह गए, मुख़्तसर बताइये?

जवाब: हादिए हिन्दुस्तान हिन्द के राजा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का नूरानी और रूहानी क़ाफ़िला अजमेर पहुंचा तो ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शहर के बाहर एक मक़ाम पर सायादार दरख़्तों के नीचे क़याम करना चाहा तो राजा प्रिथवी राज के मुलाज़िमों

ने बड़ी बद अख़लाक़ी और निहायत बद तमीज़ी का मुज़ाहिरह करते हुए उस जगह क़याम करने से मना किया और सारबानों ने कहा कि इस जगह पर हमारे राजा के ऊंट बैठते हैं। ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैं यहां से जाता हूं, तुम्हारे ऊंट बैठते हैं तो अब बैठे ही रह जाएंगे। यह फ़रमा कर आप वहां से रवाना हो गए और अनासागर के क़रीब क़याम फ़रमाया, वह जगह आज भी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चिल्ले के नाम से मशहूर है। जब शाम हुई तो राजा के ऊंट अपनी चरागाहों से आए और अपनी जगह पर बैठ गए। तो ऊंट ऐसे बैठ गए कि उठाने से भी न उठ सके। ऐसा महसूस होता था कि उन के सीने ज़मीन से चिपक गए हों, सुब्ह के वक़्त जब राजा के मुलाज़िमों, सारबानों ने ऊंटों को उठाना चाहा तो हज़ार कोशिश के बाद भी ऊंट न उठ सके। मुलाज़िमों, सारबानों ने सारे वाक़िअह की इत्तिला राजा को दी। तो राजा प्रिथवी राज ने कहा कि तुम लोग उस दुरवेश की ख़िदमत में हाज़िर होकर उन से अपनी ग़लती और बे अदबी की मआफ़ी तलब करो। चुनान्चे मुलाज़िमों ने सरकार ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर मअज़िरत तलब की और अपनी बे अदबी की मआफ़ी मांगी। आप ने मआफ़ फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया जावो अल्लाह तआला की बारगाह से तुम्हारे ऊंटों के उठने का हुक्म हो गया है। जब यह सारबान ऊंटों के पास आए तो आप की रूहानी ताक़त व करामत देख कर हैरान रह गए कि हक़ीक़त में सारे ऊंट खड़े हो गए हैं।

(असीरुल अकताब, सः १२४, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जिः १, सः २६८)

सवालः राम देव महंत के कुबूले इस्लाम का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः अना सागर के आस पास सैकड़ों मंदिरों में एक सब से बड़ा मंदिर था और वह बड़ा मंदिर राजा प्रिथवी राज और उस के ख़ानदान के लिये मख़सूस था और उस मंदिर का महंत राम देव था। राम देव एक बुलन्द क़ामत और ताक़तवर इन्सान था। बहुत बड़ा जादूगर और सिफ़्ली इल्म का जानकार भी था।

राम देव के कुबूले इस्लाम का वाक़िअह इस तरह बयान किया गया है कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की रूहानी ताक़त व कुव्वत से अजमेर की ज़मीन पर इस्लाम का शजर फूलने और फलने लगा और अजमेर की धर्ती से ईमान व यक़ीन का चश्मह उबलने लगा और अल्लाह व रसूल की मअरिफ़त के अनवार व तजल्लियात से ख़ल्क़े ख़ुदा मुनव्वर व मुजल्ला होने लगी तो इस्लाम की बढ़ती हुई कुव्वत व ताक़त और मुसलमानों की रोज़ अफ़ज़ूं तादाद को देख कर राजा प्रिथवी राज घबरा गया और उसी हैरानी और प्रेशानी के आलम में राम देव महंत के पास आया और कहने लगा कि आप अपने जादू और सिफ़्ली अमल से इस मुसलमान फ़क़ीर को हलाक कर दो या इस मुसलमान फ़क़ीर को हमारे मुल्क से बाहर निकाल दो वरना पूरा अजमेर मुसलमान हो जाएगा और हमारी हुकूमत ख़तरे में पड़ जाएगी। राजा प्रिथवी राज की गुफ़्तगू को सुनने के बाद राम देव महंत थोड़ी देर ख़ामोश बैठा रहा। और बोला कि ऐ राजा साहब यह मुसलमान दुरवेश बहुत ही कुव्वत व ताक़त और कमाल का मालिक है। इस फ़क़ीर से इस तरह मुक़ाबला आसान नहीं है। मैं कोशिश करता हूं कि इस फ़क़ीर पर जादू और सिफ़्ली अमल से कामयाबी मिले इस के अलावह कोई और तरीक़ह नहीं है।

राम देव महंत अपने चेलों और शागिर्दों के साथ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पास पहुंच गया और जादू व सिफ़्ली अमल का मंत्र व तंत्र पढ़ने लगा। एक मुरीद ने ख़्वाजए पाक की ख़िदमते विलायत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या ख़्वाजा यह कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन और पंडित राम देव जादूगर की हिमायत में फिर वापस आ गए हैं और जादू चला रहे हैं ताकि हम मुसलमानों को मग़लूब व प्रेशान कर दें।

ख़्वाजए पाक ने इरशाद फ़रमाया कि न घबराओ इन सब का जादू बातिल है। इन-शा अल्लाह तआला हम मुसलमानों पर इन के जादू का कोई असर नहीं होगा बल्कि राम देव जादूगर इन लोगों पर हम्ला करता नज़र आएगा।

यह इरशाद फ़रमा कर ख़्वाजए पाक नमाज़ में मशगूल हो गए, यहां तक कि तमाम कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन राम देव महंत के हमराह क़रीब आ गए।

मगर जब इन कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की निगाहें ख़्वाजए पाक के रूहानियत विलायत वाले चेहरह पर पड़ीं तो उन के जिस्मों पर लर्ज़ह तारी हो गया। उनके क़दमों में चलने की ताक़त ख़त्म हो चुकी थी और ज़बानें गूंगी हो चुकी थीं और राम देव महंत बेद की तरह कांप रहा था और उस के दिल की दुनिया बदल चुकी थी। कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन राम देव महंत को इस लिये लाए थे कि ख़्वाजए पाक को प्रेशान व हैरान करेगा मगर राम देव महंत ख़्वाजए पाक की हिमायत में आ गया और लकड़ी और पत्थर से दुशमनों को मार कर भगा दिया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने राम देव महंत की यह मुजाहिदाना शान और मुहब्बत देखी तो एक प्याला पानी अपने रूहानी हाथों से अता फ़रमाया और बड़ी शफ़क़त व मुहब्बत से फ़रमाया कि पानी को तुम पी लो। राम देव महंत ने उस पानी को बड़ी अक़ीदत के साथ पी लिया। पानी का पीना था कि राम देव महंत का दिल कुफ़्र व शिर्क के अंधेरे से पाक व साफ़ हो गया और उस के क़ल्ब व जिगर में इस्लाम की रोशनी और ईमान व यक़ीन का उजाला फैल गया और वह बे खुद होकर ख़्वाजए पाक के नूरानी क़दमों पर गिर पड़ा और मुसलमान हो गया।

वह देव मुसलमान होकर ख़्वाजए पाक से अर्ज़ करता है कि हुजूर! आप के चेहरए पुर नूर के दीदार से मैं बहुत शाद हूं। तो ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इस मुनासिबत से उस का नाम शादी देव रख्खा। (सीरतुल अक़ताब, बहवाला अनवारुल बयान)

सवालः प्रिथवी राज की मां ने क्या पेशिन गोई की थी?

जवाबः ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की हिन्दुस्तान आमद से बारह साल पहले राजा प्रिथवी राज की मां ने इल्मे नुजूम के ज़रीअह मालूम कर लिया था कि अजमेर में एक मुसलमान फ़क़ीर आएगा जो

साहेबे कमाल होगा। चुनान्चे मां ने अपने बेटे प्रिथवी राज को पेशिन गोई करते हुए नसीहत की कि जब वह मुसलमान फक़ीर तुम्हारे मुल्क अजमेर में आए तो उस फक़ीर के साथ नर्मी व अदब और तवाज़ो से पेश आना, अगर तुम ने अपने उस मुसलमान दुरवेश के साथ बे अदबी और बद सुलूकी का मुज़ाहिरह किया तो तुम्हारा मुल्क तबाह हो जाएगा। और तुम हलाक व बरबाद हो जाओगे। यह सुन कर प्रिथवी राज मग़मूम और मुतफ़क्किर हुवा। (अहले सुन्नत की आवाज़ २००८ ई०, सः ४५-४६)

सवालः अना सागर ख़्वाजए पाक के प्याले में किस तरह आया?

जवाबः शादी देव के मुसलमान हो जाने के बाद कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन और राजा प्रिथवी राज का ग़म व गुस्सह और ज़्यादह हो गया, कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन ने प्रिथवी राज को मशवेरह दिया कि अना सागर के पानी पर पहरा बिठा दिया जाए, पानी न मिलने की सूरत में यह मुसलमान फ़क़ीर और उस के तमाम रुफ़क़ा प्रेशान होकर अजमेर छोड़ कर चले जाएंगे, अना सागर जिस का पानी चरिन्द व परिन्द तक पीते थे मगर सरकार ख़्वाजा और आप के साथियों पर पानी बंद कर दिया गया, तालाब के किनारे सिपाहियों का सख़्त पहरा बिठा दिया। ख़्वाजए पाक के एक मुरीद जब अना सागर पर पानी लेने के लिये गए तो देखा कि तालाब के इर्द गिर्द फ़ौज का पहरा लगा है और पानी लेने से मना कर दिया गया। मुरीद ने आकर ख़्वाजए पाक को सारा क़िस्सह सुनाया। यह सब ग़ैर अख़लाक़ी तर्ज़े अमल को सुन कर ख़्वाजए पाक की आंखों में विलायत व रूहानियत की रोशनी चमकी और आप की पेशानी की लकीरों से जलाल व हैबत के आसार नमूदार हुए। फ़रमाया शादी देव! यह मेरा प्याला लो और अना सागर पर जाओ और कहो तुझे मुईनुद्दीन ने बुलाया है। शादी देव अताए रसूल मालिके हिन्दुस्तान हमारे ख़्वाजा के हुक्म के मुताबिक़ प्याला लेकर अना सागर पर पहुंचे और प्याले को अना सागर के पानी में डाल कर कहा। "ऐ पानी चल तुझे मेरे ख़्वाजा ने बुलाया है।"

ख़्वाजए पाक का हुक्म सुनते ही सारा पानी प्याले में आ गया यहां तक कि अजमेर के सारे तालाब और कुवें का पानी भी प्याले में समा गए और सारे तालाब और कुंवें खुश्क हो गए और मज़ीद हैरत की बात तो यह है कि औरतों और जानवरों का दूध भी सूख गया। (ऐज़न)

जब राजा पिथौरा और अजय पाल जोगी ने यह हाल देखा कि उन का जादू कोई काम नहीं कर रहा है और अना सागर का पानी ख़्वाजा के क़ब्ज़े में होने की वजह से लोग पानी के बग़ैर हलाकत के क़रीब पहुंच गए हैं तो सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से आजिज़ी और इन्किसारी के साथ रहम की दरख़्वास्त करने लगे। आप ने फ़रमाया कि हमारा यंह लोटा उठा ला! अजय पाल ने अपना पूरा ज़ोर सर्फ़ कर दिया मगर लोटा हिला भी न सका। सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि यह तेरा जादू नहीं है कि बातिल हो जाए, यह लोटा मर्दाने हक़ का है। फिर आप ने शादी देव से कहा कि लोटा ले आ। वह आप के हुक्म की तामील में लोटा उठा लाया। आप ने उस में से थोड़ा पानी तालाबों की जानिब उछाल दिया तो बहुक्मे इलाही तमाम खुश्क हौज़, कुंवें, तालाब और चश्मे पानी से भर गए। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २३३)

सवालः राज माता का बुज़्दिलाना ख़िताब के बारे में बताइये?

जवाबः प्रिथवी राज की मां, राज माता सबीता की तरफ़ से पंडितों पर ज़र व जवाहर की बारिश की गई, उस के बाद सबीता ने खड़े हो कर सब को प्रनाम किया और दूर दूर से आने वालों का शुक्रिया अदा करते हुए कहाः "यह मेरी बड़ी खुश नसीबी है कि आप जैसे महाप्रुशों ने अजमेर आने का कश्ट उठाया, प्रिथवी राज मेरा बेटा है निडर और बहादुर, उस की तलवार दुशमनों के सर काटने से पहले हौसलों की डोर काट देती है, हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान से बाहर किसी में इतना दम नहीं कि उस से आंख मिला सके। आज हिन्दुस्तान के बावन राजा उस के सामने अपनी गर्दन झुकाते हैं। देहली, अजमेर की हुकूमत का एक सूबह है, यह बात आप लोग

अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे धर्म के वास्ते भी प्रिथवी राज एक मज़बूत क़िलअ है वरना मुसलमान अब तक हमारा और हमारे धर्म का सत्यानास कर चुके होते। अगर बड़े से बड़ा दुशमन बड़ी से बड़ी फ़ौज लेकर इधर आता तो मैं आप को तकलीफ़ न देती। प्रिथवी राज उस के दांत खट्टे कर देने के लिये काफ़ी था मगर राज गुरूजी कहते हैं कि एक मुसलमान दुरवेश अपनी रूहानी ताक़तों के साथ मुल्तान आ चुका है और वहां से वह इधर का रुख़ करने ही वाला है। राज गुरूजी कहते हैं कि हमारी सारी फ़ौजें मिल कर भी उस रूहानी कुव्वत का मुक़ाबलह नहीं कर सकतीं। रूहानी कुव्वत का मुक़ाबलह रूहानी कुव्वत ही से किया जा सकता है, अब यह मुआमलह आप लोगों के सिपुर्द है आप ही लोग जानें। (ऐज़न, सः २०८)

सवालः जादूगर अजय पाल जोगी का जवाबी ख़िताब के तअल्लुक से बताइये?

जवाबः राज माता अपनी बात ख़त्म करके बैठी तो हिन्दुस्तान का सब से बड़ा जादूगर अपनी जगह से उठा, उसे उस अहद का "सामरी" कहा जाता था। उस के पास बड़े बड़े देवताओं का आशीरवाद था, उसे लोग रूहानी कुव्वतों का सरचश्मह कहते थे। वह अपनी जगह से उठ कर वहां पहुंचा जहां सबीता ने अभी अभी अपनी बात ख़त्म की थी। उसे देख कर तमाम मजमअ फ़लक शिगाफ़ नअरों से गूंज उठाः "महाराज अजय पाल जी की जय।"

नअरों का शोर थमा तो अजय पाल ने मजमअ को मुख़ातब किया और कहाः "राज माता सबीता जी और सज्जनो! हम सब अपने धर्म के सेवक हैं, राज गुरूजी ने मुसलमान दुरवेश की रूहानी कुव्वतों के ज़िक्र से जो ख़ौफ़ व हेरास फैलाया है मैं नहीं समझ सकता कि इस का सबब क्या है। मैं यह जानता हूं कि वह बड़े ग्यानी हैं और उन का इल्म मोअतबर है मगर रस्सी को सांप समझ कर कांपना बुज़्दिली है। वह कहते हैं कि मुसलमान दुरवेश के पास बड़ी शक्ती है। क्या मैं यह पूछ सकता हूं कि उन्हें हमारी शक्तियों का भी हाल मालूम है?

मजमअ फिर बेक़ाबू हो गया नअरों का शोर देर तक जारी रहा "आप ने हवन करके देवता को राज़ी कर लिया है। सितारों की चाल अब हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।" अजय पाल फिर बोलने लगा "निराश होने की ज़रूरत नहीं, मैं यक़ीन दिलाता हूं कि यहां के जो बड़े हैं वह तो बहुत बड़े हैं मेरा मामूली से मामूली चेला भी मुसलमान दुरवेश को दौड़ाता हुवा वहां पहुंचा आएगा जहां से वह चला है। अब सारे, ग्यानियों से मेरी दरख़्वास्त है कि आप लोग अपने अपने स्थानों पर जाएं सिर्फ़ कुछ लोग यहां रुकें ताकि सांप का मुंह कुचलने में हमारी मदद करें। हम जिन लोगों को रोक रहे हैं वह सब शक्तीवान हैं, उन में कोई काली देवी का लाडला है तो कोई विष्णू का प्यारा, कोई शंकर का मीत है तो कोई जादू में अपनी मिसाल आप है।" (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २०६)

सवालः हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के खिड़ाऊँ का पावर बताइये?

जवाबः राजा प्रिथवी राज ने जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की ताक़त व कुव्वत को देखा तो उस के होश उड़ गए क्योंकि पूरे तालाब का पानी एक कशकोल में कर देना कोई मामूली बात नहीं थी। प्रिथवी राज बे ईमान था, काफ़िर था, विलायत की हक़ीक़त को समझ न सका। उस ने यह ख़्याल किया कि यह दुरवेश बहुत बड़ा जादूगर है, जादू की ताक़त से यह कमाल दिखा रहा है और लोगों को अपने क़रीब कर रहा है। प्रिथवी राज ने सोचा और फ़ैसला किया कि लोहे को लोहे से काटा जा सकता है। इस लिये इस दुरवेश के मुक़ाबले में नामवर जादूगरों को लाया जाए। उस वक़्त मुल्क का सब से ताक़तवर जादूगर, जयपाल जोगी था, इस लिये जयपाल जोगी को बुलाया गया ताकि वह अपने साहिराना कमाल से, अपनी जादू की ताक़त से दुरवेश की ताक़त को ख़त्म कर दे। चुनान्चे जयपाल जोगी को सारी बात बताई गई और दुरवेश के हालात से आगाह किया गया। जयपाल जोगी ने प्रिथवी राज से कहा, महाराज! अब आप को

घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है, प्रेशान होने की ज़रूरत नहीं है, यह हमारे मिनटों का खेल है। हमारी ताक़त के सामने दुरवेश की ताक़त काम नहीं आ सकती। प्रिथवी राज जयपाल जोगी की बात पर खुश हो गया, जयपाल जोगी अपने सैकड़ों शागिर्दों के साथ नाज़ व नख़रे में डूब कर शेरों पर सवार होकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के पास आ गया। हर एक के हाथों में आग उगलने वाले सांप थे। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने जब उन साहिरों की बद तमीज़ी देखी तो अपने मुरीदों के गिर्द एक हिसार खींच दी ताकि आप के साथी उन साहिरों की शरारत से महफ़ूज़ व मामून रहें। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि उन लोगों से फ़रमाते हैं तुम लोग वापस चले जाओ और दुरवेशों को तंग मत करो। साहिरों ने जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की बातें सुनीं तो और ज़्यादह शर अंगेज़ी पर उतर आए। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि जलाल में आए और ज़मीन से एक मुट्ठी ख़ाक उठा कर उन पर फेंक दी। मिट्टी उठा कर फेंकना था कि सारा जादू ख़त्म हो गया। अब न आग के शोले रहे, न शेरों और सांपों का ज़ोर रहा। जादूगरों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं और हिम्मत जवाब देने लगी।

जयपाल जोगी ने सोचा कि अगर ज़मीनी हम्ले से ज़ेर न कर सका, ज़मीनी हम्ले से शिकस्त न दे सका तो आसमानी हम्ले से ज़रूर शिकस्त दे दूंगा। चुनान्चे बड़े ग़ुरूर व घमंड के साथ अपनी ताक़त पर इतराता हुवा, हवा में उड़ना शुरू किया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपने मुरीदों से फ़रमाया देखो वह कहां तक गया, मुरीदों ने कहा हुज़ूर! बहुत दूर चला गया, फ़रमाया अब देखो कहां तक गया। अर्ज़ किया हुज़ूर इतनी बुलन्दी पर चला गया कि अब नज़र भी नहीं आ रहा है। ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि अपने खड़ाऊँ को हवा में फेंकते हैं और फ़रमाते हैं ऐ खड़ाऊँ कुफ़्र ऊपर और तू नीचे, जा उसे तलाश करके ला, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का भेजा हुवा खड़ाऊँ हवाओं को चीरता हुवा, फ़ज़ाओं से

टकराता हुवा जयपाल जोगी तक पहुंचा और उस की खोपड़ी पर ज़र्ब लगाता हुवा नीचे लाना शुरू किया, खड़ाऊँ ने कहा ऐ जयपाल जोगी अब तू ऊपर नहीं जा सकता है और जाने की तुझ में ताक़त भी नहीं है, नीचे चल और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़दमों में मआफ़ी की भीक मांग, ग़रीब नवाज़ के क़दमों में आना था कि उन के दिल की दुनिया बदल गई, दिल से कुफ़्र की तारीकी छट गई और ईमान का उजाला फैल गया। कुफ़्र की बदबू निकल गई और ईमान की ख़ुश्बू से उन का मशामे जां मुअत्तर हो गया। अर्ज़ किया हुज़ूर मैं ने आप को मान लिया है और मैं तसलीम करता हूं कि ईमान की ताक़त और है और कुफ़्र की ताक़त और!

ऐ ख़्वाजा! जब तेरे क़दमों में रहने वाली लकड़ी की खड़ाऊँ की ताक़त व कुव्वत का यह आलम है तो तेरी ताक़त व कुव्वत का आलम क्या होगा। फिर जोगी जयपाल ने हमारे ख़्वाजा के हाथ पर तौबा किया और कलिमह पढ़ कर मुसलमान हो गया।

ख़्वाजए पाक ने उन का नाम अब्दुल्लाह बयाबानी रख्खा। अर्ज़ की, हुज़ूर! हमारे लिये दुआ फ़रमा दें कि क़यामत तक ज़िन्दह रहूं। हमारे ख़्वाजा ने दुआ फ़रमाई क़ि या अल्लाह! इस बंदे की दुआ कुबूल फ़रमा। जब कुबूलियत का असर ज़ाहिर हुवा, आप ने इरशाद फ़रमाया तू ने क़यामत तक की ज़िन्दगी हासिल कर ली मगर लोगों की निगाहों से पोशीदह रहेगा। मशहूर है कि अब्दुल्लाह बयाबानी अजमेर के जंगलों और पहाड़ियों में रहते हैं और सरकार ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िरी देने वालों में से अगर कोई राह भूल जाए तो रास्तह बताते हैं और भूका है तो खाना खिलाते हैं। (ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जिः १, सः २६२, मूनिसुल अरवाह, सः ३२, अहले सुन्नत की आवाज़ २००८ ई०, सः ४६)

सवालः ख़्वाजए पाक के लबे झालरह पर क़याम के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने शादी देव और अब्दुल्लाह बयाबानी के मुसलमान हो जाने के बाद अना सागर की क़याम गाह को छोड़ कर

अपने रुफ़का के साथ शहर अजमेर में लबे झालरह के उस मक़ाम पर क़याम फ़रमाया जहां इस वक़्त आप का मज़ारे अनवर व अक़्दस है और यह जगह शादी देव की मिल्कियत थी। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २३७, बहवाला अनवारुल बयान)

सवालः प्रिथवी राज क़ो दावते इस्लाम देने का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने लबे झालरह शहर में तशरीफ़ लाने के बाद प्रिथवी राज को ख़त के ज़रीअह दावते इस्लाम पेश की और इरशाद फ़रमायाः ऐ प्रिथवी राज! तेरा अक़ीदह जिन लोगों पर था वह सब अल्लाह तआला के हुक्म से मुसलमान हो गए। अगर तू भलाई चाहता है तो तू भी मुसलमान हो जा वरना ज़लील व ख़्वार होगा, मगर पत्थर दिल प्रिथवी राज पर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हक़ व सच, दावत व नसीहत का कुछ असर न हुवा और वह संग दिल काफ़िर, काफ़िर ही रहा। तो ख़्वाजए पाक ने मुराक़ेबह किया और मुतफ़क्किर लहजा में फ़रमायाः अगर यह बद बख़्त ईमान न लाया तो मैं इस को इस्लामी लशकर के हाथों ज़िन्दह गिरफ़्तार करा दूंगा।

(सीरतुल अक़्ताब, सः १३२ बहवाला अनवारुल बयान)

सवालः प्रिथवी राज की औलाद के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने राजा प्रिथवी राज को जिस दअवते इस्लाम से सरफ़राज़ फ़रमाया था वह अगर्चे उस वक़्त राजा को नागवार हुई मगर वह आख़िरकार रंग लाकर रही और सतरहवीं पुश्त में प्रिथवी राज की औलाद में से सब से पहले क़स्बए मुंडराज (इलाक़ा अलवर) में राव मुईनुद्दीन ख़ां वल्द राव उधव, राव दौलत ख़ां, राव फ़िरोज़ ख़ां, राव उमर ख़ां, राव हबीब ख़ां, राव अजमेर ख़ां और राव यूसुफ़ अली ख़ां वग़ैरह भी इस्लाम की पनाह में आ गए। उन में राव यूसुफ़ अली ख़ां ख़ानदानी एज़ाज़ की वजह से रियासत अलवर के सरदारों में थे। (मिरातुल अनसाब, सः १८२-१८३, बहवालह मुईनुल अरवाह)

सवालः ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने इब्तिदाई तालीम कहां

पर हासिल की?

जवाबः खुरासान में।

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की उम्र क्या थी जब आप के वालिदे मोहतरम का इन्तिक़ाल हुवा?

जवाबः पन्द्रह बरस की। (मिरअतुल असरार, सः ५६३)

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने क़ुरआने पाक कहां जाकर हिफ़्ज़ किया?

जवाबः समर्क़ंद में।

सवालः नेशापूर के नज़्दीक हारून के एक छोटे क़स्बे में आप की मुलाक़ात किस से हुई?

जवाबः हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि से हुई, आप ने उन की ख़िदमत और इताअत का सिलसिला बराबर जारी रख्खा और फ़ैज़ हासिल किया।

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि पाक व हिन्द में किस रास्ते से आए?

जवाबः बग़दाद, मिरात, तब्रेज़ और बल्लख़ से ग़ज़नी पहुंचे और बाद अज़ां पाक व हिन्द में दाख़िल हुए।

सवालः लाहौर में आप ने किस बुज़ुर्ग के मज़ार के नज़्दीक चिल्ला किया?

जवाबः हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि अलैहि के मज़ार के क़रीब।

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि किस बादशाह के अहेद में हिन्दुस्तान आए?

जवाबः नरायन की दूसरी लड़ाई में मुहम्मद ग़ौरी की फ़तेह के बाद हिन्दुस्तान आए थे।

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने हिन्दुस्तान में किस सिलसिले की बुन्याद रख्खी?

जवाबः चिश्तियह सिलसिले की।

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि ने कितने अशआर कहे हैं?

जवाबः आठ हज़ार तक़रीबन।

सवालः यह अशआर कहां से शाए हो चुके हैं?

जवाबः नवल किशोर प्रेस लखनऊ से।

सवालः सब से पहले आप का मज़ार किस ने पुख़्तह करवाया?

जवाबः १४६४ ई० में सुल्तान महमूद ख़िल्जी ने।

सवालः आप के मज़ार के नज़्दीक मस्जिद किस ने बनवाई?

जवाबः १५०० ई० में मुग़ल बादशाह जलालुद्दीन अकबर ने।

सवालः आप के मज़ार का गुंबद संगे मरमर से किस मुग़ल बादशाह ने तामीर करवाया?

जवाबः शाहजहां ने।

सवालः हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि का मज़ार कहां वाक़े है?

जवाबः सूबए राजिस्थान अजमेर शरीफ़ में।

सवालः हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की विलादत कहां हुई?

जवाबः संजर इलाक़ा क़स्बा सीसतान में। ५३० हिजरी में। (इन्तिबाह सलासिले औलिया अल्लाह, सः ८८)

सवालः हज़रत ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिदे मोहतरम का इस्मे गिरामी बताइये?

जवाबः ख़्वाजा ग़यासुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

सवालः वालिदे मोहतरम के तर्कह से ख़्वाजए पाक को क्या चीज़ें मिली थीं?

जवाबः एक बाग़ और पन चक्की। (सीरुल आरिफ़ीन, सः ५०)

सवालः ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के पीर व मुर्शिद का इस्मे गिरामी बताइये?

जवाबः हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि।

सवालः हज़रत ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि अजमेर शरीफ़ किस सने हिजरी में तशरीफ़ लाए?

जवाबः ५६१ हिजरी में।

सवालः हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि जब अजमेर

तशरीफ़ लाए तो वहां किस की हुकूमत थी?

जवाब: राए पिथौरा की।

सवाल: हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की पहली ज़ौजए मोहतरमा का इस्मे गिरामी बताइये?

जवाब: हज़रत बीबी उम्मतुल्लाह रहिमहुल्लाहि तआला अलैहा। यह एक राजा की बेटी थीं, इस्लाम कुबूल किया और आप की ज़ौजियत में दाख़िल हो गईं। (तारीख़े फ़रिश्तह, दोम, स: ६११)

सवाल: हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की दूसरी बीवी का नाम बताइये?

जवाब: बीबी इस्मतुल्लाह बिन्ते सय्यिद वजीहुद्दीन। (ऐज़न)

सवाल: हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की औलादे अमजाद के बारे में बताइये?

जवाब: (१) सय्यिद फ़ख्रुद्दीन अबुल ख़ैर (२) सय्यिद ज़ियाउद्दीन अबू सईद (३) सय्यिद हुसामुद्दीन अबू सालेह और एक बेटी सय्यिदह बीबी हाफ़िज़ह जमाल थीं जिन का मज़ार हज़रत ख़्वाजए पाक के मज़ार शरीफ़ के पायंती की तरफ़ मुत्तसिल है। (मिरअतुल असरार, स: ६०२, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि: १, स: २६३)

सवाल: ख़्वाजा फ़ख्रुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाब: हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बड़े बेटे साहेबे रूहानियत बुज़ुर्ग थे और ख़्वाजए पाक के ख़लीफ़ह भी थे। ख़्वाजए पाक के विसाल शरीफ़ के बाद बीस साल तक आप के जानशीन रहे। रिज़्क़े हलाल के लिये अजमेर शरीफ़ से क़रीब मांदन गावं में खेती किया करते थे। ५ शाबान ६६१ हिजरी मुताबिक़ १२६३ ई० में क़स्बह सरवार में विसाल हुवा और वहीं तालाब के किनारे आप का मज़ारे अनवर है। (ऐज़न, स: २८४)

सवाल: ख़्वाजा हुसामुद्दीन सोख़्तह रहमतुल्लाहि अलैहि के बारे में बताइये?

जवाब: हिन्द के राजा सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि के पोते हज़रत फ़ख्रुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि के बेटे हज़रत ख़्वाजा हुसामुद्दीन

सोख़्तह बहुत पाए के बुज़ुर्ग हुए हैं, लम्बी उम्र पाई, विसाल शरीफ़ ७४१ हिजरी में हुवा। मज़ारे अक़दस क़स्बह सांभर शरीफ़ में है।(ऐज़न)

सवालः हज़रत ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि के मंझले बेटे के बारे में बताइये?

जवाबः हज़रत ख़्वाजा सय्यिद ज़ियाउद्दीन अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु, अपने वालिदे गिरामी के हमराह रहे। पचास या साठ साल की उम्र में विसाल अजमेर शरीफ़ में हुवा, झालरा के क़रीब हौज़ के पास आप का मज़ारे मुबारक है। (अहले सुन्नत की आवाज़ २००८ ई०, सः १०२)

सवालः हमारे ख़्वाजा के मशहूर ख़ुलफ़ा के अस्माए गिरामी बताइये?

जवाबः (१) ख़लीफ़ए आज़म हज़रत क़ुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (तारीख़े विसाल १४ रबीउल अव्वल ६३३ हिजरी महरौली शरीफ़, देहली)

(२) ख़लीफ़ए अरशद हज़रत ख़्वाजा सय्यिद फ़ख़ुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि (तारीख़े विसाल ५ शाबान ६६१ हिजरी सरवार शरीफ़)

(३) हज़रत ख़्वाजा सूफ़ी हमीदुद्दीन नागोरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (तारीख़े विसाल २६ रबीउल अव्वल ६७३ हिजरी नागोर शरीफ़, राजिस्थान)

(४) हज़रत ख़्वाजा क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (तारीख़े विसाल, ५ मुहर्रम शरीफ़ ६४३ हिजरी, देहली)

(५) हज़रत ख़्वाजा वजीहुद्दीन ख़ुरासानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (तारीख़े विसाल, ११ रजब शरीफ़, ६४५ हिजरी, हेरात)

(६) हज़रत ख़्वाजा बुरहानुद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (तारीख़े विसाल, १४ रजब शरीफ़ ६६४ हिजरी, अजमेर मुअल्ला)

(७) हज़रत अब्दुल्लाह बयाबानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

(८) हज़रत सय्यिदह बीबी हाफ़िज़ह जमाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हा (अजमेर मुक़द्दस)

सवालः हज़रत बीबी हाफ़िज़ह जमाल के शौहर शैख़ रज़ियुद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मज़ार कहां वाक़े है?

जवाबः नागोर शरीफ़ में। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २६४)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के लिबासे मुबारक के बारे में बताइये?

जवाबः आप का लिबासे मुबारक जामए दोताई था यह बख़ियह किया हुवा था जब हज़रत कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी ने आप के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत की और आप ने ख़िलाफ़त से नवाज़ा तो वह दोहर हज़रत कुत्बुल अक़ताब को अता फ़रमाई। बाद अज़ां वही दोहर कुत्बुल अक़ताब ने हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर को और बाबा फ़रीद ने हज़रत शैख़ुल मशाइख़ निज़ामुद्दीन औलिया को और शैख़ुल मशाइख़ ने हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहली को अता फ़रमाई।

जब कोई कपड़ा कहीं से फट जाता तो जिस क़िस्म का भी कपड़ा मयस्सर आता बिला तअम्मुल उस का पैवन्द लगा लेते थे। आप का लिबास अकसर पैवन्ददार होता था। (ऐज़न, सः २८२)

सवालः ख़्वाजए पाक के गुज़र औक़ात के बारे में बताइये?

जवाबः इब्तिदा में आप बाग़ और पन चक्की की आमदनी से गुज़र औक़ात फ़रमाते थे। सफ़र में तीर व कमान और चक़माक़ साथ रखते थे और शिकार से अपनी रोज़ी मुहय्या करते थे। आप की ख़ूराक गोश्त और ख़ुश्क रोटी पानी में तर की हुई होती थी। (ऐज़न)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक की दुन्या से बेनियाज़ी के बारे में बताइये?

जवाबः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्देसह सिर्रुहू के ज़ुहद व क़नाअत और आप की दुनिया से बेनियाज़ी का यह आलम था कि सुल्ताने वक़्त और उमरा व हुक्काम आप के अक़ीदत केश थे मगर आप ने कभी उन के सामने अपनी हाजत का इज़हार नहीं फ़रमाया। न उन से कोई सवाल किया और न ही किसी बादशाह और अमीर के पास किसी दुनियवी ग़र्ज़ के लिये तशरीफ़ ले गए। अगर कभी कोई अक़ीदत मंद व जां निसार कोई नज़्र पेश करता तो उसे अपने ज़ाती मसारिफ़ में न लाते बल्कि ग़रीबों में तक़सीम फ़रमा देते या तब्लीग़ी मिशन में सर्फ़ फ़रमाते। आप हक़ीक़त में मुतवक्किल अलल्लाह थे और अपना सारा मुआमेलह ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम और उस की मर्ज़ी व मन्शा पर छोड़ दिया था। (ऐज़न, सः २६३)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक की फ़य्याज़ी और दरया दिली के बारे में बताइये?

जवाबः सरकार ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु अन्हु की अता व बख़्शिश और फ़य्याज़ी व दरया दिली की यह कैफ़ियत थी कि कभी कोई साइल आप के दर से महरूम न जाता। हज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैहि का बयान है कि मैं एक अर्से तक आप की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर रहा और इस दौरान कभी किसी साइल या फ़क़ीर को आप के दर से ख़ाली हाथ जाते नहीं देखा। आप के लंगर ख़ाने में रोज़ाना इतना खाना तय्यार किया जाता था कि शहर के तमाम गुर्बा व मसाकीन ख़ूब सेर हो कर खाते। ख़ादिम हाज़िरे बारगाह हो कर जब यौमियह ख़र्च का मुतालबह करता तो आप मुसल्ले का एक गोशह उठा कर फ़रमाते "जिस क़दर आज के ख़र्चे के लिये ज़रूरत हो ले लो।" वह मतलूबह मिक़दार में ले लेता और हस्बे मामूल खाना पकवा कर ग़रीबों और मिस्कीनों को तक़सीम कर देता। इस के अलावह सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरबार से दुरवेशों का वज़ीफ़ह भी मुक़र्रर था। आप की दरगाह शरीफ़ में रोज़ानह का लंगर और मुस्तहिक़ीन के लिये वज़ाइफ़ का सिलसिलह अब तक जारी है। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २६४)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक के हालाते सफ़र बयान कीजिये?

जवाबः आप सफ़र में उमूमन एक दुरवेश से ज़्यादह को साथ नहीं रखते थे अकसर गोरिस्तान या ग़ैर आबाद मक़ाम पर क़याम फ़रमाते थे जहां कुछ शोहरत हो जाती थी वहां से फ़ौरन कूच कर जाते थे। (ऐज़न)

सवालः ख़्वाजए हिन्दुसतान हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि का विसाल कब हुवा?

जवाबः सय्यिदी सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्देसह सिर्रुहू की उम्र शरीफ़ और साले विसाल के मुतअलिक़ तज़किरह निगारों में ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। उम्र शरीफ़ किसी ने १०४ बरस, किसी ने १०० बरस और किसी ने ९७ बरस लिखी है। साले विसाल अकसर

तज़किरह निगारों ने ६३३ हिजरी मुताबिक़ १२३५ ई० लिखा है, तारीख़े वफ़ात छः रजब बरोज़ दो शंबह बयान की जाती है। (ऐज़न, सवानेह ग़ौस व ख़्वाजा, स:४२)

सवाल: सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि के जनाज़े की नमाज़ किस ने पढ़ाई?

जवाब: आप के बड़े साहेबज़ादे हज़रत ख़्वाजा फ़ख़ुद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने। (सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स: ११६)

सवाल: सरकार ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की पेशानी पर बवक़्ते जनाज़ह कौन सा जुम्ला पढ़ा गया?

जवाब: هٰذا حَبِيْبُ اللهِ مَاتَ فِيْ حُبِّ اللهِ. यह अल्लाह का दोसत है और अल्लाह की मुहब्बत में दुनिया से जा रहा है।

सवाल: उस बुज़ुर्ग हस्ती का नाम बताइये जिस ने एक प्याला में अना सागर को भर लिया?

जवाब: हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि।

सवाल: अजमेर की गलियों में ज़ाइरीन की रहबरी और भूलों को रास्तह बताने की ख़िदमत कौन बुज़ुर्ग अंजाम देते हैं?

जवाब: हज़रत अब्दुल्लाह बयाबानी रहमतुल्लाहि अलैहि जो शबे जुमअ में बारगाहे ख़्वाजा में हाज़िरी देते हैं।

सवाल: ख़्वाजए पाक की निगाहे विलायत ने किस बड़े जादूगर को इस्लाम लाने पर मजबूर कर दिया था?

जवाब: अब्दुल्लाह बयाबानी को जिन का नाम जोगी जयपाल था।

सवाल: ख़्वाजए पाक ने अपने बाग़ के अंगूर के ख़ोशे से एक बुज़ुर्ग की तवाज़ो की थी क्या आप उन बुज़ुर्ग का नाम बता सकते हैं?

जवाब: मज्ज़ूब हज़रत इब्राहीम कंदूज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि।

सवाल: ख़्वाजए पाक के इल्मी व इरफ़ानी तसानीफ़ के नाम बताओ?

जवाब: (१) अनीसुल अरवाह (२) कश्फ़ुल असरार (३) कंज़ुल असरार (४) रिसालए आफ़ाक़ व अनफ़स (५) रिसालए तसव्वुफ़ मंज़ूम (६) हदीसुल मुआरिफ़ (७) रिसालए वुजूदियह (८) रिसालए दर कसबे नफ़्स

(९) दीवाने मुईन। यह दीवान आप के बुलन्द पायह शेअर व सुख़न का गिरां क़दर नमूनह है। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २६७- ३००)

सवालः उन दोनों सरग़नह देवों के नाम बताइये जिन्हों ने इस्लाम क़ुबूल किया?

जवाबः शादी और अजय पाल (जोगी जयपाल)

सवालः डॉक्टर राजिन्द्र प्रशाद सद्रे जम्हूरियह भारत के आस्तानए ख़्वाजा पर हाज़िरी की तारीख़ बताइये?

जवाबः १३ फ़रवरी १६५१ ई० में।

सवालः आंजहानी पंडित जवाहर लाल नहरू ने ख़्वाजए पाक की बारगाह में कब हाज़िरी दी?

जवाबः १६४५ ई० में, दूसरी मर्तबह फ़सादाते अजमेर के ज़माना में १६४७ ई० में आस्ताना पर हाज़िर हुए।

झुकते हैं शाहों के सर ख़्वाजा की वह सरकार है
हैं मलक दरबां वह शाहे चिश्त का दरबार है

(अज़ः महाराजा सर किशन प्रशाद सद्रे आज़म दौलते आसिफ़या हैदराबाद, दक्कन)

सवालः दरबारे ख़्वाजा में लार्ड कर्ज़न की हाज़िरी कब हुई?

जवाबः सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल सरकार ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरे अक़दस पर हिन्दुस्तान का वाइसराए लार्ड कर्ज़न १६०२ ई० में हाज़िर हुवा।

नोटः लार्ड कर्ज़न लिखता है कि मैं ने हिन्दुस्तान में एक क़ब्र को हुकूमत करते देखा है। (यानी ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि) (मुईनुल अरवाह, सः २४४)

सवालः शहज़ादी जहांआरा बेगम के दरबारे ख़्वाजा में हाज़िरी का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः अपने वालिदे बुज़ुर्गवार शाहजहां के हमराह आगरा से अजमेर शरीफ़ पहुंच कर ज़मीन बोस हुईं, क़याम के दौरान अदब की वजह से कभी पलंग पर नहीं सोई और न रौज़ए अक़दस की तरफ़ कभी पावं और पुश्त किया, मर्क़दे अनवर की ख़ाक व ख़ुश्बू को सुर्मए चश्म बनाया,

इस से दिल पर जो ज़ौक़ व शौक़ की कैफ़ियत तारी हुई वह तहरीर में नहीं आ सकती, ग़ायते शौक़ के आलम में सरासीमह हो गई। कुछ समझ में नहीं आ रहा था खुद को क्या करूं और क्या कहूं। अल क़िस्सह मैं ने क़ब्र शरीफ़ पर इत्र अपने हाथों से मला और फूलों की चादर जो अपने सर पर रख कर लाई थी, मज़ार शरीफ़ पर पेश किया। बाद अज़ां संगे मरमर की मस्जिद में नमाज़ अदा की यह मस्जिद शाहजहानी मस्जिद है दो लोख चालीस हज़ार रुपयह सर्फ़ करके वालिदे बुज़ुर्गवार शाहजहां ने तामीर करवाई है मग़रिब तक वहां हाज़िर रहीं और आंहुज़ूर के यहां शमा रोशन करके झालरह शरीफ़ के पानी से रोज़ह इफ़्तार किया। (मूनिसुल अरवाह, बहवाला सवानेह ग़ौस व ख़्वाजा, सः ६५)

सवालः उस जांनिसार ख़ादिम का नाम बताइये जिसे ख़्वाजा साहेब ने एक प्याला देकर अना सागर का पानी लाने का हुक्म दिया था?

जवाबः नौ मुस्लिम सअदी (राम देव) शादी देव भी कहते हैं।

सवालः बर्रे सग़ीर में इस्लाम की दिलकश बहारें किस बुज़ुर्ग हस्ती की दावत व तब्लीग़ और रुश्द व हिदायत का नतीजह हैं?

जवाबः सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैहि की।

आप के न आने तक हिन्द में अंधेरा था
रौशनी घर घर फैली आप ही के आने से

नोटः कुफ़्रिस्ताने हिन्द में इस्लाम का चराग़ अगर्चे आप की आमद से क़ब्ल ही जल चुका था मगर आप के गुलशने हिदायत की वह हवा चली कि बिसाते हिन्द में नूरे इस्लाम का चराग़ां ही चराग़ां हो गया।

सवालः हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने मुर्शिद के हुक्म से बग़दाद में अक़वाल जमा फ़रमाए थे जो हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि के मल्फ़ूज़ात का मजमूअह है। उस का नाम बताइये?

जवाबः अनीसुल अरवाह।

सवालः सरकार ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि की एक किताब फ़ारसी ज़बान में तसव्वुफ़ के मौज़ू पर है उस का नाम बताइये?

जवाबः "कश्फुल असरार" इस का दूसरा नाम "मेराजुल अनवार" है।

सवालः बाज़ तज़किरह निगारों की रिवायत के मुताबिक़ सरकार ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने मुर्शिद के हुक्म से सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश की तालीम व तलक़ीन के लिये एक किताब लिखी। उस का नाम क्या है?

जवाबः "कंज़ुल असरार" (६११ हिजरी और ६१५ हिजरी के दरमियान) इस को गंजुल असरार के नाम से भी मौसूम किया जाता है।

सवालः "पिथौरा रा ज़िन्दह मुसलमानान दारेम" यानी मैं ने पिथौरा को ज़िन्दह मुसलमानों के हवाले किया यह पेशिन गोई किस बुज़ुर्ग हस्ती ने की थी?

जवाबः हज़रत ख़्वाजा अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने। (सीरुल अक़ताब, सः १३२)

नोटः यह पेशिन गोई सहीह साबित हुई। शहाबुद्दीन ग़ौरी ने पिथौरा के ख़िलाफ़ ५८८ हिजरी में जंग की तो वह मुसलमानों के लशकर के हाथों गिरफ़्तार होकर मारा गया। हज़रत ख़्वाजा के फ़ुयूज़ व बरकात से हिन्दुस्तान इस्लाम के नूर से मुनव्वर हो गया इसी लिये आप का लक़ब वारिसुन नबी फ़िल हिन्द है।

तुम क़हेर से देखो! तो शादाबे चमन जल जाए
और मुस्कुरा दो! तो अंधेरे में उजाला हो जाए

सवालः प्रिथवी राज का ज़वाल किस तरह हुवा?

जवाबः शादी देव और अजय पाल जोगी के मुसलमान हो जाने और सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ास मुरीदों में शामिल हो जाने से प्रिथवी राज को बड़ा झटका लगा और उस के दिल पर बहुत शाक़ गुज़रा। इन वाक़िआत के बाद वह इन्तिहाई ग़म व गुस्सह और ग़ैज़ व ग़ज़ब के आलम में पेच व ताब खाने लगा क्यों न होता कि उसका मायह नाज़ और शोहरत याफ़्तह जादूगर अजय पाल भी हज़रत

ख़्वाजा की रूहानियत व करामत से मग़लूब व शिकस्त खुर्दह होकर उस के हाथों से जाता रहा। गोया उस के तर्कश का हर तीर बल्कि आख़िरी तीर भी अपने निशाने से ख़ता कर गया। अब उस को चारों तरफ मायूसियों का अंधेरा दिखाई देने लगा और इधर यह हाल था कि अजमेर के बाशिंदों में इस्लाम निहायत तेज़ी से फैलने लगा जिस के सबब सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का हल्क़ए असर भी बढ़ने लगा। ज़ाहिर है कि इस सूरते हाल से राजा प्रिथवी राज प्रेशान हो गया और हुकूमत व सल्तनत और ताज व तख़्त के बावुजूद वह अपने आप को बेबस, लाचार और आजिज़ व दरमांदह महसूस करने लगा। इस मोड़ पर होना तो यह चाहिये था कि वह भी सरकार ख़्वाजा की बारगाह में अदब व एहतेराम से हाज़िर हो कर हल्क़ह बगोशे इस्लाम हो जाता और ईमान की दौलत से माला माल हो कर दीन व दुनिया की इज़्ज़त व सरबुलन्दी और कामयाबी व कामरानी हासिल कर लेता। इस सूरत में उस का राज पाट भी महफ़ूज़ व सलामत रह जाता और उस की आख़िरत भी बन जाती मगर बदनसीबी के नतीजे में दुनियवी चंद रोज़ा जाह व हशम ने उस को मग़रूर व मुतकब्बिर बना दिया था और वह इक़्तिदार के नशह में सोचने समझने की सलाहियतें भी खो बैठा था। उस ने बार बार इरादह किया कि वह सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को अजमेर की सरज़मीन से बाहर कर दे लेकिन दूर अंदेश मां की नसीहतें हर मर्तबह उस के अज़्म व इरादह की तकमील में रुकावट पैदा करती रहीं। बिल आख़िर एक रोज़ उस के सब्र व ज़ब्त का पैमानह लबरेज़ हो कर छलक ही पड़ा।

हुवा यूं कि प्रिथवी राज एक दिन किलअ की बुर्जियों पर खड़ा था, उस ने वहीं से सरकार ख़्वाजा की क़यामगाह की तरफ देखा। वहां उस वक़्त सरकार ख़्वाजा के अक़ीदत मंदों का एक हुजूम व इज़्दिहाम था। वह इस मंज़र की ताब न ला सका कि मेरी हुकूमत में मुसलमानों का इस क़दर असर व इक़्तिदार और इस दर्जा

मकबूलियत। उस ने अपनी मां की नसीहतें और पेशिन गोइयां भी बिल्कुल फरामोश कर दीं और पक्का इरादह कर लिया कि इन दुरवेशों को कुव्वत व ताकत इस्तेमाल करके अजमेर से निकाल दिया जाएगा। जुनून में उस ने सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और आप के खुद्दाम व मुरीदीन की शान में नाज़ेबा और ग़ैर मुनासिब जुम्ले मुंह से निकाले और अपने एक सरदार के ज़रीअह सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पास हुक्म भेजा कि अपने तमाम साथियों के साथ अजमेर से फ़ौरन निकल जाएं। जब राजा का यह गुस्ताख़ानह हुक्म और ज़ालिमानह पैग़ाम सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सुना तो आप को जलाल आ गया और इसी आलम में फ़रमायाः "پتھورارازندہ گرفتیم وداديم"
पिथौरा को हम ने ज़िन्दह गिरफ़्तार कर लिया और दे दिया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २३७-२३९)

सवालः ख़्वाजए पाक ने शहाबुद्दीन ग़ौरी को क्या बशारत दी?

जवाबः हिन्दुस्तान में शिकस्त पर शिकस्त खाकर सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ग़ज़नी पहुंच कर अपनी हार व नाकामी का दाग़ मिटाने के लिये मज़बूत इरादह और बलन्द हौसेलह के साथ फिर जंगी तय्यारियों में मसरूफ़ हो गया और हिन्दुस्तान पर हम्ला करने के लिये एक बड़ी फ़ौज को जमा करने में लग गया और सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने एक लाख बीस हज़ार सिपाहियों का अज़ीम लशकर जमा कर लिया मगर हिन्दी राजाओं से मुक़ाबेला के लिये फ़ौज बहुत कम थी। एक रात की बात है कि शहाबुद्दीन ग़ौरी ने ख़्वाब में एक नूरानी सूरत बुज़ुर्ग को देखा और वह बुज़ुर्ग फ़रमा रहे हैं: ऐ शहाबुद्दीन! अल्लाह तआला तुम को मुल्के हिन्द की बादशाहत अता करने वाला है, तुम हिन्द की तरफ़ तवज्जोह करो। शहाबुद्दीन ग़ौरी ख़्वाब में इस बशारत को सुन्ने के बाद बड़ा खुश हुवा कि किसी अल्लाह वाले ने मेरी कामयाबी के लिये बशारत दे दी है और उस को यक़ीने कामिल हुवा कि अब मैं हिन्दुस्तान पर जंग करके कामयाब व कामरान हो जाऊंगा। (सीरुल अक़ताब, सः १३२, मुईनुल अरवाह, सः ६७ बहवाला अनवारुल बयान)

सवाल: ख़्वाजए पाक की बारगाह में शहाबुद्दीन ग़ौरी की हाज़िरी का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाब: शहाबुद्दीन ग़ौरी ने मुसलसल कामयाबी हासिल करते हुए सरसवती, पांसी, समाना, कुहराम के क़िलों को फ़तेह करते हुए पूरे मुल्क हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ह कर लिया और मदीनतुल हिन्द अजमेर शरीफ़ पहुंचा। जिस वक़्त सुल्तान शहाबुद्दीन अजमेर शरीफ के पहाड़ी इलाके में दाख़िल हुवा तो शाम हो चुकी थी। मग़रिब का वक़्त था कि एक पहाड़ की जानिब से अज़ान की सदाए दिल नवाज़ सुनी तो हैरत में पड़ गया और मालूम किया कि अज़ान की यह आवाज़ कहां से आ रही है? लोगों ने बताया कि एक फ़कीर कुछ दिनों से यहां तशरीफ़ लाए हैं, यह आवाज़ वहीं से आ रही है। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी उस पहाड़ की जानिब चल पड़ा जिधर से आवाज़ आ रही थी। पहाड़ी पर पहुंचकर देखा कि अल्लाह वालों की एक जमाअत अल्लाह तआला की बारगाह में सफ़ बनाए हुए नमाज़ अदा कर रही है।

शहाबुद्दीन ग़ौरी भी जमाअत में शामिल हो गए। ख़्वाजए पाक नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब नमाज़ ख़त्म हुई तो शहाबुद्दीन ग़ौरी की निगाह सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ पर पड़ी तो ख़्वाजए पाक को देख कर हैरत में डूब गया और बड़ा खुश हुवा कि यह तो वही बुज़ुर्ग हैं जिन्हों ने मुझे हिन्दुस्तान बुलाया और फ़तेह व कामयाबी की बशारत दी थी। शहाबुद्दीन ग़ौरी अपने जज़्बात को क़ाबू में न रख सका और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़दमों में गिर पड़ा और ख़ूब रोता रहा और शाही ताज और शाही लिबास और अपनी तलवार को ख़्वाजए पाक के क़दमों में डाल कर अर्ज़ किया कि मुल्क हिन्दुस्तान में सहीह मानों में हिन्द के राजा शहाबुद्दीन ग़ौरी नहीं, हिन्द के राजा ख़्वाजा मुईनुद्दीन हैं। फिर शहाबुद्दीन ग़ौरी ख़्वाजए पाक के मुरीद हो गए।

(अहले सुन्नत की आवाज़ २००८ ई०, स: ५१, ३४०)

सवाल: हिन्दुस्तान में मुस्लिम इक़्तिदार के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाब: अजमेर शरीफ़ से सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ग़ज़नी वापस चला गया

और यहां के लिये क़ुत्बुद्दीन ऐबक को अपना नायब मुक़र्रर कर दिया। यह बहुत ही बहादुर और आली हिम्मत था, उस ने अपनी सलाहियतों के ज़रीअह फ़ुतूहात का सिलसिलह जारी रख्खा और थोड़ी सी मुद्दत में गुजरात, ग्वालयार और बयानह वग़ैरह के इलाक़ों में अपनी शानदार फ़तेह का प्रचम लहरा दिया। इसी तरह बख़्तियार ख़िल्जी ने बिहार, बंगाल और आसाम के सूबे फ़तेह करके वहां सुल्तान का इक़्तिदार क़ायम कर दिया।

दो साल गुज़रने के बाद राजा जयचंद ने अपने पर पुर्ज़े निकालने शुरू कर दिये और दीगर कई एक राजाओं को अपने साथ मुत्तहिद करके सुल्तान के मुक़ाबले में सफ आरा हुवा। क़ुत्बुद्दीन ऐबक ने सुल्तान के पास जयचंद की सरकशी की ख़बर भिजवाई वह इस इत्तिला पर फ़ौरन निहायत तेज़ी के साथ हिन्दुस्तान के लिये रवानह हो गया और यहां पहुंच कर एक ही पल्ले में राजा जयचंद और उस के हम नवाओं और शरीके जंग राजाओं के नापाक मन्सूबों को ज़ेर व ज़बर करके ख़ाक में मिला दिया, इस जंग में जयचंद मारा गया। इस फ़तेह व कामरानी से हिन्दुस्तान में मुस्लिम इक़्तिदार की बुन्यादें बहुत मज़बूत और मुस्तहकम हो गईं। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी के क़ायम मक़ाम ने पहले कुहराम फिर देहली को अपना दारुल हुकूमत बना लिया। सुल्तान के जाने के बाद उसके चचा ने जो तरावड़ी की जंग हारने के बाद कहीं छुप गया था अजमेर पर हम्लह करके अपने भतीजे को निकाल कर सल्तनत पर क़ाबिज़ हो गया। जब ऐबक को इस वाक़िअह की ख़बर मिली तो उस ने फ़ौरन अजमेर का रुख़ कर लिया और एक मुख़्तसर सी जंग के बाद अजमेर को दोबारह फ़तेह कर लिया। अब उस ने मीर ख़ंग सवार को अजमेर का हाकिम व फ़रमांरवा बना दिया। मीर ख़ंग सवार सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हल्क़ए इरादत में शामिल हो गए और इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअत में सरकार ख़्वाजा के शरीक व मुआविन हो गए। (ऐज़न, सः २४६, २४७)

सवालः हिन्दुस्तान में हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी की तशरीफ़ आवरी के

तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः मोतबर रिवायात के मुताबिक ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हिन्दुस्तान की सरज़मीन को अपने क़ुदूमे मैमनते लज़ूम के शर्फ़ से मुशर्फ़ फ़रमाया है। अगर्चे बाज़ मुअर्रिख़ीन ने इस पर इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर किया है। साहेबे "इक़्तिबासुल अनवार" ने हज़रत हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि के हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाने से इन्कार किया है। बाज़ तारीख़ें इस मुआमेले में बिल्कुल ख़ामोश हैं मगर "सौलते अफ़ग़ानी" में तहरीर है किः हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी शहर देहली तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त सुल्तान शम्सुद्दीन बादशाह देहली का था। ख़बर तशरीफ़ आवरी ख़्वाजा साहेब (ख़्वाजा उस्मान) सुन कर (बादशाह) बाहर आए और ब इख़लास व एतिक़ादे तमाम मुलाज़ेमत के साथ, एज़ाज़ व इकरामे तमाम के शहर में लाए।

नीज़ "फ़रिश्तह" ने जिल्द दोम में बहवालह तारीख़े हाजी (मुहम्मद) क़ंधारी लिखा है किः ख़्वाजा मुईनुद्दीन के पीर यानी ख़्वाजा उस्मान हारूनी क़ुद्देसह सिर्रुहू शम्सुद्दीन अल्तमश के दौर में देहली तशरीफ़ लाए जो आंहज़रत (ख़्वाजा उस्मान) का मुरीद था। आप की ताज़ीम व तकरीम में कोई दक़ीक़ह फ़रोगुज़ाश्त नहीं किया और उस ज़माने में ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेर में मुतवत्तिन थे। इस सूरत में मालूम न हुवा कि हिन्दुस्तान में फिर उन से मुलाक़ात हुई या नहीं। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः २५१-२५२)

सवालः दौराने सफ़र ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि ने कितने मुश्रिकों को मुसलमान किया?

जवाबः सात सौ मुश्रिकों को। (हवाला सीरुल औलिया, सः ५७)

सवालः ख़्वाजए पाक की करामत से हाथी पत्थर हो गया वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि जब अजमेर तशरीफ़ लाए तो राजा प्रिथवी राज आप का जानी दुशमन हो गया। उस ने और

उस के साथियों ने एक मर्तबह एक पागल हाथी को आप की तरफ़ दौड़ाया ताकि हाथी आप को हलाक कर दे। मस्त हाथी दौड़ता हुवा जैसे ही आप के क़रीब आया तो आप ने ज़मीन से एक मुश्त ख़ाक उठा कर उस पागल हाथी की तरफ़ फेंकी तो अल्लाह तआला की कुद्रत से वह हाथी पत्थर हो गया। (सीरते ख़्वाजा, सः ३०७)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि अलैहि का आस्ताना बीमारों के लिये शिफ़ा ख़ाना है वाक़िअह की रोशनी में बयान कीजिये?

जवाबः आशिक़े मदीना इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे नूर से बहुत कुछ फ़ुयूज़ व बरकात हासिल होते हैं, मौलाना बरकात अहमद मरहूम जो मेरे पीर भाई हैं और मेरे वालिदे माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि के शागिर्द थे। उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक हिन्दू के सर से पैर तक फोड़े थे। अल्लाह ही जानता है कि किस क़दर थे। ठीक दो पहर को वह बीमार शख़्स आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पत्थरों पर लोटता और कहता ख़्वाजा अगण लगी है। तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि वह बीमार शख़्स बिल्कुल अच्छा हो गया। (अल मल्फ़ूज़, जिः ३, सः ४७)

सवालः हफ़्त हमीद के तअल्लुक़ से बयान कीजिये?

जवाबः जिस ज़माने में सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ोद्दिसह सिर्रुहू देहली में कयाम पज़ीर थे, उसी दौरान एक दिन आप का गुज़र एक बुत ख़ाने के क़रीब से हुवा, जहां सात अशख़ास बुतों की परस्तिश कर रहे थे। अचानक उन की निगाहें सरकार ग़रीब नवाज़ के पुर नूर चहरे पर पड़ीं और वह बेतहाशा आप के क़दमों पर आकर गिर पड़े। ख़ुदा जाने उन्हों ने आप की कौन सी रूहानी कुव्वत का मुशाहिदह कर लिया या आप के चहरए पाक में जज़्ब व कशिश वाला कोई जल्वह देख लिया कि उसी वक़्त उन सातों लोगों ने कलिमए शहादत पढ़ कर हज़रत ख़्वाजा के हाथों इस्लाम कुबूल कर लिया। आप ने उन सातों

का इस्लामी नाम "हमीदुद्दीन" रख्खा। हुवा यूं कि जब हज़रत ख़्वाजा ने उन में से सब से बड़े का नाम हमीदुद्दीन रख कर दूसरे का नाम रखना चाहा तो उन सब ने बयक ज़बान इल्तिजा की कि जिस तरह हालते कुफ़्र में हम सब एक साथ रहे और अब एक साथ ही मुसलमान भी हुए तो हम सब चाहते हैं कि हमारा नाम भी एक ही हो। चुनान्चे यह सातों एक ही नाम से मौसूम हो गएं अल्बत्ता पहचान के लिए उन के नामों के साथ अलग अलग अलामती अल्फ़ाज़ जोड़ दिये गए, जो इस तरह हैं। (१) खुवी हमीदुद्दीन (२) कासह बरदार हमीदुद्दीन (३) असा बरदार हमीदुद्दीन (४) मश्रिक़ी हमीदुद्दीन (५) मग़रिबी हमीदुद्दीन (६) हमीदुद्दीन ख़ासह (७) हमीदुद्दीन देहलवी।

बताया जाता है कि उन सातों के मज़ारात नागोर शरीफ़ में हैं और वहां उन्हीं नामों से मशहूर हैं लोग उन के आस्ताने से फैज़याब होते हैं। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः ३४७-३४८)

सवालः हमारे ख़्वाजा की हुकूमत बद अक़ीदह पर है, किस तरह?

जवाबः आक़ाए निमत मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं। भागलपूर से एक साहेब हर साल अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुवा करते थे, एक वहाबी रईस से मुलाक़ात थी। उस बद अक़ीदह शख़्स ने कहाः मियां हर साल कहां जाया करते हो, बेकार इतना रुपया सर्फ़ करते हो। उन्हों ने कहा चलो! और तुम खुद इन्साफ़ की आंखों से देखो, फिर तुम को इख़्तियार है। ख़ैर एक साल वह बद अक़ीदह शख़्स उन के साथ अजमेर शरीफ़ आया। देखा कि एक फ़क़ीर सोंटा लिये रौज़ा शरीफ़ का तवाफ़ कर रहा है और यह सदा लगा रहा हैः ख़्वाजा पांच रुपये लूंगा और एक घण्टा के अन्दर लूंगा और एक ही शख़्स से लूंगा। जब उस वहाबी को ख़्याल हुवा कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया एक घण्टा हो गया होगा और अब तक उसे किसी ने कुछ न दिया। जेब से उस बद अक़ीदह शख़्स ने पांच रुपये निकाल कर उस के हाथ में रख्खे और कहा, लो। मियां तुम ख़्वाजा से मांग रहे थे। भला ख़्वाजा

क्या देंगे। लो हम देते हैं। फ़कीर ने वह रुपयह तो जेब में रख्खे और एक चक्कर लगा कर ज़ोर से कहाः ख़्वाजा! तोरी बलिहारी जाऊं दिलवाए भी तो कैसे ख़बीस मुन्किर से। (अल मल्फ़ूज़, जिः ३, सः ४७)

सवालः ख़्वाजए पाक ने औरंगज़ेब आलमगीर के सलाम का जवाब किस तरह दिया?

जवाबः मशहूर वाक़िअह है कि हिन्दुस्तान के बादशाह हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु अन्हु मज़ारात पर हाज़िर होते और सलाम करते, अगर मज़ार से सलाम का जवाब आ जाता तो ठीक वरना मज़ार को तोड़ कर ज़मीन के बराबर कर देते। इसी मक़सद व इरादे से हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु अन्हु अजमेर शरीफ़ अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़ारे अक़दस पर हाज़िर हुए और बआवाज़े बलन्द सलाम पेश किया। हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो मर्तबह सलाम पेश किया तो बारगाहे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु अन्हु से जवाब नहीं मिला मगर जब तीसरी मर्तबह सलाम पेश किया तो क़ब्रे अनवर व अक़दस से जवाब आया व अलैकुमुस्सलाम या हुज्जतुल इस्लाम। (मुईनुल अरवाह, सः३१६)

सवालः ख़्वाजए पाक का हाथ क़ब्र से बाहर आया और मुसाफ़ह किया?

जवाबः हज़रत मौलाना जलालुद्दीन बुख़ारी मख़दूम जहानियां जहां गश्त रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपने सफ़र नामा में सरकार ख़्वाजए पाक के आस्तानए पाक की हाज़िरी के तज़किरह में लिखा है कि अजमेर शरीफ़ की सरज़मीन में सिलसिलए चिश्तियह के सरकर्दह हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आसूदए ख़ाक हैं। आप की क़ब्र शरीफ़ के पाई अनार का एक दरख़्त था। जिस की यह ख़ासियत थी कि जो शख़्स सात अनार खा लेता वह वली हो जाता और जिस ने औलाद की आरज़ू के साथ खाया हक़ तआला ने उस को फ़र्ज़ंद अता किया। हिन्दुस्तान में आप ही के क़दम से इस्लाम आया। फ़कीर जब आप के मज़ार पर हाज़िर हुवा तो अर्ज़ किया अस्सलामु अलैकुम या ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती! या ख़्वाजा

अपना दस्ते मुबारक दीजिये, दस्त बोसी करूं। उसी वक़्त मज़ारे मुबारक से हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना नूरानी हाथ बाहर कर दिया और सलाम का जवाब भी दिया। मैं ने अपने ख़्वाजह के हाथ में हाथ देकर मुसाफ़ह किया और आप के दस्ते नूरानी को चूमा और बोसह दिया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः ३१७)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक का मस्लक क्या था?

जवाबः मज़हबे हनफ़ी की तक़्लीद की निमत अपने शैख़ ख़्वाजा उस्मान हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वास्ते से मिली थी वह खुद सय्यिदुना इमामे आज़म के मुक़ल्लिद और हनफ़ी थे इस के कसीर शवाहिद हैं। (अहले सुन्नत की आवाज़ २००८ ई०, सः १५०)

सवालः बारगाहे ख़्वाजा में हज़रत औरंगज़ेब और एक नाबीना का वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः एक मर्तबह हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में हाज़िर हुए तो देखा कि एक अंधा फ़क़ीर दरवाज़े पर खड़ा है और भीक मांग रहा है और इस से पहले भी उस अंधे फ़क़ीर को बारगाहे ख़्वाजा में भीक मांगते हुए देख चुके थे।

हज़रत आलमगीर रहमतुल्लाहि अलैहि ने उस अंधे फ़क़ीर के बाज़ू को पकड़ा और इरशाद फ़रमाया कि तुम कितने साल से इस बारगाह में हाज़िर हो? उस फ़क़ीर ने जवाब दियाः दो तीन साल हो गए हैं। हज़रत आलमगीर रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया बारगाहे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में तुम्हारी हाज़िरी का मक़सद क्या है? उस अंधे फ़क़ीर ने जवाब दियाः अंधा हूं, ख़्वाजा की बारगाह में आंख लेने आया हूं। यह सुन कर बादशाह आलमगीर ने पुर जलाल आवाज़ में फ़रमाया कि फिर तुम को आंख क्यों नहीं नसीब हुई, तुम अभी तक अंधे क्यों हो?

ऐ अंधे फ़क़ीर कान खोल कर सुन ले, मैं हिन्दुस्तान का बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर हूं। ख़्वाजा की क़ब्र शरीफ़ पर फ़ातिहा पढ़ने

मज़ार शरीफ़ के अन्दर जा रहा हूं और फ़ातिहा पढ़ कर वापस आऊं तो तेरी आंख नज़र आनी चाहिये और अगर तू अंधा ही रहा तो मैं तुझे इस तलवार से क़त्ल कर दूंगा। हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मज़ारे अनवर व अक़दस के अन्दर तशरीफ़ ले गए।

इधर यह अंधा फ़क़ीर जान जाने के ख़ौफ़ से बिलक बिलक कर रोता हुवा फ़रयाद करने लगाः ऐ ख़्वाजा! अभी तक तो आंख ही नहीं थी, अब तो जान भी चली जाएगी। करम कर दो! करम कर दो! आंख का अंधापन दूर करके आंख वाला बना दो; ग़रीब फ़क़ीर का रोना बिलकना उन को कब गवारा है, अल्लाह तआला की कुद्रत से और हमारे प्यारे ख़्वाजा की निगाहे करम से वह फ़क़ीर आंख वाला हो गया। हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़ातिहा पढ़ कर और दुआ मांग कर जब बाहर तशरीफ़ लाए तो क्या देखा कि वह अंधा फ़क़ीर, अब अंधा न था बल्कि आंख वाला हो चुका था।

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस फ़क़ीर से फ़रमाया कि अगर तुम को आंख नसीब न हुई होती और तू अंधा ही रहता तो भी मैं तुम को क़त्ल नहीं करता और जो मैं ने तुम को क़त्ल करने के लिये कहा था वह सिर्फ़ इस बात को मालूम करने के लिये था कि तुम ने अताए रसूल ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से खुलूस व मुहब्बत से तड़प कर मांगा था या नहीं। पहली बार रोते हुए भीगी पल्कों के साथ फ़रयाद की और आंख अता हो गई।

सवालः शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी दरबारे ख़्वाजा में हाज़िरी का वाक़िअह अपनी किताब में किस तरह तहरीर फ़रमाते हैं?

जवाबः मैं अजमेर मुक़द्दस में अताए रसूल सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रौज़ए अक़दस पर हाज़िर हुवा और बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में अर्ज़

किया कि ऐ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैं अपना तमाम इल्म आप की चौखट के बाहर छोड़ आया हूं, यह दामन ख़ाली है, आप जो चाहें अता फ़रमा दें। (शरहे सफ़रुस सआदत)

सवालः हज़रत वारिसे पाक के दरबारे ख़्वाजा में हाज़िरी के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः मशहूर व मारूफ़ मज्जूब बुज़ुर्ग हज़रत हाजी वारिस अली शाह वारिसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु देवा शरीफ़ वाले। मशहूर है कि जब आप ने अजमेर मुक़द्दस ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की चौखट पर हाज़िरी दी तो जूता (चप्पल) पहेनना छोड़ दिया और फिर ताहयात कभी भी न पहना। (मुईनुल अरवाह, सः २२७)

सवालः ग़रीब नवाज़ के दरबार में आला हज़रत की हाज़िरी के तअल्लुक़ से सय्यिद हुसैन अली साहेब अपनी किताब में क्या तहरीर फ़रमाते हैं?

जवाबः मेरे पीर व मुर्शिद मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहेब कुद्देसह सिर्रुहुल अज़ीज़ भी दो बार, दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िर हुए। (दरबारे चिश्त, अहले सुन्नत की आवाज़, २००८ ई०, सः ५६६)

सवालः सरकार आला हज़रत के तअल्लुक़ से एतेराज़ मअ जवाब बयान कीजिये?

जवाबः आज के बाज़ मुतअस्सिब चिश्ती आम क़ादिरियों और बिलखुसूस इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत सय्यिदुना शाह अहमद रज़ा क़ादिरी बरकाती फ़ाज़िले बरेलवी कुद्देसह सिर्रुहू पर तअन व तशनीअ की ज़बान दराज़ करते हैं और यह लायानी एतेराज़ करते हैं कि "क़ादिरी लोग ग़ौसे आज़म और आला हज़रत की ही तारीफ़ व तौसीफ़ करते हैं, किसी और को ख़ास तौर पर सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को कुछ नहीं समझते, न उनका तज़किरह करते हैं। बाज़ लोग यहां तक कहते हैं कि ख़ुद आला हज़रत ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अपनी अक़ीदत व मुहब्बत का इज़हार नहीं किया है न तो कभी अजमेर शरीफ़ में हाज़िरी दी है और न ही पूरी "हदाइके

बख़्शिश" में कहीं एक शेअर भी ख़्वाजए ख़्वाजगान की मदह व सना में मौजूद है तो उन के मोतक़िदीन अगर उन्हीं के नक़्शे क़दम पर चल कर ऐसा करते हैं तो इस में क्या तअज्जुब है। इस क़िस्म की बातें करने वाले यक़ीनन या तो असबियत व हसद का शिकार हैं या ज़हन व फ़िक्र की वुस्अत और शऊर व आगही की बेश बहा दौलत से महरूम हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा तो उस अज़ीम ज़ात व शख़्सियत का नाम है जिस ने हिन्दुस्तान में सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के लाए हुए मिशन को सकरात व नज़अ के आलम से निकाल कर सेहत व तवानाई की दौलत से नवाज़ा है। यह आला हज़रत ही का एहसान व करम है कि आज हिन्द व बैरूने हिन्द औलियाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन के आस्ताने, ख़ानक़ाहें और मज़ारात न सिर्फ़ सहीह व सलामत हैं बल्कि रौशन व ताबनाक और उन के मुतअल्लिक़ीन शाद व आबाद हैं। "सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़" में आप को इस बात का सुबूत मिलेगा कि आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी ने अपनी बेपनाह इल्मी व दीनी मसरूफ़ियात के बावुजूद सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की आस्तां बोसी के लिये दो बार अजमेर शरीफ़ में हाज़िरी दी है। वहां आज भी मौजूद ख़ानक़ाहे रज़वियह इस बात की शहादत के लिये काफ़ी है। उस ख़ानक़ाह के बानी और आस्तानए ग़रीब नवाज़ के ख़ादिम सय्यिद हुसैन अली साहब जावरा आला हज़रत के मुरीद व ख़लीफ़ह थे, आप के साहबज़ादे मोलवी सय्यिद अहमद अली साहब रज़वी हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द अलैहिर्रहमह के ख़लीफ़ह थे तमाम अकाबिर उलमाए अहले सुन्नत का क़याम ज़्यादह तर आप ही के मेहमान ख़ाने में हुवा करता था।

अब रही यह बात कि आला हज़रत ने सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की शान में कोई मन्क़बत नहीं कही तो इस से यह नतीजह निकालना कि आला हज़रत को सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अक़ीदत नहीं थी, यह भी वुस्अते क़ल्बी के फ़ुक़दान को ज़ाहिर करता है। अगर इसे बुन्याद बना लिया जाए कि जिन की शान में क़सीदह या मन्क़बत

के अशआर नहीं कहे गए उन सब से आला हज़रत को अक़ीदत नहीं थी तो पूरी "हदाइक़े बख़्शिश" का मुतालिआ कर लीजिये, आप को पता चल जाएगा कि इस में कितने हज़रात की शान में मदहियह अशआर हैं। अल्लाह तआला की बारगाह में हम्द व मुनाजात और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नअतें इश्क़ व मुहब्बत में डूब कर कही गई हैं और चूंकि आप सिलसिलए क़ादिरियह में बैअत थे इस लिये हुज़ूर ग़ौसे आज़म की अक़ीदत व मुहब्बत में ऐसे मुस्तग़रक़ हुए कि किसी और की शान में कुछ कहने और लिखने का यारा ही न रहा। हां ज़रा इस से बाहर आइये तो अपने पीर व मुर्शिद सय्यिदुना शाह आले रसूल अहमदी क़ादिरी बरकाती मारहरवी, मुर्शिदे तर्बियत हज़रत सय्यिदुना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी क़ादिरी बरकाती मारहरवी और उस बारगाह तक पहुंचाने वाले मुहसिन हज़रत ताजुल फ़हूल अल्लामह अब्दुल क़ादिर बदायूनी अलैहिमुर रहमतु वर्रिज़वान की शान में कुछ मन्क़बतें कहीं गोया आला हज़रत को इन चंद हज़रात के अलावह इस्लाम की जितनी अज़ीम शख़्सियतें हैं जिन में अंबियाए किराम, सहाबह, ताबईन, शुहदा, अइम्मए मुज्तहिदीन, मुहद्दिसीन और बेशुमार अकाबिर औलियाए किराम शामिल हैं, किसी से अक़ीदत व मुहब्बत नहीं थी। बात यह नहीं है बल्कि सय्यिदुना आला हज़रत सय्यिदुना ग़ौसे आज़म और अपने मुर्शिदाने इज़ाम के तसव्वुर में ऐसे गुम हुए कि किसी और की तरफ़ देखने और तवज्जोह देने की फ़ुर्सत ही नहीं मिली। इस के लिये आप ने अपने ब्रादरे अज़ीज़ उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामह हसन रज़ा ख़ां बरेलवी कुद्दिस सिर्रुहु को तय्यार कर दिया और कहा ऐ हसन! मैं तो इश्क़े रसूल और मुहब्बते ग़ौसे आज़म में ऐसा महव व मुस्तग़रक़ हूं कि किसी और की तरफ़ देखने की मुझे फ़ुर्सत ही नहीं है। सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजए ख़्वाजगान की बारगाह में नज़्रे अक़ीदत पेश करने के लिये तुम मन्क़बत लिखो। चुनान्चे उन्हों ने ऐसी मन्क़बत लिखी जो बारगाहे ग़रीब नवाज़ में यक़ीनन मक़बूल हो

गई जिस का मतलअः

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर लिखा हुआ है। (ऐज़न, सः८६ ता ८७)

सवालः आला हज़रत और अज़मते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बताइये?

जवाबः यह एक अल्मियह है कि हिन्दुस्तान की अकसर ख़ानक़ाहों के मौजूदह पीर साहेबान को आला हज़रत और बरेली शरीफ़ की शोहरत व मक़बूलियत एक आंख नहीं भा रही है हालांकि आला हज़रत का उन सब को एहसान मंद होना चाहिये कि आप ही की इल्मी व फ़िक्री काविशों और जिद्दो जिहद के नतीजे में आज तमाम ख़ानक़ाहों के गुंबद व मीनार सलामत हैं और वहां उर्स, फ़ातिहा और नज़्र व नियाज़ की हमाहमी और अक़ीदत मंदों और ज़ाइरीन का मेलह सा लगा रहता है जिस के सहारे मुजाविरीन व ख़ुद्दाम ऐश व फ़राख़ दस्ती की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं जब कि जानने वाले जानते हैं कि उन के पास दअवा "पिद्रम सुल्तान बूद" के सिवा कुछ भी नहीं है। बे पढ़े लिखे और तसव्वुफ़ के झूटे दअवेदार लोगों में अपनी बड़ाई साबित करने के लिये और अपनी पीरी मुरीदी की दुकान चमकाने के लिये आला हज़रत जैसी शख़्सियत पर उलटे सीधे इल्ज़ामात जड़ देते हैं जिन का कोई सर पैर ही नहीं होता। सरकार ख़्वाजए पाक से आला हज़रत की अक़ीदत समझने के लिये फ़तावा रज़वियह जिः ६, सः १८७ पर दर्ज एक सवाल और उस का जवाब ब लफ़्ज़िहि नक़्ल है मुलाहिज़ह फ़रमाएंः

मस्अलहः अज़ सरकार अजमेर मुक़द्दस लंगर गली, मस्ऊला हकीम गुलाम अली साहब ६, शव्वाल १३३६ हिजरी।

अगर कोई मौलवी अपने मदर्से के दरवाज़े पर, ख़िलाफ़त के बोर्ड पर, ख़िलाफ़त की टोपी पर और ख़िलाफ़त की रसीद पर फ़क़त अजमेर लिखे तो क्या अजमेर के साथ लफ़्ज़ शरीफ़ न लिखना और अस्ली नाम गुलाम मुईनुद्दीन पर गुलाम न लिखना ख़िलाफ़े अक़ीदए अहले

सुन्नत है या नहीं?

अल जवाब: अजमेर शरीफ़ के नामे पाक के साथ लफ़्ज़ शरीफ़ न लिखना और इन तमाम मवाक़े में इस का इल्तिज़ाम करना अगर इस बिना पर है कि हुज़ूर सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जल्वह अफ़रोज़ी, हयाते ज़ाहिरी व मज़ारे पुर अनवार को (जिन के सबब मुसलमान अजमेर शरीफ़ कहते हैं) वजहे शराफ़त नहीं जानता तो गुमराह बल्कि अदू वुल्लाह (अल्लाह का दुशमन) है। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रामते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है: من عادی لی ولیا فقد آذنته بالحرب. और अगर यह नापाक इल्तिज़ाम बिनाए कसल व क़ूना क़लमी है तो सख़्त बे बरकत और फ़ज़्ले अज़ीम व ख़ैरे जसीम से महरूम है। کما افادہ الامام المحقق محی الدین ابو زکریا قدس سرہ فی الترضی. और अगर इस का मब्ना वहाबियत है तो वहाबियत कुफ़्र है इस के बाद ऐसी बातों की क्या शिकायत। अपने नाम से लफ़्ज़ गुलाम का हज़्फ़ अगर इस बिना पर है कि हुज़ूर ख़्वाजए ख़्वाजगान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम का गुलाम बनने से इन्कार व इस्तिकबार रखता है तो बदस्तूर गुमराह और बहुक्मे हदीसे मज़कूर अदू वुल्लाह है और उस का ठिकानह जहन्नम। قال اللہ تعالیٰ الیس فی جھنم مثوی للمتکبرین. और अगर बर बिनाए वहाबियत है कि गुलामे औलिया बनने वालों को मुश्रिक और गुलामे मुहियुद्दीन व गुलामे मुईनुद्दीन नाम रखने को शिर्क जानता है तो वहाबियह खुद ज़िंदीक़ है, बेदीन, कुफ़्फ़ार, मुर्तद्दीन हैं। وللکافرین عذاب مھین، واللہ تعالیٰ اعلم. (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स: ٨٨-٩٠)

सवाल: ख़्वाजए पाक पैदाइशी ग़रीब नवाज़ थे कैसे?

जवाब: ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का घर ग़रीबों और बेकस व बे सहारा लोगों के लिये दारुल अमान और दारुल क़रार था। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पैदाइश के बाद अय्यामे शीर ख़्वारी ही में शाने ग़रीब नवाज़ी का ज़ुहूर होने लगा था।

एक मर्तबह का वाक़िअह है कि ख़्वाजा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी माँ की गोद में वालिदह माजिदह की छाती से दूध नोश फ़रमा रहे थे कि एक ग़रीब औरत गुर्बत व अफ़लास के दर्द व ग़म की दवा के लिये आप की वालिदह तय्यिबह की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उस ग़रीब ख़ातून की गोद में एक शीर ख़्वार बच्चा था। थोड़ी ही देर के बाद वह बच्चा भूक से निढाल होकर रोने लगा। वालिदह माजिदह हज़रत माहे नूर रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन ग़रीब ख़ातून से इरशाद फ़रमायाः ऐ बहेन! तुम्हारा बच्चा बहुत ही भूका है और भूक ही की वजह से रो रहा है। अपने बच्चे को दूध पिला दो। उस बेकस व लाचार औरत की पलकें नमनाक हो गईं और उस की आंखों से आंसुओं की बरसात होने लगी। अपने आंचल से आंसुओं को पोंछते हुए अर्ज़ गुज़ार हुई, ऐ सय्यिदह माहे नूर! कितने दिन हो चुके हैं कि अनाज का दाना हलक़ के नीचे नहीं उतरा, मैं फ़ाक़ह के साथ वक़्त गुज़ार रही हूं, भूक से प्रेशान हूं जिस की वजह से मेरी छातियों का दूध ख़ुश्क हो गया है, यही वजह है कि बच्चा भूक से रो रहा है। आग़ोशे मादर में हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु अन्हु ने दर्द व ग़म के सारे मनाज़िर को देखा और सारी बातों को सुना। ख़्वाजए पाक ने अपना मुंह मां की छाती से हटा लिया और अपनी प्यारी प्यारी छोटी छोटी उंगली मुबारक से ग़रीब औरत के रोते हुए बच्चे की तरफ़ इशारह फ़रमाया। इस इशारे को वालिदह माजिदह समझ गई कि मेरा प्यारा बेटा मुईनुद्दीन हसन कह रहा है कि एक छाती का दूध मैं पी रहा हूं और दूसरी छाती का दूध उस ग़रीब बच्चे को पिला दो।

वालिदह तय्यिबह ने उस ग़रीब बच्चे को अपनी गोद में लिया और दूध पिलाने लगीं। आप इस मंज़र को देख कर बहुत ख़ुश हो रहे थे और फ़र्ते मुसर्रत से हंस रहे थे। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः १७०)

सवालः सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ग़रीब नवाज़ी के बारे में बताइये?

जवाबः हिन्द के राजा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़दस में एक ग़रीब काश्तकार हाज़िर हुवा और अपनी

मुसीबत व प्रेशानी बयान किया कि हाकिम ने मेरे खेत की पैदावार ज़ब्त कर ली है। वह हाकिम कहता है कि जब तक बादशाह से शाही फ़रमान न लिखा लाओगे उस वक़्त तक मैं तुम को ज़ब्त की हुई पैदावार नहीं दूंगा। इस लिये मैं आप की ख़िदमत में मदद के लिये हाज़िर हुवा हूं। आप हज़रत कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नाम एक ख़त लिख दें, वह बादशाह से खेती के काग़ज़ात दिला देंगे। इस बात को किसी को बताए बग़ैर ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस ग़रीब किसान को लेकर अजमेर से पैदल सफ़र करते हुए देहली पहुंच गए। हज़रत कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास क़याम किया। हज़रत कुत्बुद्दीन साहेब ने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत बजा लाने के बाद तशरीफ़ आवरी का सबब मालूम किया तो ख़्वाजए पाक ने उस ग़रीब किसान की तरफ़ इशारह करके फ़रमाया कि इस ग़रीब के एक काम के लिये आया हूं। हज़रत कुतुब साहेब ने अर्ज़ किया कि पीर व मुर्शिद का हुक्म आ जाता तो बादशाह से काग़ज़ात हासिल करके मैं इस ख़िदमत को अंजाम दे देता, पीर व मुर्शिद को इतने लम्बे सफ़र की ज़हमत उठाने की क्या ज़रूरत थी?

ख़्वाजए पाक ने इरशाद फ़रमाया काग़ज़ात के हुसूल का जहां तक मआमिलह है तो ख़ादिम के ज़रीअह काग़ज़ात मंगवाए जा सकते थे, हुक्म भेज कर काग़ज़ात हासिल किये जा सकतें थे। मगर मआमिलह यह कि एक मुसलमान ज़िल्लत व गुर्बत के वक़्त खुदा की रहमत से क़रीब होता है। जब यह ग़रीब शख़्स मेरे पास आया था बहुत रंजीदह और दुखियारा था। मुझे इशारए ग़ैबी मिला कि किसी मुसलमान के रंज व ग़म में शरीक होना ऐन बन्दगी है और अदाए बन्दगी के लिये मैं खुद आया हूं। (सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स:११३)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक टूटे हुए दिलों का सहारा हैं, वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाब: हिन्द के राजा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु दुनिया के सताए हुए बेकस व बेबस के आसरा और टूटे दिलों के सहारा हैं। ख़्वाजए पाक की बे मिसाल हमदर्दी और ग़रीब नवाज़ी का वाकिअह ग़ौर से मुलाहिज़ह फ़रमाएं।

एक मर्तबह आशिके आला हज़रत, हज़रत अल्लामा अश्शाह मौलाना मुफ़्ती बद्रुद्दीन अहमद क़ादिरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अजमेर मुक़द्दस दरगाहे मुअल्ला के हुजरह नंबर ६९ में क़याम फ़रमा थे। इरशाद फ़रमाया कि वलियों के राजा ख़्वाजए पाक के मज़ारे अनवर के चारों तरफ़ जवारे नूर में यह सब जो क़ब्रें नज़र आ रही हैं, कोई क़ब्र छोटी सी बनी है। किसी क़ब्र पर थोड़ा सा निशान है, ख़्वाजए पाक के ज़ाइरीन इन क़ब्रों के इर्द गिर्द बैठे नज़र आ रहे हैं, कोई क़ब्र ही पर बैठा है और इन क़ब्रों के ऊपर से लोग गुज़रते नज़र आते हैं, इन क़ब्रों में आराम फ़रमाने वाले बड़े बड़े क़ुतुब व, अबदाल और वली हैं, अगर यह अल्लाह वाले किसी दूसरे मक़ाम पर होते तो उन के मज़ारों के बड़े बड़े गुंबद और क़ुब्बे होते। मगर विलायत के इन सितारों ने अपने आप को आफ़ताबे विलायत, माहताबे रूहानियत व करामत ख़्वाजए पाक के जल्वों में गुम कर रख्खा है। आप ने फ़रमाया इन्हीं क़ब्रों में एक क़ब्र ख़ाली है और वाक़िअह बयान फ़रमाया कि मियां बीवी अपने नौमौलूद शीर ख़्वार बच्चे के साथ उर्स के अय्याम में ख़्वाजए पाक की बारगाहे अक़दस की ज़ियारत व हाज़िरी को आए हुए थे, उर्स की भीड़ भाड़ में एक क़ब्र के पास अपने शीर ख़्वार बच्चे को लिये खड़े थे कि बच्चे ने पेशाब कर दिया, पेशाब के कुछ क़तरात क़ब्र के ऊपर गिरे, क़ब्र में आराम फ़रमा वली को नाराज़गी हुई और आलमे जलाल में बच्चे पर नज़र डाली, साहेबे क़ब्र की नज़रे ग़ज़ब से बच्चा तड़पा और मर गया।

माँ की ममता चीख़ मार कर रोने लगी, अपने गोद में मुर्दह बच्चे को लिये हुए भागी और दौड़ती हुई हिन्द के मसीहा ख़्वाजए पाक के क़ब्रे अनवर व अक़दस पर अपने मुर्दह बच्चे को डाल दिया और चीख़ते चिल्लाते हुए फ़रयाद की, ऐ हमारे मसीहा ख़्वाजए पाक आप की

बारगाह में लोग मुर्दह लाते हैं और आप के करम से ज़िन्दह लेकर वापस जाते हैं और मैं कैसी बद नसीब हूं कि आप के दरे करम पर अपना ज़िन्दह और सहीह सालिम बच्चा लाई थी और अब मैं अपने बच्चा को मुर्दह हालत में ले जाऊं यह कैसे हो सकता है?

शैख़ फ़रमाते हैं कि उसी वक़्त क़ब्रे अनवर शक़ हो गई और ख़्वाजए पाक एक ग़रीब औरत की आह व बुका और गिर्यह व ज़ारी को बर्दाश्त न कर सके और क़ब्रे अनवर से बाहर आ गए और मुर्दह बच्चे को अपनी आग़ोशे रहमत व शफ़क़त में उठा लिया और मुर्दह बच्चा को दम किया बच्चा ज़िन्दह हो गया, बच्चे को अपनी गोद में लिये हुए उस क़ब्र पर पहुंचे जिस क़ब्र वाले बुज़ुर्ग की निगाहे ग़ज़ब से बच्चा मरा था, क़ब्र में लेटे हुए वली से इरशाद फ़रमाया इसी वक़्त तुम क़ब्र ख़ाली कर दो और हमारे अजमेर से दूर चले जाओ। हमारे पास अच्छे बुरे सब आएंगे उसी को यहां रहने की इजाज़त है जो सब को बर्दाश्त करे और निभाले।

यह शाने बंदा नवाज़ी तो देखिये उन की
वहीं ग़रीब खड़े हैं जहां ग़रीब नवाज़
हमारे सामने एक रोज़ यूं भी आ जाओ
कोई हिजाब न हो दरमियां ग़रीब नवाज़

(राज़ इलाहाबादी) (अनवारुल बयान, जिः २, सः ३२२-३२३)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक हर रात कअबह शरीफ़ में?

जवाबः हिन्द के राजा प्यारे ख़्वाजा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हर साल अजमेर शरीफ़ से ख़ानए कअबह की ज़ियारत के लिये जाया करते थे, जो हाजी हज के लिये जाया करते थे वह हमारे ख़्वाजा को वहां पाते। हालांकि आप अजमेर शरीफ़ में मौजूद होते और आप जब दर्जए कमाल को पहुंच गए तो आप का यह मामूल था कि आप हर शब कअबए मुअज़्ज़मह में गुज़ारते थे और नमाज़े फ़ज्र अजमेर शरीफ़ में अदा फ़रमाते थे। (फ़वाइदुस सालिकीन, सः २६)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक की मज़लूम नवाज़ी के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः एक मुरीद आप की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुवा और अर्ज़

किया कि हाकिमे शहर मुझे शहर से बाहर निकालना चाहता है। ख़्वाजए पाक ने मालूम फ़रमाया कि वह हाकिमे शहर इस वक़्त कहां है? अर्ज़ किया, शिकार खेलने गया है। ख़्वाजए पाक ने फ़रमाया कि अब हाकिमे शहर खुद शहर में वापस नहीं आएगा, हमारे मुरीद को शहर से क्या निकालेगा। थोड़ी देर में यह ख़बर आई कि हाकिमे शहर जंगल में घोड़े से गिर कर मर गया। (असरारुल औलिया, सः ९२, मुईनुल अरवाह, सः ३११)

सवालः सरकार ख़्वाजए पाक ने मक़्तूल को ज़िन्दह फ़रमाया?

जवाबः ख़्वाजए पाक की बारगाह में एक औरत रोते बिलकते आई और शिकायत की कि हाकिमे वक़्त ने बिला कुसूर हमारे बेटे को फांसी दी है, आप से मदद की तलबगार हूं।

ख़्वाजए पाक असा मुबारक लेकर मक़्तूल की मां के साथ रवाना हुए और खुद्दाम और शहर के बहुत से लोग आप के साथ हो गए।

ख़्वाजए पाक मक़्तूल के क़रीब पहुंचे और असा मुबारक से उस मक़्तूल की जानिब इशारह करके फ़रमायाः ऐ मज़लूम! अगर तू बे गुनाह क़त्ल किया गया है तो अल्लाह तआला के हुक्म से ज़िन्दह होजा और तख़्तए दार से नीचे चला आ। ख़्वाजए पाक के इरशाद और करामत से मक़्तूल ज़िन्दह हो गया और तख़्तए दार से उतर कर ख़िदमते आलियह में हाज़िरी दी और अपनी मां के साथ अपने घर गया। (मसालिकुस सालिकीन, जिः २, सः २८५)

सवालः ख़्वाजए पाक की करामत से आतिश परस्त ईमान ले आए वाक़िअह बयान कीजिये?

जवाबः ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक रोज़ सहरा से गुज़रे वहां सात मजूसी रियाज़त व मुजाहिदे में बहुत मशहूर थे। यह सातों मजूसी इस क़दर रियाज़त व मुजाहिदह करते थे कि छः छः महीने के बाद एक लुक़्मह खाना खाते थे, इस लिये ख़ल्क़े खुदा उन से बहुत मुतअस्सिर थी। एक दिन ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नज़रे विलायत उन मजूसियों पर पड़ी तो उन पर इस क़दर हैबत तारी हुई कि सब कांपने लगे और आप के क़दमों पर गिरते

नज़र आए। ख़्वाजए आज़म ने फ़रमाया कि तुम लोग आग की पूजा क्यों करते हो? तो उन मजूसियों ने अर्ज़ किया, हम इस लिये आग की इबादत करते हैं कि क़यामत के दिन आग हमें न जलाए। आप ने फ़रमाया कि आग अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर जला नहीं सकती। यह फ़रमा कर ख़्वाजए पाक ने अपनी जूती मुबारक को आग में डाल दिया। बहुत देर तक आप की जूती मुबारक आग में रही, जलना तो दरकिनार आग का असर तक न आया। यह करामत देख कर सब ने सिदक़े दिल से इस्लाम का कलिमह पढ़ा और ईमान ले आए और आप की ख़िदमत में रह कर औलियाए कामिल हुए।

(मसालिकुस सालिकीन, जिः ३, सः २८६, मुईनुल अरवाह, सः ३१२)

सवालः ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि रोज़ी का इन्तिज़ाम फ़रमा देते हैं, मुख़्तसर बयान कीजिये?

जवाबः फ़ना फ़िर्रसूल हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमते अक़दस में एक शख़्स ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मैं ने हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु की बारगाहे बेकस पनाह में दुआ मांगी थी कि मेरी तंगदस्ती दूर हो जाए और मेरी रोज़ी का इन्तिज़ाम हो जाए। मैं ने ख़्वाब में देखा कि ख़्वाजए पाक रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने मुझे ६ रोटियां इनायत फ़रमाईं। उस वक़्त से आज तक जिस को साठ साल का अर्सह गुज़र गया मुझे बिला नाग़ा रोटियां मिलती हैं। बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि वह ख़्वाब न था बल्कि अल्लाह तआला का करम था जो ख़्वाजए पाक ने तुम पर महरबानी फ़रमाई ताकि तेरी गुर्बत व अफ़लास दूर हो जाए और तुम को बराबर रोज़ी मिलती रहे। (मसालिकुस सालिकीन, जिः २, सः २८६, मुईनुल अरवाह, सः ३१३)

सवालः ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किस बुज़ुर्ग को ख़्वाब में पान अता फ़रमाया?

जवाबः हज़रत सय्यिद मुहम्मद तिर्मिज़ी कालपवी रहमतुल्लाहि अलैहि को।

अल्लामा मीर ग़ुलाम अली आज़ाद चिश्ती बिलग्रामी हज़रत सय्यिद मुहम्मद तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि की हाज़िरी अजमेर शरीफ़ के

तज़किरे में लिखते हैं कि आप का मामूल था कि हर साल ख़्वाजए पाक के मज़ारे अनवर की ज़ियारत व हाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ हाज़िर होते थे। एक बार आप आठ रोज़ तक अजमेर शरीफ़ में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर रहे। एक दिन दरे अक़दस पर मुराक़ेबह में मशग़ूल थे कि आप पर नींद का ग़लबह हुवा। आलमे ख़्वाब में ख़्वाजए पाक तशरीफ़ ले आए और आप को पान की एक गिलोरी इनायत फ़रमाई। सय्यिद मुहम्मद तिर्मिज़ी जब बेदार हुए तो देखा कि पान की गलोरी आप के हाथ में मौजूद थी। ख़्वाजए पाक की बारगाह में सय्यिद मुहम्मद तिर्मिज़ी कालपवी की महबूबियत व मक़बूलियत का यह आलम था कि जिस जगह और जिस वक़्त भी आप चाहते रूहानी मुलाक़ात से मुशर्रफ़ हो जाते। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सः ३१८ बहवाला अनवारुल बयान)

सवालः क्या हुज़ूर ग़ौसे आज़म और हुज़ूर ग़रीब नवाज़ की मुलाक़ात साबित है?

जवाबः जी हां हुज़ूर सय्यिदुल उलमा सय्यिद आले मुस्तफ़ा मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सरकार ख़्वाजए पाक हुज़ूर ग़ौस पाक के ख़ाला ज़ाद भाई थे। हुज़ूर ग़ौस पाक की ख़िदमत में ख़्वाजए पाक जब हाज़िर हुए तो जवां साल थे और सरकार ग़ौस पाक के बुढ़ापे का ज़माना था। (अहले सुन्नत की आवाज़ २००८ ई०, सः २८)

और एक रिवायत के मुताबिक़ सरकार ख़्वाजए पाक की वालिदह माजिदह हुज़ूर ग़ौसे आज़म की चचाज़ाद बहेन थीं। इस रिश्ते से हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु सरकार ख़्वाजए पाक रज़ियल्लाहु अन्हु के मामूं होते हैं। मुलाक़ात के वक़्त ख़्वाजए पाक की उम्र पचास साल थी और हुज़ूर ग़ौस पाक की उम्र निन्नानवे साल थी। (ऐज़न, सः५००)

सवालः जामेअ मस्जिद शाहजहानी के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः यह मस्जिद रौज़ए मुनव्वरह के मग़रिब में वाक़े है जब शाहजहां शहज़ादगी के अहद में उदयपूर फ़तेह करके अजमेर शरीफ़ ज़ियारत के लिये हाज़िर हुवा तो उस ने एक वसीअ मस्जिद बनवाने का इरादह किया था। चुनान्चे जब तख़्त नशीन हुवा तो इस मस्जिद की तामीर का हुक्म सादिर किया। उस वक़्त उस की तामीर में दो लाख

चालीस हज़ार रुपये सर्फ़ हुए थे। साहेबे "अहसनुस सीर" ने "मिरअतुल असरार" के हवाले से लिखा है कि यह मस्जिद चौदह साल में तामीर हुई। मौसूफ़ ने अपना ख़्याल ज़ाहिर किया है कि तामीर में होने के बाद कुछ अर्सह तक तामीर का काम मुल्तवी रहा। मस्जिद का तूल ६७ गज़ और अर्ज़ २७ गज़ शरई है। इस में आने जाने के लिये पांच दरवाज़े हैं।

मस्जिद नफ़ीस संगे मरमर की बनी हुई है, अन्दरूने वस्ती मेहराब में सुनहरी हुरूफ़ में कलिमह तय्यिबह लिखा हुवा है। १२६१ हिजरी में जब तबर्रुकाते नबवी देहली से लाकर यहां रख्खे गए, उस वक़्त कलिमह और उस मेहराब से आबे ख़ुनुक रिसने लगा था, लोगों ने इसे तबर्रुकन लिया, बाज़ लोग इसे अश्क अफ़शानी से तअबीर करते हैं। बैरूनी मेहराबों पर अल्लाह तआला के निन्नानवे नाम तहरीर हैं।

जब इस मस्जिद में नमाज़े जुम्अ होती है तो चार तोपें दाग़ी जाती हैं, एक सुन्नत की अदायगी के वक़्त, दूसरी ख़ुत्बह के वक़्त, तीसरी इक़ामत के वक़्त और चौथी सलाम के बाद। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स: ५००)

सवाल: अकबरी मस्जिद के बारे में बताइये?

जवाब: शाहजानी दरवाज़े से ज़रा आगे बढ़ कर अकबरी मस्जिद की सीढ़ियों से मुत्तसिल एक सह दरी में यूनानी शिफ़ा ख़ानह है उसी से मुत्तसिल एक बुलन्द ज़ीने पर अकबरी मस्जिद का बुलन्द व बाला दरवाज़ा है। इस मस्जिद की तामीर का हुक्म अकबर बादशाह ने उस वक़्त दिया था जब वह जहांगीर की विलादत के छः माह बाद इज़्हारे तशक्कुर व नियाज़ के लिये शअबान ९७८ हिजरी में हाज़िरे दरबारे ख़्वाजा हुए थे। यह मस्जिद संगे सुर्ख़ से तामीर की गई है, मेहराबों पर संगे मरमर की पिचीकारी है। मस्जिद का रक़्बह मअ मुतअल्लिक़ह इमारत १४० मुरब्बअ फ़िट है। मेहराबे मस्जिद ५६ फ़िट बुलन्द है, गुंबद के गोशों पर मरमरीं मीनार हैं, सहने मस्जिद में एक हश्त पहल हौज़ था जो अब मिट्टी से पुर कर दिया गया है। तक़रीबन डेढ़ दो सौ साल क़ब्ल इस में एक कुंवां भी था। १३२० हिजरी में मस्जिद की

मुतअल्लिक़ह इमारात की मरम्मत कराने की सआदत नवाब ग़फ़ूर अली ख़ां साहब दानापूरी ने हासिल की। आज कल दारुल उलूम मुईनियह उस्मानियह के प्राइमरी दर्जात औक़ाते दर्स में यहां लगाए जाते हैं और बच्चे तालीम हासिल करते हैं। (ऐज़न, सः ५०१)

सवालः बड़ी देग के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः बुलन्द दरवाज़ह से आगे बढ़ कर दो बड़ी देगें ज़ीनह दार बुलन्द चूल्हों पर नसब हैं। शर्क़ी देग छोटी और ग़र्बी बड़ी है। बड़े देग जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर शहंशाहे हिन्द ने ९७६ हिजरी में चित्तौड़ गढ़ की फ़तेह की खुशी में नज़्र की थी। इस देग का मुहीत साढ़े तेरह गज़ है, इस में सौ मन चावल बख़ूबी पक सकते हैं। (ऐज़न, सः ५०६)

सवालः छोटी देग के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः शहंशाहे हिन्द सुल्तान नूरुद्दीन जहांगीर ने यह देग आग्रा में तय्यार कराई। अजमेर शरीफ़ हाज़िरे आस्तानह हो कर इस में खाना पकवाया और पांच हज़ार फ़ुक़रा व मसाकीन को अपने सामने खिलवाया। बक़ौल कर्नल ब्राइन यह देग २८ मन चावल पकने के लिये काफ़ी है मगर साहबे "अहसनुस सीर" कहते हैं कि इस में अस्सी मन चावल पकते हैं, इस का मुहीत साढ़े सात गज़ है और क़तर दो गज़ २६ इंच। (ऐज़न, सः ५०६)

सवालः जन्नती दरवाज़ह के बारे में बताइये?

जवाबः इस दरवाज़ह को मक्की दरवाज़ह भी कहते हैं, इस के किवाड़ों पर चांदी का पत्तर चढ़ा हुवा है। रिवायत है कि जो इस दरवाज़े से सात मर्तबह गुज़र जाए, वह जन्नती है। यह दरवाज़ह ईदैन, हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी क़ुद्दिसह सिर्रुहुमा के उर्स के मौक़अ पर और यौमे आशूरह को खुलता है और लोग जोक़ दर जोक़ इस में से गुज़रते हैं। (ऐज़न, सः ५०७)

सवालः हुजरए बीबी हाफ़िज़ह जमाल के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः रौज़ए मुनव्वरह की जुनूबी दीवार में पाईं रुख़ तीन दरवाज़े हैं, इधर उधर के दरवाज़े बाज़ ख़ास हालात और मौक़अ पर खोले जाते हैं, दरमियानी दरवाज़ा दिन भर खुला रहता है। इस दरवाज़े के आगे संगे

मरमर के सुतूनों पर छत्री बनी हुई है, छत्री के मुत्तसिल रौज़ए मुनव्वरह की जुनूबी दीवार से मुल्हिक़ हुजरे में सरकार ख़्वाजा की साहेबज़ादी हज़रत बीबी हाफ़िज़ह जमाल आसूदए ख़ाक हैं। ग़ालिबन यह हुजरह हज़रत ख़्वाजा के रौज़ह के साथ तामीर हुवा। बीबी के संगे मज़ार के तअवीज़ में संगे अब्री, तिलाई, लहसुनियह और फ़िरोज़ह वग़ैरह से पिची कारी की गई है। मज़ार के बेश बहा क़ब्र पोश पर फूल रहते हैं। इस मज़ार से मुत्तसिल दो छोटी छोटी क़ब्रें और हैं, यह दोनों बीबी साहेबह के साहेबज़ादों के मज़ारात हैं जिन का इन्तिक़ाल बचपन में हो गया था। (ऐज़न, सः ५०८-५०६)

सवालः चश्मए झालरह के तअल्लुक़ से बताइये?

जवाबः दरगाह शरीफ़ के जुनूब में एक गहरा चश्मह झालरह के नाम से मशहूर है। यह कभी ख़ुश्क नहीं होता, दरगाह और शहर के बाज़ मुहल्ले के लोग इस से पानी लेते हैं। दरगाह से एक वसीअ ज़ीनह इस में जाने का है, भिश्ती इस ज़ीने से पानी भर कर लाते हैं, दूसरा ज़ीनह इस में सोलह खम्बह की तरफ़ से भी है, तीसरा ज़ीनह मक़्बरे के क़रीब से है।

झालरह की मज़बूत चहार दीवारी शाहजहां बादशाह की बनवाई हुई है। पहले बारिश के ज़माने में नालह गढ़ बैठली इस तरफ़ से बहता था और यह नालह आगे बढ़ कर अब वह नदी कहलाता है। जब अकबर बादशाह ने अजमेर की शहर पनाह बनवाई तो इस नाले को दरगाह बाज़ार की तरफ़ काट दिया और इस का बांध बंधवा दिया। शाह कुली ख़ां सूबह दार अजमेर ने दूसरी जानिब बांध के दहाने पर अपना मक़बरह अपनी हयात में तामीर कराया। इस तदबीर से ख़ल्क़ को आसाइश हो गई, हज़ारों आदमी इस के पानी से सेराब होते हैं, यह बहुत ज़्यादह गहरा है, ज़ाइरीन इस का पानी तबर्रुक समझ कर इस्तेमाल करते हैं। (ऐज़न, सः ५१२)

सिराजुल क़ादिरी बहराइची

३ शव्वालुल मुकर्रम १४३६ हि./ २० जुलाई २०१५ ई

ग़ाज़ी किताब घर की किताबें

इस्लामी हीरे कुइज़ यानी सुन्नी कुइज़
गुस्ताख़ कलम
अनवारे कुरआनी
मुजरिम अदालत में
शबे बराअत
तोहफ़ए रमज़ान
बर्क़े रिज़वियत,बर फ़ित्नए वहाबियत
बर्क़े वहदत बर फ़ित्नए नज्दियत
अंधे नज्दी देख ले
मुनाफ़िक़ीन
बहिश्ती ज़ेवर पर रिज़वी ऐटम बम
उलमाए देवबंद की कहानी
तोहफ़ए निकाह
दश्ते कर्बला
शहीदाने कर्बला
अस्ली दस बीबियों की कहानी
अस्ली सय्यिदा बीबी की कहानी
माँ का आंचल
क़ब्र से जन्नत तक
लुआबे दहने मुस्तफ़ा ﷺ
अस्हाबे कहफ़
मक़ामे आला हज़रत
तारीख़ी कहानियां
फ़ज़ाइले मज्मूअए नमाज़
फ़ातिहा इमाम जाफ़र सादिक़

फ़ातिहा का सहीह तरीक़ा
चहल हदीस
नूरे यज़दां (बेकल तसाही बलरामपूरी)
इरफ़ाने मुस्तफ़ा (पॉकिट)
नग़माते मुस्तफ़ा (पॉकिट)
अनवारे मुस्त्फ़ा (पॉकिट)
जल्वए मुस्तफ़ा (पॉकिट)
मन्क़बतें (पॉकिट)
क़ादरी रिज़वी मज्मूअए सलाम
ग़ाज़ी क़ायदा
ग़ाज़ी क़ायदा मुकम्मल
आप का मदर्सा अव्वल
आप का मदर्सा दोम
आप का मदर्सा सोम
बहारे रहमत क़ायदा
बहारे रहमत अव्वल
बहारे रहमत दोम
बहारे रहमत सोम
सुन्नी कुइज़ हमारे आक़ा
सुन्नी कुइज़ अंबियाए किराम अव्वल
सुन्नी कुइज़ अंबियाए किराम दोम
सुन्नी कुइज़ अंबियाए किराम सोम
सुन्नी कुइज़ अज़वाजे तय्यिबात

सुन्नी कुइज़ फ़र्ज़न्दाने मुकर्रम
सुन्नी कुइज़ ख़ुलफ़ाए राशिदीन
सुन्नी कुइज़ सहाबए किराम
सुन्नी कुइज़ सहाबियात
सुन्नी कुइज़ मालूमाते आम्मा
सुन्नी कुइज़ दास्ताने ज़ुल्म व बरबरियत
सुन्नी कुइज़ मेरे आला हज़रत
सुन्नी कुइज़ नमाज़
सुन्नी कुइज़ कुरआने मजीद
सुन्नी कुइज़ औलियाए किराम
सुन्नी कुइज़ मेरे ख़्वाजा हिन्द के राजा
सुन्नी कुइज़ सरकार ग़ौसे आज़म
सुन्नी कुइज़ अक़यद व मसाइल
वहाबी मुल्लाओं की शाख़ियां
मस्अलए तकफ़ीर और इमाम अहमद रज़ा (शारेह बुख़ारी मुफ़्ती महम्मुद शरीफ़ुल हक़ अमजदी)
आईनए क़ियामत (अल्लामा हसन रज़ा ख़ां बरेलवी)
सुन्नी कुइज़ अइम्मए अरबआ